प्रतिमा पूजन रहस्य

(साधना, शुद्धि एवं सुरक्षा विषयक मार्गदर्शन)

- भूषण शाह

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

प्रतिमा पूजन रहस्य

(साधना, शुद्धि एवं सुरक्षा विषयक मार्गदर्शन)

❁ देवलोक से दिव्य सान्निध्य ❁

प.पू. गुरुदेव जम्बूविजयजी महाराजा

❁ संकलन एवं संपादन ❁

भूषण शाह

❁ प्रकाशक ❁

मिशन जैनत्व जागरण
जंबूवृक्ष, C/503, 504, श्री हरि अर्जुन सोसायटी,
चाणक्यपुरी ओवरब्रीज के नीचे, घाटलोडीया, अहमदाबाद - 380061
मो. 9601529534, 9408202125

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 1

© लेखक एवं प्रकाशक

✻ प्रतियाँ : 1000
✻ प्रकाशन वर्ष : वि. सं. 2077, ई. सं. 2020
✻ मूल्य : 100 ₹
✻ न्याय क्षेत्र : अहमदाबाद

प्राप्ति स्थान

'मिशन जैनत्व जागरण' के सभी केन्द्र

अहमदाबाद
101, शान्तम् एपार्ट.
हरिदास पार्क,
सेटेलाइट रोड,
अमहदाबाद

जयपुर (राज.)
आकाश जैन
ए/133, नित्यानंद नगर
क्वीन्स रोड, जयपुर

नाशिक (महा.)
आनंद नागशेठिया
641, महाशोबा लेन
रविवार पेठ,
नाशिक (महा.)

आग्रा (उ.प्र.)
सचिन जैन
डी-19, अलका कुंज
खावेरी फेझ-2
कमलानगर - आग्रा

भीलवाड़ा (राज.)
सुनिल जैन (बालड़)
"सुपार्श्व" जैन मंदिर के पास
जमना विहार-भीलवाड़ा

मुंबई
हिन्दी ग्रंथ कार्यालय
९, हीराबाग, सीपी टेन्क,
मुंबई - ४००००४
फोन : 98208 96128

मुंबई
हेरत मणियार
ए/11 , ओम जोशी अपार्ट
लल्लुभाई पार्क रोड,
ऐंजललेंड स्कूल के सामने
अंधेरी (वेस्ट) मुंबई

Bangalore
Premlataji Chauhan
425, 2nd Floor,
7th B Main, 4th Block
Jaynagar, **Bangalore**

लुधियाणा
अभिषेक जैन,
शान्ति निटवेर्स
पुराना बाजार
लुधियाणा (पंजाब)

उदयपुर (राज.)
अरुण कुमार बडाला
अध्यक्ष अखिल भारतीय
श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक
युवक महासंघ उदयपुर शहर
427-बी, एमराल्ड टावर,
हाथीपोल,
उदयपुर-313001 (राज.)

✻ प्रस्तुत पुस्तक पू. साधु-साध्वी भदवंतों को पत्र प्राप्त होने पर भेंट स्वरूप भेजी जाएगी। ✻ आवश्यकता न होने पर पुस्तक को प्रकाशक के पते पर वापस भेजने का कष्ट करें। ✻ आप इसे Online भी पढ़ सकते हैं.... www.jaineliabrary.org. पर। ✻ पुस्तक के विषय में आपके अभिप्राय अवश्य भेजें। ✻ पोस्ट से या कुरियर से मंगवाने वाले प्रकाशक के एड्रेस से मंगावा सकते हैं।

✻ मुद्रक : भाग्य ग्राफिक्स (93270 57627)

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

"समर्पण"
जैन संघ में जिनालय शिल्प संबंधित
नई चेतना लाने वाले,
प.पू.मु.सौम्यरत्नविजयजी म.सा.को
सादर समर्पित
- भूषण

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 2

अनुक्रमणिका

1.	संपादकीय	1
2.	हमारे गुरुदेव	7
3.	जिनालयमें प्रभु भक्ति के प्रकार कितने है ?	12
4.	जिनालय व्यवस्था कैसे करें ?	13
5.	जिनालय शुद्धिकरण कैसे करें ?	31
6.	जिनालय में दर्शन पूजन कैसे करें ?	38
7.	जिनालय में पूजा विधि का महत्व क्या है ?	44
8.	जिनालय में अभिषेक पूजा का महत्व क्या है ?	49
9.	जिनालय में आशातना निवारण के क्या उपाय है ?	54
10.	जिनालय भविष्य में केसे पहचाना जाए ?	58
11.	जिनालय शुद्धिकरण के महत्व का अंग क्या है ?	62
12.	जिनालय के शिल्प सें संलग्न २१ बाते क्या है ?	68
13..	जिनालय में तांबा पितल या जर्मन सिल्वर ?	72
14.	जिनालय में रजत द्रव्य, ताम्र द्रव्य या वर्तमान के सिक्के ?	73
15.	जिनालय में देशी झाडू या मोरपिच्छि ?	74
16.	जिनालय में मंगल मूर्ति स्थापना का रहस्य क्या है ?	75
17.	जिनालय में प्रतिमा सुरक्षा हेतु क्या करना चाहिए ?	75
18.	जिनालय की सफाई हेतु क्या करें ?	86
19.	जिनालय में प्रतिमाजी की ओरा बढाने हेतु क्या करें ?	87
20.	जिनालय को प्रभावशाली बनाने हेतु क्या करें ?	88
21.	जिनालय में जिनबिंबो को चक्षु कैसे लगाए ?	90
22.	आपके जिनालय संबंधि विशेष जानकारी भेजे	92

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

संपादकीय

चिन्तामण्यादि कल्पस्य स्वयं तस्य प्रभावतः

कृतो द्रव्यस्तयोपि स्यात् कल्याणाय तदर्थिनाम् ॥ ३० ॥

योगसार

द्रव्य स्तव स्वयं ही चिंतामणी रत्न के समान है । जिसके प्रभाव से मोक्षार्थी पूजक को मोक्षप्राप्ति होती है ।

प्रभु की द्रव्यपूजा यावत् मोक्षफल प्रदायक मानी जाती है । परमात्मा की पूजार्थ हमारे पुरखों ने अनगिनत जिनालय की रचना करवाई थी । सम्राट संप्रति, कुमारपाल इत्यादि के दृष्टांत हम सब जानते ही है । उनके पश्चात भी अनेकविध जिनालयों का निर्माण हुआ । विधर्मियों के घात से हजारों जिनमंदिरो की क्षति हुई किन्तु पुनः जिनमंदिरों की रचना भी हुई । जिनमंदिरों की निर्माणकला की गूंज, जिनशासन में ना तो कभी रुकी है और ना ही कभी रुकेगी ।

इस समय में भी लाखों जिनमंदिर दृष्टिगोचर हो रहे है किन्तु उनकी स्थिति क्या है ? मारवाड-मेवाड-पालिताणा नौ टुंक-पूर्व भारत-उत्तर भारत-कल्याणकभूमि-जेसलमेर इत्यादि कल्पवृक्ष समान तीर्थो में स्थित हजारों जिनमंदिरों की तरफ देखनेवाला तक कोई नहीं है । पूर्वजो द्वारा निर्मित इस भव्य संपत्ति की सुरक्षा हम नहीं कर पाये है, जो कि हमारे पूर्वजों का हमारे प्रति रखे गये विश्वास का सब से बडा विश्वासघात है । नये जिनमंदिर की स्थापना में कोई आपत्ति नहीं है किन्तु जो प्राचीन है उसकी कदर करना अधिक आवश्यक है । हमारे गृह में भी नयी संतान के जन्म होने पर वृद्ध माता-पिता को देखने तक का समय नहीं होता । अरे ! हजारों की संख्या में जिनमंदिर अजैनो, स्थानकवासीओ, तेरापंथिओ, दिगंबरो ने हस्तगत कर लिये है, जिसका कारण, हमारी निष्क्रियता है । अहमदाबाद जिसे जैन धर्म का राजनगर कहा जाता है, ऐसी जैनों की राजधानी में भी कोट विस्तार के जिनालयों की सुरक्षा करनेवाला कोई नहीं है । भव्यातिभव्य जिनप्रतिमा देखकर आँखो से अश्रु बह जायेंगे । ऐसी ही एक दर्शनयात्रा के वक्त मेरे मन में जो भी विचारों का बवंडर उमड रहा था, वही विचार मैंने यहाँ प्रस्तुत किये है । और इन विचारों के वटवृक्ष का अहमदाबाद में ऐतिहासिक "जिनालय शुद्धिकरण"

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 3

के स्वरुप में परिणमन हुआ । पुस्तक में जिनालय शुद्धिकरण के वक्त प्रकाशित की गई बातों को कुछ सरलता से, लोकभोग्य शैली में और सर्वत्र उपयोगी हो इस प्रकार लिखा गया है । मेरे लिये सदैव कृपा बरसानेवाले प.पू. आ.श्री हर्षवर्धनसूरीश्वरजी म.सा. ने भी खास मुद्दों की जानकारी प्रदान की । पूज्यश्री को कृतज्ञभाव से वंदन करता हूँ ।

– भूषण शाह

१०/९/२०

राजनगर अहमदाबाद

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

हमारे गुरुदेव

(प.पू. परमोपकारी, आगमप्रज्ञ, श्रुतस्थविर, दर्शनप्रभावक प्रवर्तक मुनिराजश्री जम्बूविजयजी महाराजा)

"छोटी सी धूपबत्ति भी आगंतुक को सुवासित ही नहीं अपितु आध्यात्मिक बना देती है,

छोटा सा दिया भी कमरे को प्रकाशवंत ही नहीं अपितु उष्मावंत बना देता है,

छोटा सा भी चंपक का पुष्प मात्र नासिका को ही नहीं अपितु हृदय को भी प्रफुल्लित कर देता है...

झींझुवाडा गाँव में जन्म प्राप्त करनेवाला बालक चीनु स्वयं तो प्रकाशित हुआ, साथ ही जिनशासन को भी प्रकाशवंत बना दिया।"

विक्रम की १९७९ वर्ष, माघ सुदी १ के दिन जब सर्वग्रह उच्चस्थान में थे तब दिव्य प्रकाशमय पुत्र का माता मणिबहन की कुख से अवतरण हुआ। नाम चीनु रखा गया। पिताश्री का नाम भोगीलालभाई (बाद में पू. श्री भुवनविजयजी महाराजा) और माता का नाम मणिबेन (बाद में सा.श्री मनोहरश्रीजी म.सा.) था। बाल्यकाल में ही चीनु के ललाट पर चंद्रमणी का आकार होने से लोग भी बीजल कहकर पुकारते थे। पाँचवी कक्षा तक अभ्यास करने के पश्चात पिताश्री ने शाला का त्याग करवाया। तत्पश्चात मात्र १४ वर्ष की उम्र में विक्रम संवत १९९३, वैशाख सुदी १३, शनिवार, दिनांक-२५/५/१९३७ के दिन रतलाम मध्ये पू.पू. आ.भ. श्री चंद्रसागरसूरीश्वरजी म.सा., पू. श्री भुवनविजयजी म.सा. आदि के वरदहस्ते पू.पू. बापजी म.सा. की आज्ञा से दीक्षा ग्रहण की। गुजरात में बालदीक्षा पर प्रतिबंध होने से मध्यप्रदेश के रतलाम में दीक्षा हुई। दीक्षा के पश्चात पूज्यश्री को रेगिस्तान में भटकनेवाले को अमृत की झील मिल जाये इस तरह स्वयं के पिताश्री की शरण प्राप्त हो गई। पिताश्री ने भी सुयोग्य पुत्र को श्रेष्ठ अभ्यास करवाया। अभ्यास भी इस तरह किया कि अल्पकाल में ही उच्चकोटी के विद्वानो में

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 4

उनकी गणना होने लगी। पं. सुखलालजी, पं. बेचरदासजी जैसे महान पंडितो द्वारा कृत स्वयं की बुद्धि के प्रदर्शन रुप ग्रंथों में से भी पूज्यश्रीने अनेक भूल प्रदर्शित की। उनकी बुद्धि प्रतिभा को जानकर प.पू. आगम मार्तंड मु. श्री पुण्यविजयजी महाराजा ने संशोधन के कठिन कार्य प्रदान करने का निर्णय लिया। जिसमें से एक है द्वादशार नयचक्र। स्वयं की साहित्य यात्रा के साथ-साथ पूज्य महात्माओं की सेवा करते-करते महात्माओं के भी अंतेवासी बने। प.पू. संघस्थविर सिद्धिसूरीश्वरजी म.सा. (पू. बापजी म.) की सर्वोत्तम सेवा करते हुए उनके द्वारा तपागच्छ की मूल प्रणालिका, विशेष गुप्त आम्नाय आदि प्राप्त किये। और पू. बापजी म.सा. के अंतेवासी के रुप में प्रसिद्ध हुए।

बापजी महाराजा की सेवा द्वारा पूज्यश्री को भी पू. बापजी महाराजा की भाँति वचनसिद्धि प्राप्त हुई। जिसके अनेक उदाहरण है। पूज्यश्री को पू. सागरजी महाराजा की भाँति आगमसिद्धि, पू. नेमिसूरिजी महाराजा की भाँति चारित्र्यशुद्धि, पू. वल्लभसूरिजी महाराजा की भाँति युगदृष्टि, पू. लब्धिसूरिजी महाराजा की भाँति कवित्वशक्ति, पू. आत्मारामजी महाराजा की भाँति तार्किकदृष्टि, पू. बुद्धिसागरसूरिजी महाराजा की भाँति योगसाधना, पू. भद्रसूरिजी महाराजा की भाँति दीर्घायुष्य, पू. कनकसूरिजी महाराजा की भाँति सात्त्विक दृष्टि, पू. रामचंद्रसूरिजी महाराजा की भाँति शासन के प्रति जोश और समर्पितता, पू. कलापूर्णसूरिजी महाराजा, पू. पं. भद्रंकरविजयजी, पू. पं. अभयसागरजी आदि की भाँति प्रभुभक्ति, जपयोग, नवकार महामंत्र सिद्धि इत्यादि आपके जीवन में सहजता से ही प्राप्त हो गई थी।

- अंतरिक्ष तीर्थ की रक्षा हेतु आपने अनेक प्रमाण प्रस्तुत करके तीर्थरक्षा का बेजोड कार्य किया था।

- अनेक युनिवर्सिटी के द्वारा जैन धर्म में पी.एच.डी. करनेवाले आत्माओं के लिये आप मार्गदर्शक बने थे।

- हजारों-लाखों पशुओं के लिये आप वास्तविक जीवनदाता बने एवं अनेक जीर्ण पांजरापोल-गौशाला के नवजीवन दाता बने थे।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

- आपके स्वहस्त से अनेक स्थानों पर अद्वितीय, चमत्कारीक प्राणप्रतिष्ठा हुई थी ।

- आपने जेसलमेर, खंभात, पाटण, कच्छ-कोडाय, दिल्ली, जयपुर, रतलाम, उज्जैन आदि अनेक ज्ञानभंडारों का जीर्णोद्धार करवाया था । इतना ही नहीं, उन ज्ञानभंडारों की एक भी प्रत स्वयं के संग्रह में नहीं रखी थी । मात्र झेरोक्ष आदि का संग्रह किया ।

- आपने अपने जीवनकाल में अनेक आत्माओं को दीक्षा प्रदान की । अनेक आत्माओं के संयमजीवन की रक्षा की थी ।

- विशाल शिष्य परिवार और विशाल साध्वी परिवार होने के बावजूद आप सदा निर्लेप रहते थे ।

- अनेक विदेशीयों को अभ्यास करवाने के पश्चात गुरुदक्षिणा के रुप में उनके जीवन से मांसाहार का संपूर्ण त्याग करवाया था ।

- आपने अनेक ग्रंथों के शुद्धिकरण करवाने के साथ-साथ द्वादशार नयचक्र आदि अनेक ग्रंथों को जिनशासन के चरणों में सौंपा था ।

- आपके पास अनेक मिनीस्टर, राजनेता, फिल्मी अभिनेता, परदेशी, विशिष्ट मेहमान-अरबोपति आते थे, आपने उनको मांसाहार आदि व्यसन छोडने की ही प्रेरणा की है । जैन धर्म समझाने के बाद भी सस्ती प्रसिद्धि प्राप्त करने हेतु आपने कभी भी उन आत्माओं के साथ फोटो-तस्वीर नहीं खींचवाई और ना ही प्रकाशित करवाई ।

- तप भी इस तरह किया कि हमेशा एकासना ही करते । पीछे की जिंदगी में खुल्ला होने के बावजुद अल्प द्रव्य का ही उपयोग करते थे । और प्रतिमाह अठ्ठम तप के साथ-साथ अन्य उपवास-अठ्ठम भी करते थे ।

- प्रतिदिन १०८ खमासमण द्वारा आप उच्चकोटि के योगी बने थे ।

- पालीताणा, शंखेश्वर आदि स्थानों में आपके श्रीमुख से प्रसारीत हो रही "दादा-दादा" की ध्वनी-भक्ति अनेक लोगों ने देखी है ।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 5

- आप जो भी कार्य करते थे, वह २००-५०० वर्ष को ध्यान में रखकर ही करते थे और "अनेकांतवाद" आपका सिद्धांत था ।

- तिथि के विषय में भी आप सर्वदा श्री संघ को मतभेद दूर करने की ही सलाह देते रहे ।

- दिगंबर मंदिर में भक्ति कर रहे हो तो तमाम मतभेद भूलकर प्रभु में एकाकार हो जाना । आँख खूली हो या बंद, प्रतिमा-प्रभु तो वही है । यह आपने सिखाया था ।

- पालीताणा, कच्छ के दुकाल को अभिषेकादि द्वारा आपने दूर करवाये थे । आप मंत्रप्रभावक भी थे ।

- अष्टापदगिरी की खोज में आप चलते-चलते बद्रीनाथ तक पहुँच गये थे, जो जैनशासन में एक रिकोर्ड है ।

- आपने आपके दीर्घ दीक्षा पर्याय में कभी भी व्हीलचेयर या डोली का उपयोग नहीं किया । अंत समय तक पैदल विहार किया और वह भी सूर्योदय के पश्चात ही । इस तरह आपकी संयमशुद्धि अप्रतिम थी ।

- आपने आपके शिष्य परिवार को भी गुरुमंदिर आदि ना करने की प्रतिज्ञा दी है । आप स्वयं विशालकाय गुरुमंदिरों के विरोधी रहे है । देव-देवी के भी अतिशयोक्तिपूर्वक बन रहे मंदिरों का आपने अत्यंत विरोध किया था । प्रतिमायतन आपका स्वप्न अभी भी याद है ।

- आपके शिष्य परिवार में प.पू.मु. देवभद्रविजयजी म., प.पू.मु. धर्मचंद्रवि.म., प.पू.पं.प्र. पुंडरिकरत्नविजयजी म. आदि ११ शिष्य थे और अनेक साध्वीजी आपकी आज्ञा में थे ।

- अनेक ग्रंथ प्रकाशित करने के बावजुद कभी भी विमोचन समारोह नहीं रखा ।

- आप तमाम आचार्य से मिलन करते थे, अनेक आचार्य स्वयं मिलन करने हेतु पधारते तब भी आपने कोई दंभ नहीं किया । कभी कोई आचार्य भूल कर देते तब भी आपने कभी आपकी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया ।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

– आपका जीवन आ. हरिभद्रसूरि म., आ. हेमचंद्रसूरि म., पू. देवर्धिगणिक्षमाश्रमण, उ. यशोविजयजी म., पू. आनंदघनजी म. आदि की याद ताजा करवाता था। आज के काल में पदवीप्राप्ति के लिये अनेक प्रपंच होते है, अयोग्य-अजोगी भी पदवी ग्रहण कर लेते है तब आपको अनेक विनंति होने के बावजूद आपने पदवी ग्रहण नहीं की।

– नाकोडा के पास आपका अकस्मात आपको खत्म करने का वैश्विक षडयंत्र था। यह अकस्मात जिनशासन की एक महान विभूती को खत्म करने की योजना थी। आप कालधर्म प्राप्त हुए ही नहीं अत: उस विषय में मैं कभी नहीं लिख सकता। आप अभी भी विद्यमान हो, जीवित हो। आपके शिष्य परिवार आदि हेतु "साहेब जी" सतत जीवित ही है, यहीं हो, सहाय कर रहे हो। मात्र आप कहीं चले गये हो। कोई खबर भी नहीं भेज रहे।

चंद्रमा और रवि, सितारे ओ सवि
मेरे प्यारे गुरु की, खबर मुझे देना...
खबर मुझे देना...
खबर मुझे देना...

आपका भूषण

(आपने मुझे कहा था कि, किसी का दृष्टिरागी कभी नहीं बनना। शासन अनेकांतवाद-स्याद्वाद के सिद्धांत से शोभायमान है। सभी के गुणानुरागी बनना। उनके छोटे से छोटे गुण को देखने और जीवन में अपनाने का प्रयत्न करना। आज के काल में श्रावक दृष्टिरागी नहीं होते तो उन्हें साधु भ. ही पूछते है कि "आप किसको मानते हो ?" अरे ! क्या गच्छ-समुदाय अब श्रावकों में भी होते है ?)

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 6

3. जिनालय में प्रभु भक्ति के कितने प्रकार है ?

भगवद् भक्ति के नौ प्रकार

(१) श्रवण भक्ति (२) कीर्तन स्तवन भक्ति (३) स्मरण भक्ति (४) वंदन भक्ति (५) पादसेवन भक्ति (६) अर्चन भक्ति (७) दास्य भक्ति (८) सख्य भक्ति (९) आत्मनिवेदन भक्ति

१. श्रवण भक्ति : भगवान के गुणों का श्रवण करना। (चरित्रश्रवण इत्यादि)
२. कीर्तन स्तवन भक्ति : स्तुति इत्यादि के द्वारा भगवान की स्तवना करना।
३. स्मरण भक्ति : जप योग द्वारा प्रभु का स्मरण करना। नवकार मंत्र आदि के द्वारा जाप करना। ध्यान योग के द्वारा भगवद्भक्ति करना। पिंडस्थ-पदस्थ-रुपस्थ-रुपातीत यह चार प्रकार की भावना, आज्ञा-अपाय-विपाक-संस्थान विचय के द्वारा (धर्मध्यान के चार मूल) मैत्र्यादि चार भावना, पंच परमेष्ठि का ध्यान, नवपद का ध्यान इत्यादि तमाम का आलंबन ले कर ध्यान करना।
४. वंदन भक्ति : काया द्वारा तीन प्रकार (१) अंजलिबद्ध प्रणाम (२) अर्धावनत प्रणाम (३) पंचांग प्रणिपात
५. पादसेवन भक्ति : प्रतिमा के सर्व अंगों को भक्तिपूर्वक, आशातना ना हो इस प्रकार स्पर्श करना।
६. अर्चन भक्ति : ५-८-१७-२१-२७-१०८ प्रकार से भगवान की भक्ति करना। (द्रव्यपूजा)
७. दास्य भक्ति : दास की भाँति भक्ति करना। जिनालय से कचरा निकालना आदि कार्य
८. सख्य भक्ति : मित्र जैसी भाषा में प्रभु से बात करना, उनसे रुठना, मधुर भाषा में डाँटना।
९. आत्मनिवेदन भक्ति : आत्मनिंदा करते हुए भक्ति करना।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

जिनालय की व्यवस्था कैसे करे ?

(जिनालय शुद्धिकरण के द्वारा आत्मा का शुद्धिकरण करें)

दर्शनाद् दुरितध्वंसी, वंदनाद् वांछितप्रद: ।
पूजनात् पूरक: श्रीणां, जिन: साक्षात् सुरद्रम: ॥

परमोपकारीओ ने परमात्मा को जिस स्वरुप से जाना है उसे अनेक ग्रंथो के माध्यम से साधक आत्मा भी जान सके इस हेतु से प्रकाशित किया है।

कल्पवृक्ष से प्रभु की तुलना । कल्पवृक्ष के सान्निध्य में रहनेवाले की कामना परिपूर्ण होती है वैसे परमात्मा के सान्निध्य में रहनेवाले की कामना भी परिपूर्ण होती है ।

उत्तम भावों से दर्शन करनेवाले के कर्म-पाप दूर होते है । पाप करवानेवाले पापों को दुरित कहा जाता है । उन दुरितों का नाश दर्शन करने से होता है । पाप के नाश से दु:खों का नाश भी स्वयमेव हो जाता है । प्रभु दोनों प्रकार के पापों का मूल से नाश करते है ।

प्रभु की वंदना वंदक आत्मा के वांछित पूरती है । विशिष्ठ प्रकार से कामना की गई वस्तु वांछित है । एकांत से आत्मकल्याण में जिसका परिणमन हो वह वांछित है ।

प्रभुपूजा से पूजक को श्री-लक्ष्मी की प्राप्ति होती है । आत्मिक लक्ष्मी प्राप्त होती है, वैसे ही बाह्य लक्ष्मी भी प्राप्त होती है ।

प्रभुपूजा के अनेक प्रकार है । एक प्रकारी पूजा से एकसौ आठ प्रकारी पूजा है । वैसे ही नौ प्रकारी भक्ति भी बताई गई है । नौ प्रकार की भक्ति में जिनालय की तमाम भक्ति-सेवा-वैयावच्च समाविष्ट हो जाते है ।

ट्रस्टी-आगेवानों की एक प्रकार की जिम्मेदारी होती है । संघ के पूजारी-कर्मचारीओं की दूसरे प्रकार की जिम्मेदारी होती है और आराधक, दर्शन, पूजक की तीसरे प्रकार की जिम्मेदारी होती है । तीनों विभाग यदि

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 7

स्वयं की जिम्मेदारी को समझकर कर्तव्यपालन करते है तो तीनों का भवभ्रमण से बाहर निकलना सुलभ बन सकता है ।

जिनालयनिर्माण के कार्य सुआयोजन से हो यह जरुरी है । प्रतिष्ठा होने तक वह कार्य तेज गति से होते है किन्तु प्रतिष्ठा होने के बाद निर्माणकार्य अत्यंत मंद हो जाते है । यह अयोग्य है । निर्माण की आदि से अंत तक तमाम कार्य सुआयोजित हो यह अत्यंत जरुरी है ।

संपूर्ण जिनालय जब बन जाता है तब चैत्य अभिषेक होते है । चैत्य अभिषेक अर्थात् जिनमंदिर की प्रतिष्ठा । प्रतिमा की प्रतिष्ठा होने के पश्चात टांकणे नही मार सकते, घिसाई नहहीं कर सकते, उसी तरह चैत्याभिषेक के पश्चात जिनालय में कील लगाना, घिसाई का कार्य करना इत्यादि नहीं हो सकता । चैत्याभिषेक के पश्चात जिनालय में इस प्रकार के निर्माण कार्य नहीं हो सकते । चैत्याभिषेक के बाद जिनालय चेतनवंत, जागृत बन जाता है ।

यदि जिनालय को प्राचीन प्रतिमाजी आदि की प्राप्ति होती है तो सहर्ष स्वीकार करना चाहिये । "परिवारवृद्धि नहीं करनी" इस प्रकार के वचनोच्चार से प्रभुजी की आशातना होती है ।

दिगंबर-अजैन आदि प्रतिमाजी हो तो लेप आदि करवाकर श्वेतांबर-मूर्तिपूजक प्रणालिकानुसार प्रभु की रचना करनी चाहिये ।

प्रतिष्ठित प्रभु चलायमान नहीं होने चाहिये । छोटे प्रतिमाजी हो तो सहारा रखना चाहिये अन्यथा चलायमान होने से प्रभु प्रतिष्ठा व्यर्थ हो जाती है।

प्रतिमाजी के नयन-चक्षु निकल ना जाये इस बात का खास ध्यान रखना जरुरी है । स्थिर हो तब तक संपूर्ण प्रकार से स्वयं की जिम्मेदारीयों का निर्वाहन करें ।

ट्रस्टीओं को भक्ति हेतु सुविधा-आयोजन करना चाहिये और आराधकों को भी तद्नुसार साथ देना चाहिये ।

जिनालय का उद्घाटन-मंगल करने का समय, निर्माल्य हटाना, परठना, दिपक प्रज्वलन, योग्य स्थान पर रखना, प्रक्षालादि सुयोग्य व्यवस्था का आयोजन करना आगेवानों का कर्तव्य है ।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

जिनालय का तमाम कार्य दिपक के प्रकाश में हो यह बेहतर है, ना कि लाईट के प्रकाश में । दिपक-प्रकाश उचित मात्रा में फैले यह जरुरी है, इसलिए दिपक को योग्य स्थान पर ही रखे । एक भी दिपक खुला ना हो यह भी ध्यान रखे ।

जिनालय के खुलते ही निर्माल्य ग्रहण करनेवाला श्रावक हो यह जरुरी है । आराधको की कमी हो तो अन्य स्टाफ कचरा निकालता है तब भी ध्यान रखनेवाले श्रावक तो होने चाहिये ।

कचरा (काजा) उल्टा नहीं निकाल सकते अर्थात् परमात्मा की तरफ नहीं बल्कि जिनालय के मुख्य द्वार की तरफ लिया जाता है । कचरा निकालने हेतु झाडु मुलायम होना चाहिये जिससे किसी जीव को किलामणा ना हो ।

कचरा स्त्री निकाल सकती है । स्त्री के कार्य स्त्री को ही करने चाहिये और पुरुष के कार्य पुरुष को ही करना उचित है ।

जिनालय के कार्यो से संबंधित बर्तन नये और साफ-सूथरे हो यह जरुरी है । नये बर्तन भंडार-तिजोरी में पडे रहे और पुराने बर्तन का उपयोग होता रहे एवं नये बर्तन तिजोरी में पडे रहने से मैले-पुराने हो जाये फिर उनका उपयोग किया जाये, ऐसे कार्य नहीं होने चाहिये ।

जिनालय के मूलनायक परमात्मा के पीछे सुंदर-मनोहर परिकर हो यह आवश्यक है । परिकर से श्रीसंघ की भी उन्नति होती है ।

प्रत्येक जिनालय की प्रदक्षिणा भमती में समोसरण की कल्पना हेतु मंगलमूर्ति का होना आवश्यक है ।

जिनालय में परमात्मा के चक्षु-तिलक सुंदर और नयनरम्य हो यह जरुरी है । परमात्मा के उपर छत्रत्रयी का होना भी जरुरी है ।

प्लास्टीक, स्टील, एल्युमिनीयम की कोई भी चीज जिनालय में ना हो इसका ध्यान रखना चाहिये ।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 8

अंगलूछन सुखाने हेतु प्लास्टीक की रस्सी ना रखें । जहाँ अंगलूछन सुख रहे हो वहाँ किसीका मस्तिष्क स्पर्श ना कर पाये, इस बात का विशिष्ट ख्याल रखना जरुरी है । अंगलूछन कांधे पर ना रखे, दरवाजे पर भी ना लटकाये । अंगलूछन को स्वच्छ थाली में ही रखना जरुरी है ।

जिनालय में सस्ती चीजे ले आने की, रखने की भूल कभी भी ना करें । जिनालय में उत्तमोत्तम, श्रेष्ठ सामग्री ही रखे ।

''प्रत्येक पूजा स्वद्रव्य से ही करनी चाहिये'' यह कहना भी संपूर्ण उचित नहीं है क्योंकि दूसरे नगर से पधारे आत्मा शायद ना भी कर पाये । दूसरे नगरजनों के लिये उचित सुविधा का आयोजन अवश्य रखें । आपको स्वयं को तो दीपक तक स्वयं की माचीस से ही प्रज्वलित करना चाहिये ।

''साधारण खाते में लाभ ग्रहण किया है तो जिनालय का द्रव्य उपयोग कर ही सकते है'' ऐसी मान्यता बिलकुल ना रखें । अन्य आत्मा उपयोग कर रहे है अतः वह लाभ आपको भी मिल ही रहा है । आप स्वयं स्वद्रव्य से पूजा करें ।

प्रतिमाजी का निर्माल्य हटाने से प्रक्षाल तक पूर्णतः ध्यानपूर्वक कार्य करें ।

वासक्षेप पूजा करनेवाले विवेक का पालन करें । साधु की पूजा करने पर भी विवेक नहीं रखनेवाले प्रभु की पूजा में विवेक पालन कैसे कर पायेंगे? जहाँ-तहाँ वासक्षेप पूजा नहीं हो सकती, मात्र नौ अंगो पर चूटकीभर वासक्षेप से पूजा होती है । परमात्मा की आंगी श्रेष्ठतम हो यह जरुरी है, विरुप आंगी ना बनाये ।

मोरपिच्छि कोमल, भरी-भरी होनी चाहिये जिससे वासक्षेप सही तरीके से साफ हो सके ।

पूर्व के अर्चित पुष्प आदि निर्माल्य सावधानीपूर्वक ग्रहण करें क्योंकि उसके भीतर सूक्ष्म जीव होने की संभावना है । अतः प्रथम केसरपोछा ना करते हुए निर्माल्य हटाने की जयणापूर्वक क्रिया करें, तत्पश्चात केसरपोछा करें ।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

वाळाकुंची (जमे हुए केसर को हटाने की वस्तु) का उपयोग अनिवार्य नहीं है। प्रगाढता से जमे हुए केसर को हटाने हेतु पानी में डुबोकर नरम की गई वाळाकुंची का विधि-जयणापूर्वक उपयोग करने द्वारा केसर हटाना चाहिये। स्वयं के दंत से अन्नकण जिस तरह ध्यानपूर्वक निकाला जाता है उसी प्रकार ध्यानपूर्वक केसर निकालना चाहिये। परमात्मा जीवंत है यह भावना से परमात्मा को कोई पीडा ना हो इस प्रकार शांतचित्त से केसर निकालना जरुरी है।

अंगलूछन पर्याप्त बडे होने चाहिये। पानी सोक सके वैसे होने चाहिये। कुछ काल बीतने के पश्चात पुराने अंगलूछन हटाकर नये ग्रहण करना जरुरी है।

प्रक्षाल के पश्चात अंगलूछन की सफाई-धोने का लाभ श्राविकाएँ ग्रहण कर सकती है। बडी उम्रवाली श्राविकाएँ यह लाभ ग्रहण करें वह उत्तम है। जहाँ मस्तिष्क आदि शरीर के अंग का स्पर्श ना हो उस स्थान पर अंगलूछन को सुखाना बेहतर है। तत्पश्चात बडी उम्रवाले श्रावक अंगलूछन सुखने के पश्चात उन्हें ग्रहण करके सुयोग्य स्थान पर रख सकते है। इस प्रकार तमाम व्यवस्था सुआयोजित हो यह अत्यंत आवश्यक है।

घी के पात्र-ग्लास स्वच्छ रखें, उसमें बाती रखना, घी से परिपूर्ण करना, योग्य स्थान पर रखना आदि कार्य श्रावकगण प्रातः काल में ही कर दे तो सायंकाल को मात्र दिपकप्रागट्य करना ही शेष रहेगा। रात्रि का दरबार जाज्वल्यमान बन जायेगा। अँधेरे में कोई नीचे गिरेगा नहीं, कोई अव्यवस्था नहीं होगी।

सुखड जहाँ घिसा जाता है वह पत्थर एक समान होना चाहिये अर्थात् उसमें छोटे-छोटे छेद बनाने की प्रथा चली है वह अत्यंत गलत है। उसमें केसर भर जाता है जिसके कारण निगोद की उत्पत्ति होने की पूर्णतः संभावना रहती है। और प्रातः काल में निगोद के अनंत जीव भी पिल सकते है। इस प्रकार अनंत हिंसा का कार्य शुरु हो जाता है। चंदन भी मुलायम हो यह आवश्यक है, चमकीला चंदन नहीं होना चाहिये।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 9

केसर घिसते समय पत्थर और सुखड भी उपयोग होता रहे, इस प्रकार आयोजन करना चाहिये।

बडा चंदन का टुकडा रख सकते है किन्तु छोटे-छोटे टुकडे ना रखें। स्वच्छ हो सके इस प्रकार बडे टुकडे रखें।

जब वह चंदन छोटे हो जाये तब उन्हें फैंक ना दे बल्कि उन्हें बेच दे या वासक्षेप बनवाकर उपयोग करें। किन्तु कहीं भी फैंक ना दे।

बचा हुआ सुखड-केसर फैंक ना दे बल्कि उसे सुखाकर वासक्षेप बनाते समय उसका उपयोग करें।

वरख आदि आंगी की तमाम वस्तु सही तरीके से साफ हो यह जरुरी है। उसकी सुरक्षा उत्तम प्रकार से करें और उसके द्वारा देवद्रव्य की वृद्धि हो इस प्रकार आयोजन करें।

जिनालय हेतु जैन (बोडेली-सराक) पूजारी हो यही आग्रह रखे। मैंने स्वयं उनकी विशिष्ट भक्ति के अनुभव किये है। उनकी विद्यमानता से हमारे जिनालय सुरक्षित रहेंगे।

किसी विद्वान साधु भगवंत के द्वारा जिनालय के तमाम प्रतिमाजी के लेख लिखवाकर रखें ताकि प्राचीनता का ज्ञान रहे।

जिनालय में परमात्मा के सन्मुख फोकस लाईट रखना बिलकुल अनुचित है।

प्रभुजी को बिना आवश्यकता के लेप-ओप करवाना उचित नहीं है।

निर्माल्य बेचने-पधराने की सुयोग्य व्यवस्था करें, यह भी परमात्मा की श्रेष्ठ पूजा ही है।

दीपक रखने में-ग्रहण करने में अत्यंत ध्यानपूर्वक कार्य करें। काले धब्बे ना लग जाये इसका ख्याल रखें।

अलग-अलग पुण्यात्मन अलग-अलग विभाग का संचालन करें, सप्ताह में एक बार तमाम भव्यात्मा अपने-अपने विभाग की पूर्णतः सफाई करें, किसी भी स्थान में अस्वच्छता ना रहे, मकडी के जाले ना हो जाये इन

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

तमाम बातों का ध्यान रखे। मोरपिच्छि मुलायम ब्रश और अरीठा के पानी से साफ करें, जिससे विराधना ना हो।

श्रावक तैयार ना हो तो दो सेवक रखे जो बारी-बारी से जिनालय को शुद्ध और स्वच्छ करते रहे। सप्ताह में कम से कम एक बार तो संपूर्ण जिनालय में सफाई होनी ही चाहिये।

गर्भगृह सर्वश्रेष्ठ और पवित्र स्थान है। वहाँ हल्की सी भी गंदगी या काले धिब्बे नहीं होने चाहिये। छत भी स्वच्छ, जाज्वल्यमान हो यह आवश्यक है।

बाजोठ-पाटले रखने का स्थान निश्चित होना चाहिये। पूजा के पश्चात नैवेद्य, फल, अक्षत आदि रखने का स्थान भी निश्चित होना चाहिये। प्रतिदिन निगरानी रखनेवाले श्रावक हो यह उत्तम है। जिनालय में आनेवाले भव्यात्माओ को प्रेम से कहते रहने से धीरे-धीरे ही सही किन्तु सही परिवर्तन अवश्य होगा।

जिनालय में पुस्तकें मात्र स्तवन और स्तुति की ही रखें, अन्य पुस्तकें नहीं रख सकते। यदि अन्य पुस्तकें हो तो वह ज्ञानभंडार में जमा करवाये।

गृह में चाय पीने हेतु कप और प्लेट अलग-अलग शेप-आकार में क्यों होते है ? कह सकते है कि अलग-अलग आकार होने से भावना पैदा होती है। तो सोचिये, प्रभु पूजा की सामग्री भी कैसी होनी चाहिये ?

पुराना हो चुका भंडार भी निकाल दे। साथ ही अन्य तमाम वस्तु भी देखे, परखे। पुरानी वस्तु को निकाले और नयी, उत्तम वस्तु का संग्रह करें।

जिनालय के बाहर या करीबी स्थान में लोगों को ज्ञात हो इस प्रकार व्यवस्थित बोर्ड लगाना चाहिये। जिनालय के भीतर परमात्मा की गादी के पास प्रत्येक परमात्मा के नाम सुव्यवस्थित प्रकार से लिखे हो यह भी जरुरी है।

यह तमाम कार्य संघ के सभ्य, आगेवान, ट्रस्टी को करने चाहिये। भले ही कार्य करनेवाले मजदूर हो किन्तु उन तमाम कार्यो की निगरानी तो हमें ही रखनी चाहिये। ऐसा ना करें कि मजदूरो के भरोसे कार्य छोडकर चले जाये।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 10

ग्रंथ की भक्ति हेतु, देव-गुरु की भक्ति हेतु कपडा-रुमाल आदि बिछाकर रखे। वह भी मैले हो तो श्रुतभक्ति नहीं कही जायेगी अतः नये-स्वच्छ कपडे ही रखे।

परमात्मा का त्रिगडा भी बिलकुल स्वच्छ हो यह जरुरी है, कोई भी वस्तु मैली हो यह उचित नहीं है।

पाँच-दस व्यक्ति सजाग रहे, उन्हें सत्ता भी सौंप सकते है जिसके कारण वह व्यक्ति तमाम कार्य करते रहेंगे।

जो कार्य करेगा उसकी गलती होगी ही किन्तु भूल का पुनरावर्तन ना हो इसका ख्याल रखे। उपेक्षा ना करें। ध्यान रखने पर भी गलती होती है तो पुनः वह गलती ना हो यह ध्यान रखे।

बेनर अवश्य लगाये किन्तु कार्य-प्रसंग पूर्ण होने के पश्चात बेनर को निकाल दे।

एक-एक कार्य हेतु एक-एक पुण्यात्मा ध्यान दे।

आवश्यकता होने पर मीटिंग करके कार्य को बाँट दे।

बडी उम्रवाली बहनों के घर में बहु होने से दोपहर के समय निवृत्त रहती है। तो जिनालय-उपाश्रय की स्वच्छता रख सकती है। कुछ जिम्मेदारीयाँ उन्हें भी दे सकते है। दो से चार बजे तक तमाम कार्य उन्हें सौंप सकते है।

प्रक्षाल के कलश में गंध पैदा हो, नकुचे में मैल-चिकनाई जमती हो तो उस कलश से प्रभुजी का प्रक्षालन करने पर आशातना होती है। अतः नकुचे साफ रखें, छोटी सली डालकर भी कचरा साफ करना जरुरी है।

सांसारिक आत्माओं हेतु जिनालय भवसागर से पार होने का आलंबन है। मात्र मंडल बनाकर पूजा पढाना और तत्समय जाजम बिछाने हेतु सेवक को आदेश करना पडे तो यह मंडल भी कैसे उत्तम बनेंगे ? स्वयं जाजम बिछाना आदि तमाम कार्य करना तो दास्य भक्ति है, जिसके द्वारा भवसागर से पार हो सकते है।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

''कचरा निकालने हेतु पधारो'' ऐसी बातें ना बोले और ना ही लिखे बल्कि ''दास्य भक्ति करने हेतु पधारो'' यह बोले-लिखे ।

उपाश्रय से कचरा निकालने पर अवधिज्ञान यावत् केवलज्ञान तक हो सकता है तो सोचिये जिनालय से कचरा निकालने पर क्या फल प्राप्त हो सकता है ? वह कार्य करनेवाला कभी हरिजन-भंगी का अवतार प्राप्त नहीं करता और अन्य किसीका कचरा ग्रहण करने का कार्य नहीं करना पडता । उच्च नाम-गोत्र का बंध होता है ।

''जिनालय में नवकारवाली नहीं गिन सकते'' ऐसा कोई नियम नहीं है । साधु के लिये कुछ निषेध है किन्तु सांसारिको के लिये ज्यादा समय बैठने हेतु कोई निषेध नहीं है । साधु-साध्वी को अस्नानव्रत है, मलमलिन गात्र होने से मात्र देववंदन विधि होने तक ही जिनालय में रहने की विधि है । सांसारिक आत्माओं के लिये जिनभक्ति के अनेक प्रकार है अतः उसमें समय व्यतीत होगा ही ।

जिनालय में पालथी लगाकर बैठने का निषेध नहीं है किन्तु पल्लठी सोरठी लोग कसुंबी धो कर पीते है उस प्रकार के आसन में नहीं बैठ सकते । वर्तमान में जिसे पालथी बोला जाता है वह वास्तविकता से सुखासन या स्वस्तिकासन है । उसका निषेध नहीं है ।

द्रव्य सप्ततिका में फल, नैवेद्य को सुयोग्य मूल्य से बेचने की बात कही गई है । फल, नैवेद्य आदि जैनेत्तरो को प्रसाद के स्वरुप में बाँट सकते है किन्तु पूजारी को बिलकुल नहीं दे सकते ।

कार्यसूची बना सकते है और उस पर विमर्श कर सकते है, मीटिंग कर सकते है । सभी सदस्य संघ के कार्य में अपना-अपना योगदान दे यह उचित है । कार्य करने की भावना धारण करनेवाले पुण्यात्मा अपना नाम लिखवाये, उनके साथ भी विशिष्ट मीटिंग का आयोजन कर सकते है । उनकी रुचि हो वह कार्य प्रदान कर सकते है । यह करने से वर्तमान में जैन मंदिरो का जो प्रभाव है उससे भी कई गुना ज्यादा प्रभाव हो सकता है ।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 11

अभिषेक का ठीक समय तय करना जरुरी है । बडे ठाठ से शंख, भेरी, वाजिंत्र, सूर-ताल के साथ सकल संघ एक साथ हो कर अभिषेक पूजा करे यह बेहतर है । संध्या आरती भी इसी प्रकार सामुहिक स्वरुप से संगीत के साथ करना उत्तम है । आरती, अभिषेक आदि का नियत समय होना चाहिये ।

वास्तुशास्त्र में कहा गया है कि ''जिसका आँगन साफ उसका विकास भी उत्तम'' । जिनमंदिर का आँगन कैसा होना चाहिये ? जिनालय के सामने कचरा, गंदगी आदि पदार्थ नहीं होने चाहिये ।

जिनालय-उपाश्रय में आनेवाले को स्थान उल्लसित मेहसुस होना चाहिये। भावधारा मे वृद्धि होनी चाहिये । उपाश्रय का एलिवेशन भी वैसा ही होना चाहिये ।

एक दिन या सप्ताह के लिये जिनालय पूजा-सेवा, स्टाफ का वेतन, निभाव का अंदाजित खर्च बनाया जाये और वह घोषित होने पर लाभार्थी परिवार उस दिन भक्ति का लाभ ग्रहण कर सकते है ।

आपकी संतान का जन्मदिन कैसे उत्तम प्रकार से मनाते हो ? कैसी-कैसी तैयारीयाँ करते हो ? वैसे प्रभु की सालगिराह भी प्रकृष्ट प्रकार से मनाना चाहिये । पालीताणा-नंदप्रभा प्रासाद की प्रतिवर्ष की सालगिराह का महोत्सव देखीये । कितना विशाल आयोजन ! कैसा उत्तम खर्च ! एक वर्ष का आयोजन पूर्ण होते ही तुरंत अगले वर्ष की तैयारी हेतु तीन दिन में ही परिवार बैठकर आयोजन शुरु कर देता है और उसकी तैयारी में भी पूरा वर्ष बीत जाता है । हर वर्ष नई पत्रिका, नूतन आयोजन-रचना-स्वामिवात्सल्य-अनुकंपा-जीवदया-आंगी-आभूषण-दिपक सबकुछ अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव की तरह होता है । संघ लोकोत्तर है ।

इस प्रकार के अनुष्ठान जो भी दो-तीन आत्मा करते है, वही करते रहे ऐसा नहीं होना चाहिये । संघजन इस कार्य में आगे बढते रहे यह आवश्यक है, इस कार्य में आगे बढने से कहीं भी पीछे जाने का अवसर नहीं होगा । तमाम क्षेत्र में आगे बढते रहेंगे ।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

जिनालय में पंचधातु के प्रतिमाजी का विशेष परिवार हो तो एक खास अलमारी बनाकर दिवार के साथ लेख ना मिट जाये उस प्रकार सफेद सिमेन्ट से जोड दे । उनके उपर-नीचे ताम्र की पट्टीयाँ लगवाये । जिसके कारण प्रतिमाजी को कोई जल्दी से ले ना सके ।

पाषाण के प्रतिमाजी अत्यंत नाजुक होते है अतः उन पर सीधा वरख लगाने का निषेध करें । प्रतिमाजी के कवच पर लगा सकते है । धातु के प्रतिमाजी पर वरख लगा सकते है ।

स्वर्ण चढाये गये प्रतिमाजी पर वरख ना लगाने हेतु सूचना रखे ।

प्रभु प्रक्षाल के पानी की ढलान पूर्व या उत्तर की तरफ रखे । दक्षिण-पश्चिम में नहीं रख सकते ।

दरवाजों के स्थान पर खाली जगह ना रखे, मजबूत दरवाजे बनाये । चोरी होने का कोई भय नहीं रहना चाहिये ।

तमाम खिडकीयों में भी ग्रील आदि तमाम व्यवस्था होनी चाहिये ताकि चोरी होने की कोई गुँजाईश ही ना रहे ।

जिनालय की गेलेरी आदि स्थानो पर तमाम कार्य व्यवस्थित रुप से करवाये ।

मंगलमूर्तिओं को प्रतिदिन भीगे कपडे से साफ करके पुष्प चढाना चाहिये ।

जिनालय-शिखर के उपर जो मंच बनाया जाता है वह तुरंत निकाल देना चाहिये । उसके होने से संघ का विकास नहीं होता ।

आंगी-महापूजा में घी या दीवेल के दीपक खुले नहीं रख सकते । सामान्यतः भी दीपक खुले ना रखे । फानस या हांडी में ही रहे यह व्यवस्था समग्र जिनालय में करवाये ।

दर्पण से प्रकाश बढाने की व्यवस्था उचित है ।

घी या दीवेल के ग्लास जैसे-तैसे रख देने से धब्बे हो जाते है अतः वह ग्लास प्लेट में ही रखने की व्यवस्था बनाये, जिसके कारण मार्बल नहीं बिगडेगा । धब्बे-निशान आदि साफ होते रहे इस विषयक उत्तम व्यवस्था

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 12

बनाये ।

जिनालय में प्लास्टीक की छाब, टोकरी आदि उपयोग किये जाते है, यह अनुचित है । यह टोकरीयाँ गम्भारे में भी ले जाई जाती है, उसमें पुष्प रखे जाते है । उसके बदले डेकोरेटीव छाब बनाकर उसका उपयोग करना उचित है । वजन भी कम लगता है और आकर्षक भी लगती है ।

फल-नैवेद्य आदि के लिये हर जगह एल्युमिनियम की परात रखी जाती है, उसके स्थान पर डेकोरेटीव थाल रखने से शोभा में वृद्धि होगी ।

पुरानी, टूटी हुई, फटी हुई चीजो को निकालकर-बेचकर द्रव्यवृद्धि करे और अल्प जगह में समाविष्ट हो जाये वैसी कलात्मक चीजों का संग्रह करे, जैसेकि भंडार-कोर्नर टेबल-धूप स्टेन्ड-दीपक स्टेन्ड इत्यादि ।

गम्भारे के तमाम द्वार पर तोरण बनवाकर लगवाये । ताले भी लगा सकते है । यदि चांदी के तोरण हो सकते है तो सर्वोत्तम है ।

लेप किये गये प्रतिमाजी की पूजा मात्र प्रातः काल में प्रक्षालादिपूर्वक एक ही व्यक्ति करे । पश्चात तुरंत काच के कबाट में रखकर मंगल करे । अन्य आत्मा मात्र दर्शन और धूप-दिपक आदि पूजा करे । अन्यथा अनमोल प्रतिमाजी बार-बार विरुप बन सकती है ।

छोटे प्रतिमाजी - स्फटिक के प्रतिमाजी आदि हेतु बुलेटप्रुफ काच की अलमारी की व्यवस्था तत्काल करे । देख सके किन्तु स्पर्श ना कर पाये इस तरह के कमाड बनाये ।

छोटे प्रतिमाजी और लेपवाले प्रतिमाजी के लंछन चांदी से बनवाकर लंछन के स्थान पर लगवाये, जिससे भविष्य में भी उन प्रतिमाजी की पहचान बनी रहे । और उन-उन प्रतिमाजी के नाम छपवाकर रंग भर दे ।

चौबिसी में कौन से भगवान कौन से स्थान पर है इस बात की जानकारी नहीं मिलती अतः प्रभु की प्रतिमा का ही फोटो बनाकर प्रभु का नाम गादी के पीछे उचित प्रकार से लगाकर गम्भारे के बाहर प्लास्टीक

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

लेमीनेशन करके लगवाये। जिससे दर्शन-पूजक कुछ ही दिन में इस व्यवस्था से जुड जायेंगे।

गम्भारे के दरवाजे के उपर, दहलीज पर, शंखावट की नक्काशी में अक्षत या कचरा जम जाता है वह प्रतिदिन पूजा पूर्ण होने के पश्चात साफ करना चाहिये। अक्षत खाने हेतु चूहे आते है, चींटीयां होती है तो विराधना होती है। नक्काशी भी कमजोर होती है।

जिनालय में जो पूतले होते है उनके हाथ-पैर में कभी भी कोई धागा, वायर आदि ना बाँधे और ना ही लटकाये।

जिनालय में प्लास्टीक की नवकारवाली ना रखे। उत्तम सुखड या काष्ट की नवकारवाली रखे। नवकारवाली भी अलग स्थान पर हुक लगवाकर उसमें रखे। यदि छोटी डिब्बी में नवकारवाली रखी जाती है तो प्रत्येक डिब्बी में एक नवकारवाली रखकर एक स्थान पर ट्रे में रखे और वहाँ बोर्ड लगाकर रखे।

प्राचीन-अर्वाचीन प्रतिमाजी के मुख मंडल या शरीर पर अत्तर या सुखड के तेल का प्रयोग बंद करवाये। उसका रस मार्बल का शोषण करता है। प्रतिमाजी श्याम हो जाते है। श्वेत मार्बल अल्प काल में ही विवर्ण क्रीम हो जाता है। मार्बल के पड भी निकल जाते है। धातु की प्रतिमा हेतु कोई बाध नहीं है।

प्रभु के अलंकार, मुगट, आंगी आदि जमीन पर ना रखे। बडी थाली में ही रख सकते है। इस विषय में सूचना दे और अमल भी करवाये।

आंगी करनेवाले भी मुखकोष बाँधकर ही आंगी कर सकते है। मुगट, कवच आदि की आंगी बाजोठ पर थाल में रखकर करें।

आंगी करते वक्त वरख के कागज इधर-उधर ना उडते रहे इसलिए एक बोक्ष रखकर उसमें ही कागज रखे।

आंगी का उतारा धूप में रखकर तुरंत सुखाना चाहिये अन्यथा निगोद

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 13

होने की संभावना रहती है। कुंथुआ जीव पैदा हो सकते है। सुखाने के पश्चात कुछ महीनों में चांदी-स्वर्ण अलग करके देवद्रव्य में जमा करवाना चाहिये। इस विषय में बेहतरीन प्रबंध करना चाहिये।

जिनालय की नक्काशी-पूतले आदि में काफी धूल जम जाती है। यह प्रतिदिन या सप्ताह में एक बार साफ करवाये।

नक्काशी से धूल निकालने हेतु चमडे की मशक से हवा डाल सकते है। यह मशक आबु-राणकपुर में है। वेक्युमक्लीनर के पाप से बचने हेतु यह मशक उपयोगी है।

थाली-कटोरी एक जैसी खास डीजाईन की बनवाये। लोगों को भी पता चलेगा कि यहाँ इस प्रकार की ही थाली-कटोरी विद्यमान है। पुरानी थाली-कटोरी बेचकर इस प्रकार नई थाली-कटोरी खरीद सकते है।

पुष्प रखने की छाब आदि आकर्षक हो, देखते ही रह जाये इस प्रकार बनवाये।

आरती-मंगलदीपक आदि विशिष्ट, बडे और आकर्षक आकार के बनवाये।

अंगलूछन छोटे प्रतिमाजी हेतु छोटे और बडे प्रतिमाजी हेतु बडे बनवाये।

अंगलूछन थाली में ही रखे, पबासन पर ना रखे।

अंगलूछन धोने की व्यवस्था भी उत्तम होनी चाहिये।

अंगलूछन और पाटलूछन एक साथ ना धोये। अलग-अलग स्थान पर अलग-अलग व्यक्ति के धोने पर सही विवेक होगा।

अंगलूछन धोने हेतु देशी साबुन का उपयोग करे। आवश्यकता होने पर गरम पानी का उपयोग करे।

प्रभु को नवांगीया (सोने चांदी के टीके) ना लगाये, चांदी के कवच, हार, बाजुबंध आदि फीट ना करवाये।

अंगलूछन की सफाई करने पर जो पानी बचता है वह गटर में ना जाने दे किन्तु प्रक्षाल के साथ ही परठने की व्यवस्था करे।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

तिलक करने हेतु तीन या चार जगह पर दर्पण लगवाये । भाईओ और बहनो के लिये अलग-अलग दर्पण की व्यवस्था करे । उसके उपर भाईओ के लिये और बहनो के लिये यह सूचना भी लिखे ।

चंदन बनाने हेतु पत्थर कुबडी के होने चाहिये जिससे उसमें छेद बनाने की आवश्यकता नहीं रहती और उत्तम चंदन भी बनता है ।

पत्थर नीचे से फीट करवाये ताकि वहाँ पानी ना भर जाये ।

छोटे पत्थर फीट ना करवाये, प्रतिदिन चारों तरफ से साफ करके रख सकते है ।

पूजारीओं को रुम में अजैन फोटो-मूर्ति आदि ना रखने दे ।

सुखड के टुकडे कहीं भी ना रख दे । पेढी से जब प्रदान किया जाये तब नंबर ध्यान में रख कर दे और जब उपयोग पूर्ण हो तब अलमारी में ताला लगाकर बंद रखे । जिसके कारण उसकी चोरी ना हो पाये । सुखड के टुकडे जब छोटे बाकी रह जाये तब पुनः जमा करके अलग स्थान पर रखे । किसी को व्यक्तिगत रुप से आवश्यकता हो तो उसे बेच सकते है या अग्निसंस्कार आदि प्रसंग में बेच सकते है । मूल बात यही है कि वह टुकडे कहीं भी ना रख दे, उत्तम प्रकार से व्यवस्था करे ।

घी में कपूर मिलाने से सुवासित बनता है । कोई खा भी नहीं सकेगा और जल्दी बिगडेगा भी नहीं । उसमें रंग भी डाल सकते है ।

आंगी में प्लास्टीक स्टोन का उपयोग होता है वह अनुचित है, बंद करवाये । आंगी में पेराशूट की डोर भी उपयोग की जाती है वह भी अनुचित है । आंगी में ऊन की चीजों का उपयोग भी वर्जित है । रुई का उपयोग भी ना करें (वरख को सही तरीके से लगाने हेतु उपयोग कर सकते है) । आंगी में रेशम शुद्ध और मूल्यवान ही उपयोग करे ।

वरख-बादलां नकली ना हो इसका ध्यान रखे ।

आंगी में प्रदर्शन हेतु भी प्लास्टीक के फूल ना रखे । अल्प परंतु असल पुष्प का ही उपयोग करें ।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 14

जिनालय में तोरण आदि जगह पर पीला-नारंगी गेंदाफूल का उपयोग नहीं कर सकते । जैन मंदिर में गेंदाफूल का उपयोग नहीं हो सकता । बाहर पटांगण में लगा सकते है ।

स्नात्र का नारियल प्रतिदिन बदलना चाहिये, नया रखना चाहिये ।

स्नात्र हेतु पेटी, तबला आदि तमाम व्यवस्था के साथ-साथ कायमी स्नात्र हो वह आयोजन भी करना चाहिये । स्नात्र भी चिल्लाकर नहीं बल्कि मधुर स्वर में ही करे । स्नात्र का समय भी वही रखे जिसके कारण प्रवचन में कोई बाधा ना हो ।

तमाम प्रतिमाजी के पीछे छोड और उपर चंदरवा होना ही चाहिये । आरती-मंगलदिपक के पैसे देवद्रव्य में शत्रुंजय-शंखेश्वर की तरह ही रखे ।

अंगलूछन उत्तम स्थान पर थाल में ही रखे ।

जिस प्रतिमाजी को ओप किया गया है उनकी शुरुआत में दो या पाँच लोग पूजा कर ले फिर अंगलूछन रख देना चाहिये । जिससे अन्य लोगों के पूजा करने पर प्रतिमाजी को कोई नुकसान ना हो ।

जिनालय में घी के दीपक का उपयोग होता है जिसके कारण जिनालय में कालापन होने की संभावना है । अतः गम्भारे में खास तौर पर ८-१५ दिन में कपडे से साफ करते रहे जिससे काले धब्बे ना हो जाये ।

जिनालय में दीपक रखने हेतु काच के बोक्ष रखे जाते है वह बोक्ष मुमकीन हो तो प्रतिदिन साफ करे । अतः स्वच्छ बोक्ष होने से प्रकाश भी विशेष प्रगट होता है । गम्भारे में काच के बोक्ष रखने से प्रकाश ज्यादा दिखता है । वह बोक्ष भी प्रतिदिन साफ करना जरुरी है । साफ ना करने पर धूल-मिट्टी जम जाती है और प्रकाश कम होता है ।

जिनालय में तमाम स्थानो पर नक्काशी का कार्य किया जाता है, वहाँ धूल जम जाने की भारी संभावना रहती है । अतः एक सेवक रखे जो तमाम स्तंभ एवं तमाम स्थान सही तरीके से कपडे से साफ करे । यह कार्य प्रतिदिन हो तो बेहतर है अन्यथा दो या तीन दिन में एक बार करवाये ।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

आरस की सीढीयाँ होती है उसमें प्रथम और अंतिम सीढी में लाल पट्टी लगवाये। जिससे प्रातः काल में अंधेरे में सीढी दिख सके, गलती से भी गिर जाने का संभव ना रहे।

जिनालय में तमाम स्थानों पर सही प्रकार से सुबह-शाम कचरा निकालना जरुरी है ताकि कीडे-मकोडे या मूषक का उपद्रव ना बढे।

जिनालय में तमाम वस्तु उचित स्थान पर ही रखी जाये उसकी सूचना एवं सेवक द्वारा चेकींग आवश्यक है।

जिनालय में उपर के भाग में जहाँ घुम्मट आदि की रचना है वहाँ की सीढी भी साफ होनी चाहिये अन्यथा धूल, मकडी के जाले इत्यादि होने की संभावना है।

घुम्मट के आसपास का कार्य, सफाई सही तरीके से हो रही है या नहीं उसका चेकींग ट्रस्टी द्वारा या योग्य व्यक्ति के द्वारा होना ही चाहिये।

कायमी पूजारी ना रखे, ४-५ साल के पश्चात पूजारी बदल दे, अन्य पूजारी रखे।

बडे तीर्थ जहाँ जिनालय की ध्वजा जल्द ही फट जाती है, वहाँ ३-६ महीने में ध्वजा बदल देना जरुरी है।

जिनालय में कोई अजैन प्रतिमा हो या स्थापित की गई हो तो उनका विलेपन आदि करके जैन स्वरुप देना चाहिये या समुद्र में विसर्जन कर देना चाहिये।

जिनालय में उपयोगी फानस, धूपदान, चामर आदि तमाम वस्तु सुयोग्य हो यह जरुरी है। ४-६ महीने के पश्चात यदि वह वस्तु खराब हो जाती है तो नई वस्तु की व्यवस्था करे ताकि परमात्मा की पूजा उत्तम प्रकार से, उत्तम भावों के साथ हो सके। कुंडी-कलश-थाली-कटोरी आदि खराब हो जाये या टूट जाये तो नये खरीदे।

जिनालय की निगरानी हेतु खास २-३ व्यक्ति की कमीटी बनाये और उन्हें जिम्मेदारी दे। कोई सूचना हो तो कमीटी को ज्ञात करावे और कमीटी को भी उचित सत्ता प्रदान करे। जिससे जरुरी कार्य हो सके।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 15

निर्माल्य-पुष्प की व्यवस्था का अवलोकन करे। विधि अनुसार जयणा का पालन हो इस प्रकार व्यवस्था करे।

जिनालय में फल-नैवेद्य-अक्षत हेतु योग्य व्यवस्था करे। खाली डिब्बे या कुंडी इत्यादि की सुविधा रखे ताकि पूजा करने के पश्चात आराधक आत्मा उस स्थान का उपयोग कर सके।

भंडार, सिंहासन, त्रिगडा आदि की प्रतिदिन सफाई करने से कालापन नहीं होगा। महीने में एक बार व्यवस्थित रुप से सफाई करना उचित है।

मूलनायक आदि प्रतिमाजी को ८ दिन में दहीं आदि से साफ करने पर प्रतिमाजी स्वच्छ रहते है।

महीने में एक-दो बार संपूर्ण जिनालय शुद्ध औषधी से स्वच्छ करने पर पवित्रता बरकरार रहती है। कचरा आदि अनावश्यक पदार्थ बाहर निकल जाते है और जिनालय बिलकुल स्वच्छ रहता है।

जिनालय के किसी भी कार्य हेतु स्टेनलेस स्टील, एल्युमिनियम या प्लास्टीक की कोई भी वस्तु का उपयोग ना हो इस विषयक विशेष ध्यान रखे।

अक्षत-फल-नैवेद्य की व्यवस्था समय पर विधि अनुसार करे।

न्हवणजल, निर्माल्य-पुष्प की सुयोग्य व्यवस्था करे।

आंगी उतारकर रखने की व्यवस्था करे।

जिनालय में कितने भगवान है, कितने सिद्धचक्र है, कितने अष्टमंगल है वह गिनकर रखे। एक भाग्यशाली आत्मा प्रतिदिन यह गिनती करे, ऐसी व्यवस्था रखे।

जहाँ चमत्कार वहाँ नमस्कार
यह लोक कहता है....
परंतु जहाँ नमस्कार वहाँ चमत्कार
यह जिनशासन कहता है।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

6. जिनालय शुद्धिकरण कैसे करें ।

शुद्धिकरण के एक-दो दिवस पूर्व शुद्धिकरण हेतु मिलनेवाले जिनालय के ट्रस्टीवर्य, जिनालय शुद्धिकरण परिवार के मुख्य दो कार्यकर्ता और आपके दो मुख्य कार्यकर्ता को जिस जिनालय में शुद्धिकरण करना है, वहाँ की विशेष माहिती जिनालय में जा कर प्राप्त करें । आभूषण आदि मूल्यवान सामान शुद्धिकरण के पूर्व दिन लोकर में रखने की सूचना ट्रस्टीश्री को कर दे ।

आप जिस जिनालय में शुद्धिकरण करनेवाले है वहाँ बोर्ड पर यह सूचना लिखवा दे ।

जिनालय शुद्धिकरण परिवार की भाग्यशाली आत्माएँ आपके श्री संघ का जिनालय शुद्धिकरण करने पधार रहे है । अत: श्री संघ के तमाम भव्यात्मा प्रात: ७.३० बजे से पूर्व पूजा अवश्य कर ले । व्यवस्था में आपका सहकार अवश्य प्रदान करें ।

A. कार्य को किस प्रकार बाँटे ?

जिनालय अनुसार कार्यकर्ता की कमीटी बनाये ।

(१) गम्भारा शुद्ध करनेवाले / आरस के प्रतिमाजी शुद्ध करनेवाले

(२) धातु के प्रतिमाजी शुद्ध करनेवाले

(३) मिश्रण बनानेवाले

(४) गम्भारे में पानी पहुँचानेवाले

(५) पानी छाननेवाले

(६) बाहर का रंगमंडप शुद्ध करनेवाले

(७) शिखर के आसपास की दिवारों को साफ करनेवाले / बाहर की दिवारों को साफ करनेवाले

(८) त्रिगडा, भंडार, सिंहासन, बर्तन साफ करनेवाले, अंगलूछन साफ करनेवाले

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 16

नोट :-धातु और आरस के प्रतिमाजी को शुद्ध करनेवाले और मिश्रण बनानेवाले भव्यात्मा पूजा के वस्त्र पहने । गम्भारा शुद्ध करने के पश्चात उन्हीं आत्माओं को प्रतिमाजी शुद्ध करने का कार्य दे । १ व्यक्ति दहीं का मिश्रण लगानेवाला और २ व्यक्ति मालीश करनेवाले इस प्रकार कुल ३ व्यक्ति गम्भारे में रहें । दहीं लगाने के पश्चात मालीश के कार्य में जुड जाये । धातु के प्रतिमाजी पे भी इसी प्रकार कार्य करे ।

इतना अवश्य ध्यान रखे :-

१) आप अत्यंत पुण्यवान है तभी यह महान अवसर आपको प्राप्त हुआ है । अत: परम अहोभाव धारण करें ।

२) मुमकीन हो तो ढोली के साथ बाजे-गाजे के साथ आपके ग्रुप सहीत संघ से प्रयाण करें । आपको शुद्धिकरण हेतु प्राप्त जिनालय में भी बाजे-गाजे के साथ, आनंद-उत्साहपूर्वक प्रवेश करें ।

३) परमात्मा की जरा सी भी आशातना ना हो इस प्रकार अत्यंत विनम्रता से व्यवहार करें ।

४) परमात्मा को पूंठ ना दिखे इस प्रकार कार्य करें ।

५) संपूर्णतया शांति से कार्य करें । निकटवर्ती अजैन आत्मा अधर्म प्राप्त ना करे इस बात का ख्याल रखे ।

६) हमारा कार्य प्रशंसा के पात्र ना बने तो कोई परेशानी नहीं किन्तु निंदा के पात्र बिलकुल नहीं बनना चाहिये । अत: विवेक, धीरज, निष्ठापूर्वक सुंदर कार्य करें ।

७) शांतचित्त से, धैर्यता से, जल्दबाजी किये बिना, निष्ठापूर्वक सुंदर कार्य करें । संपूर्ण जिनालय चमक उठे इस प्रकार सुंदर सफाई करें ।

८) कोई भी कार्य करने के पश्चात वस्तु यथास्थान पर ही रखे । कोई भी कार्य अधूरा ना छोडे ।

९) किसी भी प्रकार की आवश्यकता होने पर या कोई परेशानी होने पर, जिनालय शुद्धिकरण परिवार के कार्यकर्ता आपके साथ ही है, उन्हें

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

अवगत करे । आपके संघ के मुख्य कार्यकर्ता के पास मोबाईल आदि चीजे जमा करावे ।

१०) जिनालय शुद्धिकरण परिवार के कार्यकर्ता और श्री संघ के मुख्य कार्यकर्ता शुद्धिकरण की व्यवस्था का सतत नियमन करते रहे । अंत में तमाम वस्तु स्थानिक ट्रस्टी और पूजारी को सौंप दे और उन्हें तमाम चीज-वस्तु योग्य प्रकार से प्रदान की गई है, इस बात का पत्र आपके पास रहेगा उसमें ट्रस्टीवर्यो के हस्ताक्षर ग्रहण कर ले ।

११) शुद्धिकरण के पश्चात तमाम व्यक्ति अनुकूलतानुसार पूजारीजी को यथाशक्ति कुछ राशि प्रदान करें ताकि उन्हें भी बहुमान भाव प्राप्त हो ।

खास नोट :-

शुद्धिकरण शुरु करने से पूर्व एक धातु के प्रतिमाजी, एक सिद्धचक्रजी, धूप, दीपक किसी एक स्थान पर स्थापित करें ताकि कोई भी व्यक्ति पूजा करने हेतु पधारे तो उन्हें कोई परेशानी ना हो ।

महत्त्व की सूचना :-

(१) आसपास के रहनेवालों को कोई परेशानी ना हो इस प्रकार आपके वाहन पार्क करे । (२) गुरु भगवंत (साधु भगवंत या साध्वीजी भगवंत) बिराजमान हो तो उनके श्रीमुख से मांगलिक श्रवण करके शुद्धिकरण की क्रिया शुरु करे । (३) पुरुष-युवक वर्ग कुर्ता-पायजामा पहनने का ही आग्रह रखे । (४) बेटीयाँ दुपट्टेवाले ड्रेस ही पहने । (५) जिन्स-टी शर्ट आदि उद्‌भट्ट वेष में कोई भी व्यक्ति जिनालय में प्रवेश ना करे । (६) बहने-बेटीयाँ मस्तिष्क खुल्ला ना रहे इस प्रकार ही कार्य करने का आग्रह रखे । (७) पानी छानकर ही उपयोग में ले । (८) पुरुष-स्त्रीयाँ एक साथ कोई भी कार्य ना करें । (९) तमाम कार्य जयणापूर्वक ही करें । (१०) भंडार के छेद में छोटी सी थेली फीट करके उपर छोटी थाली रख दे या सेलोटेप लगा दे । (११) जिनालय की मेईन स्वीच बंद कर दे । (१२) लोहे की सीढी के नीचे का पईया प्लास्टीक के थेली से पेक कर दे । (टाइल्स में खराबी ना हो इसलिए)

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 17

(१३) गम्भारे में लकडी की सीढी ले जाये । (लोहे की सीढी का उपयोग ना करें) (१४) पूजा के वस्त्र पहननेवाले हाथ के नाखून पहले से काटकर रखे और अंगूठी भी ना पहने । (१५) जिनालय में स्थित परमात्मा के आभूषण-मुगट आदि मूल्यवान चीज सुरक्षित स्थान पर रखने की सूचना ट्रस्टीगण को पहले से ही कर दे । (१६) अंगलूछन एक या दो बार परात में विधिपूर्वक धो डाले । (नये अंगलूछन पानी का शोषण ना करे इस हेतु से) (१७) कितनी वस्तु का उपयोग होगा वह पूर्व से लिखकर रखे । (कलश, थाली, कुंडी इत्यादि)

B. जिनालय शुद्धिकरण

(१) सर्वप्रथम गर्भगृह में परमात्मा के ऊपर स्वच्छ वस्त्र रखे । गर्भगृह का शुद्धिकरण और बाहर के रंगमंडप का शुद्धिकरण करे ।

(२) धातु के प्रतिमाजी हेतु अलग व्यवस्था करें ।

(३) काष्ठ, काच के जिनालय में पानी का उपयोग ना करते हुए मात्र धूल निकालकर पोछे से साफ कर दे ।

(४) जिनालय का हर एक कोना अच्छे से साफ करें । लंबे झाडु के द्वारा जिनालय की छत भी साफ करें ।

(५) उपर का रंगमंडप एवं गम्भारे का भाग साफ करने के पश्चात जिनालय-भमती से कचरा निकाल ले । कचरे पर किसीका पैर ना लग जाये इस प्रकार छाँव हो ऐसे किसी योग्य स्थान पर रख दे । जहाँ से चीटीयां निकल रही हो वहाँ दर के बाहर छोटा सा भीगा कपडा रख दे और कुछ अंतराल होने पर वहाँ हल्का सा पानी डालते रहे, यह कार्य जयणा के कार्यकर्ता करते रहे ।

(६) चींटी, मकोडे, कीडे, कोकरोच आदि जीवों का उपद्रव हो तो अत्यंत जयणापूर्वक कार्य करें । जैसे ही इस प्रकार के छोटे जीव दृश्यमान हो तुरंत जयणा कार्यकर्ता को बुलाये । आगे का कार्य जयणा के कार्यकर्ता देख लेंगे।

(७) जहाँ तलघर हो उन जिनालय में मात्र पोछा ही करें । उपर का पानी

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

नीचे ना फैल जाये इस बात का ख्याल रखे ।

(८) बर्तन, घंट, त्रिगडा, भंडार आदि की सफाई हेतु अलग व्यवस्था करें । प्रतिमाजी के अलावा अन्य तमाम धातु की वस्तु हेतु पितांबरी पावडर का उपयोग करें ।

(९) अंगलूछन धोने की और थाली रखने की जगह या अलमारी हो तो वहाँ उत्तम सफाई करें ।

(१०) कार्यहीन पुस्तकें, पत्रिका, कागज, फोटो, नवकारवाली या व्यर्थ चीजों को जमा करके साधर्मिक भक्ति के स्थान तक पहुँचाये । स्थानीय ट्रस्टी या जिम्मेदार व्यक्ति को पूछकर ही कोई भी वस्तु निकालें ।

C. प्रतिमाजी का शुद्धिकरण कैसे करें ?

(१) भमती में स्थित मंगलमूर्ति पर मोरपिच्छि से निर्माल्य निकाले और आसपास के भाग में पुंजणी से सफाई करके भीगे कपडे से साफ कर दे ।

(२) गर्भगृह से कचरा निकालने के पश्चात प्रतिमाजी का शुद्धिकरण शुरु करें ।

(३) सर्वप्रथम एक व्यक्ति प्रतिमाजी पर रहे पुष्प उतार दे और दूसरा व्यक्ति केसरपोछा (पानीवाला कपडा) से प्रतिमाजी को साफ कर दे ।

(४) वाळाकुंची का उपयोग अत्यंत खराब भाग को साफ करने हेतु ही विवेकपूर्वक करें । जडतापूर्वक वाळाकुंची का उपयोग करने से परिणाम में कठोरता पैदा होती है ।

(५) स्फटीक या अन्य रत्न के, लेपवाले या वेलु (मिट्टी) के प्रतिमाजी को प्रक्षाल आदि ना करें ।

(६) मिश्रण कुंडी में बनाये ।

(७) मिश्रण बनाने की प्रक्रिया :-(१) आरस के प्रतिमाजी हेतु १०० ग्राम दहीं में २ चम्मच वडी पावडर और १ चम्मच शिकाकाई पावडर डालकर पेस्ट बनाये । (यदि अत्यंत मजबूत पेस्ट मालुम हो तो थोडा सा पानी डाल दे) (२) धातु के प्रतिमाजी हेतु १०० ग्राम दहीं में १ चम्मच शिकाकाई पावडर डालकर मिश्रण बनाये । (३) जिन आरस के प्रतिमाजी पर अधिक मात्रा में धब्बे हो गये है उनके लिये १ चम्मच आम्ल पावडर जोडकर अलग मिश्रण बनाये ।

(८) शुद्धिकरण के पश्चात प्रतिमाजी पर वरख ना लगाये ।

D. आरस के प्रतिमाजी का शुद्धिकरण कैसे करें ?

(१) शिकाकाई पावडर, वडी पावडर और दहीं के मिश्रण का पेस्ट बनाकर प्रतिमाजी पर हल्के हाथों से लगाये । १५ मिनिट के पश्चात हल्के हाथों से मालिश करें । कहीं कोई दाग हो तो विशेष मालिश करें ।

(२) पुनः यही लेप करें और १५ मिनिट के पश्चात हल्के हाथों से मालिश करें।

(३) १८ अभिषेक के चूर्ण और १०८ नदी के जल मिश्रित पानी से प्रक्षाल करें । तत्पश्चात पानी से प्रक्षाल करें । हल्का सा भी पावडर आदि कोई मिश्रण प्रतिमाजी पर ना रह जाये इस प्रकार संपूर्ण शुद्धि करें । तत्पश्चात अंगलूछन-चंदन-पुष्प पूजा करें ।

E. धातु के प्रतिमाजी का शुद्धिकरण कैसे करें ?

(१) धातु के प्रतिमाजी हेतु पितांबरी पावडर या नींबू का उपयोग ना करें बल्कि मात्र निम्नोक्त वस्तु का ही उपयोग करें ।

(२) प्रतिमाजी को उल्टा करके साफ ना करें और नीचे रखते समय आवाज ना हो इस बात का ख्याल रखें ।

(३) शिकाकाई पावडर और दहीं का मिश्रण करके प्रतिमाजी पर विलेपन करें । १५ मिनिट के पश्चात हल्के हाथों से (अंगूठे से) मालिश करें ।

(४) तत्पश्चात पानी से प्रक्षाल करें । आवश्यकता होने पर ही वाळाकुंची

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 18

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

का विवेकपूर्वक उपयोग करें । विशेष तौर पर नीचे के भाग में वाळाकुंची से सफाई करें ।

उत्साह में शुद्धिकरण तो हो जाता है किन्तु पावडर के रह जाने से लीलफूग आदि होने की संभावना है । अतः विशेष ध्यान रखकर प्रतिमाजी को संपूर्ण शुद्ध करें । कार्य भले कम हो किन्तु श्रेष्ठ होना चाहिये ।

(५) १८ अभिषेक के चूर्ण आदि मिश्रित पानी से प्रक्षालन करें । तत्पश्चात अंगलूछन-चंदन-पुष्प पूजा करें ।

(६) प्रक्षाल का पानी गटर में ना जाये इसका ध्यान रखे । कार्यकर्ता प्रक्षाल का पानी नदी के किनारे परठवे ।

(७) योग्य स्थान पर साथ-साथ स्नात्र पठन शुरु कर दे ।

(८) अष्टप्रकारी पूजा दोहे बोलकर करें ।

(९) अंगलूछन की सफाई करके योग्य स्थान पर सुखाये ।

(१०) चंदन पूजा नौ अंग पर ही करें, अन्य अधिक तिलक-अंगपूजा ना करें।

(११) अंत में तमाम वस्तु यथास्थान पर ही रखे ।

(१२) सामुहिक भक्ति करें ।

(१३) सकल तीर्थ के उद्धार, सकल श्री संघ की एकता, सकल जीवों के कल्याण हेतु १२ नवकार गिने ।

(१४) १२ नवकार १२ मुद्रा के साथ गिने और पश्चात सामुहिक क्षमापना करें।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 19

6. जिनालय में दर्शन-पूजन कैसे करें ?

वीतराग परमात्मा का दर्शन पापों का नाश करता है, वीतराग प्रभु का वंदन वांछितपूरण करता है, वीतराग प्रभु की पूजा लक्ष्मी अर्पण करती है, अतः परमात्मा साक्षात् कल्पवृक्ष है । प्रभु दर्शन की इच्छा होने से ही लाभ शुरु हो जाता है । उपवास, छट्ठ, अट्ठम, १५ उपवास यावत् मासक्षमण का लाभ प्राप्त हो सकता है । कषाय-क्लेश होने पर दिमाग को शांत बनाकर दर्शन करने हेतु जाये, जिससे दर्शन में मन संयोजित हो जाता है । दर्शन करने जाते समय दूध की टोकरी या सब्जी के थैली साथ लेकर ना जाये । जो स्वर विद्यमान हो वही पैर गृह के बाहर प्रथम रखकर दर्शन करने जाये । शुभ शुकन जानकर प्रभु मिलन हेतु जाये । खुले पैर, पैदल दर्शन करने हेतु जाने से यात्रा का लाभ मिलता है, जयणा का पालन होता है । जिनालय की ध्वजा दिखते ही दो हाथ जोडकर, मस्तक झुकाकर "नमो जिणाणं" बोले । जेब में भोजन-पेय पदार्थ ना रखे । मुख यदि झूठा हो तो सफाई करके ही जिनालय में जाये । दर्शन हेतु स्नान करने की आवश्यकता नहीं है, हाथ-मुख साफ करके अंगशुद्धि कर लेना पर्याप्त है ।

जिनालय के मुख्य द्वार में "निसीहि" कहकर प्रवेश करते समय पुरुष अपनी बायीं ओर से और स्त्री अपनी दायीं ओर से प्रवेश करें ।

मुख्य द्वार में नीचे शिल्पानुसार दृष्टि दोष निवारण हेतु प्रतीक स्वरुप बाघ और सिंह स्थापित है, उन दोनों के मध्य जो स्थान है वहाँ हाथ से स्पर्श करें । उन दोनों को राग-द्वेष का प्रतीक मानकर "मैं राग-द्वेष पर पैर रखकर भीतर जा रहा हुँ अतः चाहे कैसे भी संजोग हो जिनालय में राग-द्वेष नहीं करुँगा" यह भावना जागृत करें ।

परमात्मा के दर्शन होते ही "नमो जिणाणं" बोले ।

परमात्मा की आज्ञा मस्तिष्क पर चढाने के प्रतीक स्वरुप ललाट पर तिलक करें । (पुरुष बादाम के आकारवाला और स्त्री गोल तिलक करें)

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

तिलक हेतु दिया बलिदान - अजयपाल के क्रूर हठाग्रह से १९ युगल गर्म तेल में जलकर खत्म हो गये किन्तु अपना तिलक नहीं मिटाया । यह बलिदान याद करके, तमाम माता-बहनों से निवेदन है कि प्रातः काल में जैसे अपनी संतान को टूथब्रस किया कि नहीं यह पूछ लेते हो, वैसे ही "पुत्र ! तुमने तिलक क्यों नहीं लगाया ? जा, सर्वप्रथम तिलक करके आ ।" यह कहकर तिलक लगाने हेतु भेजे । बिना तिलक जैन की संतान शोभनीय नहीं है । तिलक पूर्ण दिन मस्तिष्क पर रहे इस तरह लगाये । पत्नी-सेठ-मालिक को वफादार रहनेवाला क्या तिलक से बेवफा रहेगा ? मेरे मस्तिष्क पर परमात्मा की आज्ञा स्वरुप तिलक है, यह बात याद आते ही अनेक पापों से बच सकेंगे । रात्रि को तिलक निकाल दे ।

दर्पण में देखकर तिलक करना, इस क्रिया का दूसरा नाम है "कालदर्शन" । मैं काल के आधीन हुँ, दिन-प्रतिदिन मैं मौत के करीब जा रहा हुँ, बालक से युवान और युवान से वृद्ध हो रहा हुँ । आत्मकल्याण की साधना कर लुँ । हे परमात्मा ! आप तो काल से पर हो, आप जरा-मरण से मुक्त हो; वही स्वरुप मैं भी प्रगट करना चाहता हुँ ।

निमित्त शास्त्रानुसार काल दर्शन अर्थात् मृत्यु करीब होने पर शरीर से छाया के पुद्‌गलों का निकलना बंद हो, कभी मुख ही ना दिखे या कभी विकृत दिखे तो समझना कि मृत्यु करीब है और साधना मार्ग में जुड जाये ।

दर्पण का अर्थ है दर्प + ण, दर्प अर्थात् अहंकार, दर्पण अर्थात् अहंकार ना कर । आयना **(I No)** मैं नहीं हुँ । दर्पण के सन्मुख अहंकार तोडना है लेकिन जीव वहीं पर अहंकार कर बैठता है ।

(विज्ञान - मृत्यु के करीब होने पर मनुष्य का आभा मंडल **(Aura)** काला-श्याम हो जाता है । मानव जब क्रोध करता है तब भी वह आभामंडल श्याम बन जाता है । तभी तो हमारे शास्त्रो में भी लिखा है कि "क्रोध मृत्यु है ।"

प्रभु को तीन प्रदक्षिणा दे । तीन प्रदक्षिणा देने से १०० वर्ष के उपवास - ३६५०० उपवास (छत्तीस हजार पांचसौ उपवास) का लाभ प्राप्त होता है । प्रदक्षिणा ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से भी महामांगलिक है ।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 20

(१) ज्योतिष शास्त्रानुसार प्रयाण करने से पूर्व तीन प्रदक्षिणा देने से मुहूर्त के तमाम दोष दूर हो जाते है, क्योंकि जिनमंदिर को महामंगल कहा गया है ।

(२) जिनालय में १० त्रिक का पालन करें । (१) निसीहित्रिक (२) प्रदक्षिणात्रिक (३) प्रणामत्रिक (४) पूजात्रिक (५) अवस्थात्रिक (६) प्रमार्जनात्रिक (७) दिशात्यागत्रिक (८) आलंबनत्रिक (९) मुद्रात्रिक (१०) प्रणिधानत्रिक ।

A. प्रदक्षिणा

ज्योतिषशास्त्र अनुसार प्रदक्षिणा देने से अशुभतत्त्व का नाश होता है और आपत्ति से बचा जा सकता है ।

(१) श्रेष्ठ दक्षिणा - मोक्ष प्राप्त करने हेतु प्रभु आपके पास आये है ।

(२) दक्षिण अर्थात् दायां भाग । परमात्मा की दायी तरफ जो दी जाती है वह है प्रदक्षिणा । रत्नत्रयी की आराधना और भवभ्रमण को नष्ट करने हेतु प्रदक्षिणा अवश्य दे ।

(३) तीन स्थान पर निसीहि बोले ।

प्रथम निसीहि मुख्य द्वार पर । संसार की तमाम पाप प्रवृत्ति और विचारों का मैं मन, वचन, काया से निषेध करता हुँ । १०० उपवास का लाभ मिलता है ।

तीन प्रदक्षिणा पूर्ण करने के पश्चात परमात्मा के गम्भारे के पास दूसरी निसीहि बोलकर जिनालय संबंधित कार्यो का भी त्याग किया जाता है ।

धूप, दीपक, स्वस्तिक आदि करने के पश्चात चैत्यवंदन के पूर्व तीसरी निसीहि बोलकर द्रव्यपूजा का भी त्याग किया जाता है ।

(४) "मैं परमात्मा के समवसरण में पहुँच गया हुँ और प्रदक्षिणा कर रहा हुँ" यह भावना धारण करें । जैसे समवसरण में मूल परमात्मा एक दिशा में होते है और अन्य तीन दिशा में उनकी प्रतिमा होती है वैसे यहाँ भी

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

मूलनायक एक दिशा में और अन्य तीन दिशा में मंगलमूर्ति होती है । अत: प्रदक्षिणा में जिस स्थान पर परमात्मा का दर्शन हो वहाँ "नमो जिणाणं" बोले ।

(५) तत्पश्चात परमात्मा की दायी तरफ पुरुष और बायी तरफ स्त्री खडे रहकर दर्शन करें ।

प्रभु स्तुतिगान करने से अतिशय पुण्य का बंध होता है । पंचाशक ग्रंथ में कहा गया है कि मुमकीन हो तो प्रतिदिन १०८ स्तुति बोले । स्तुति बोलते समय अन्य आत्माओं को दुविधा ना हो इसका ध्यान रखे । भक्ति में अन्य आत्माओं को कोई अंतराय ना हो इसका खास ध्यान रखे । यह भी परम लाभदायी है । परमात्मा की आँखो को एक नजर से देखते रहने पर "त्राटक" होता है ।

(६) स्वद्रव्य से पूजा करने का आनंद विशिष्ट होता है अत: धूप स्वगृह से लाने पर विशेष लाभ होता है या धूपदानी से धूप करें । (प्रगट रहे उस प्रकार)

(७) धूप और दीपकपूजा गम्भारे के बाहर रहकर करें । परमात्मा के बिलकुल समीप या नासिका के पास धूपदानी ले जाना अविधि है ।

(८) धूप-दीपक करते समय नासिका से उपर और नाभि से नीचे ना हो इस प्रकार धूप-दीपक करें ।

(९) धूप प्रगट हो कर सुवास प्रदान करती है, आसमान में ऊँची दिशा में जाती है, उसी प्रकार मैं भी मोक्ष की ओर उर्ध्वगमन करुँ । एसी भावना भावे ।

(१०) केवलज्ञान का दीपक मेरे भीतर प्रगट हो, यह भावना धारण करें ।

धूप-दीपक पूजा करने के पश्चात धूप परमात्मा की बायी तरफ और दीपक परमात्मा की दायी तरफ स्थापित करें ।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 21

B. बहनों को सूचन

जिनालय में दर्शन-पूजन हेतु जानेवाले बहनें अत्यंत मर्यादापूर्ण भारतीय संस्कृति के अनुरुप वस्त्र ही धारण करें । जिससे किसी भी आत्मा के विकार भाव में निमित्त बनने से बचा जा सकता है । पाप खराब है वैसे पाप का निमित्त बनना भी गलत ही है । जिनालय में अंगोपांग दृश्यमान हो वैसे पारदर्शी या चुस्त वस्त्र पहनकर जाना भी तारक तीर्थंकर की घोर आशातना है । दर्शन-पूजन करते वक्त सर खुला ना रह जाये, इस बात का ध्यान रखें ।

C. स्वस्तिक की समझ

मोक्ष में जाने हेतु एक ही गति है और वह है मनुष्यगति । देवगति उत्तम तो है किन्तु मोक्षप्रदायक नहीं है । तिर्यंच जन्म से टेढे है किन्तु सीधा जीते है (मनुष्य जन्म से सीधे किन्तु टेढा जीते है) और जो नीचे ले जाये वह है नरकगति । स्वस्तिक अर्थात् चार गतिरुप संसार में मैं परिभ्रमण कर रहा हुँ । तीन ढगली अर्थात् दर्शन, ज्ञान, चारित्र की आराधना से मुझे मोक्ष ही प्राप्त हो।

D. स्वस्तिक की महत्ता

(१) जर्मनी के हिटलर की नाझी सेना के झंडे पर उल्टे-तिरछे स्वस्तिक का निशान था । ईसाईओं का क्रोस भी स्वस्तिक से ही बना है ।

(२) "जीसस लीव्ड इन इन्डिया" पुस्तक में लिखा है कि जीसस भारत में आ कर जैन साधु को मिले थे ।

अक्षत पूजा में मुट्ठी में अक्षत ग्रहण करके प्रथम स्वस्तिक, फिर पुन: तीन ढगली करें और ढगलीयों के मध्य छेद ना करें । सिद्धशीला करते समय अर्धचंद्राकार बनाकर उपर सीधी लाईन बनाये । चंद्रमा का आकार बनाना गलत है । स्वस्तिक के उपर नैवेद्य में संपूर्ण थाल (रोटी-दाल-चावल-सब्जी यह तमाम) रखें और साथ में प्याला भरकर पानी भी रखे । जो चीज प्रभु को नहीं चढा सकते वह श्रावक के मुख में भी नहीं जा सकती । इस प्रकार के नियम से अनेक पापों से बचा जा सकता है । जैसे कि, ब्रेड, पाउं, जमीनकन्द,

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

केडबरी, पेप्सी, आईस्क्रीम आदि अनेक अभक्ष्य गृह में नहीं आयेंगे। स्वस्तिक पर नैवेद्य रखे। तीन ढगली के उपर पैसे रखने की आवश्यकता नहीं है। पैसा पूजा नहीं है। द्रव्यअर्पण की विधि है अत: पैसे भंडार में ही डाले। सिद्धशीला की उपर की लाईन पर फल रखे। तीसरी निसीहि बोलकर चामर से नृत्य पूजा करें। नृत्य पूजा करते वक्त ही रावण ने तीर्थंकर नामकर्म बाँधा था। जो प्रभु के सन्मुख नृत्य करता है उसे दुनिया में अन्य किसी भी स्थान पर नृत्य करने की आवश्यकता नहीं रहती। दर्पण में प्रभु के प्रतिबिंब को पंखा डाले। "मेरे हृदय में परमात्मा बिराजमान हो जाये" यह भावना धारण करें। चैत्यवंदन करें। चैत्यवंदन करते समय अन्य कोई आत्मा स्वस्तिक किया हुआ बाजोठ ले जाये या स्वस्तिक मिटा दे तो कोई समस्या नहीं है। मूलनायक की माला गिने, दर्शन-पूजन का आनंद अभिव्यक्त करने हेतु घंट बजाये। आज का विज्ञान भी कहता है कि घंटनाद से श्रोतेन्द्रिय की अनेक बिमारीयाँ नष्ट हो जाती है। परमात्मा को पूंठ ना दिखे इस प्रकार बाहर निकले। बाहर बैठकर बारह नवकार गिने। आज्ञाचक्र में परमात्मा को उपस्थित करने की कोशिश करें। पुन: "हे परमात्मा ! जल्द ही आपके दर्शन हेतु आऊँगा" यह भावना धारण करके अपने स्थान पर जाये।

E. प्रासंगिक

(१) जो नवकार गिनता है उसे भव नहीं गिनने पडते।

(२) योगी के पास आ कर योगी ना बन सको तो उपयोगी अवश्य बनो। संत के पास आ कर संत ना बन सको तो शांत अवश्य बनो।

(३) आग से भरपूर अंगारा जब नदी में डूबता है तब शांत हो जाता है, चाहे कैसे भी टेन्शन, समस्या हो प्रभु की शरण में आने से शांत हो जाओगे।

(४) भक्त शासन के बनाओ, देव-गुरु के बनाओ; नैया पार हो जायेगी (स्वयं के भक्त बनाना छोड दो)। छोटी-छोटी बातों में शासन को छिन्न-भिन्न मत करो। तीर्थो पर, शासन पर आक्रमण बढ रहे है। जोश जगाकर शासनरक्षा-तीर्थरक्षा का प्रण करो।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 22

7. जिनालय में पूजा विधि का महत्व क्या है ?

उपसर्गो का नाश करे, विध्न की बेलाओं का नाश करे, मन की प्रसन्नता प्रदान करे यह तीनों कार्य जिससे होते है वह है प्रभुपूजा। जिसका दर्शन मन को आनंद प्रदान करे उसका स्पर्श विशिष्ट आनंद प्रदान करता है। प्रभु के दर्शन से मन खुश होता है तो प्रभु के स्पर्श से तो भक्तमन झुम उठता है। दर्शन वह है जो नयन के विकारो को मिटा दे और स्मरण वह है जो मन के विकारो को मिटा दे।

A. त्रिकाल पूजा

प्रात: काल शुद्ध सामायिक के वस्त्र में अद्धर हाथों से वासक्षेप पूजा - १ रात्रि के पाप का नाश। मध्याह्न काल में नये और प्रतिदिन धोये गये पूजा के वस्त्र से अष्टप्रकारी पूजा - १ भव के पाप का नाश। सायंकाल सूर्यास्त के पूर्व आरती-मंगलदीपक पूजा - ७ भव के पापों का नाश (श्राद्धविधि)

तीन प्रकार की पूजा :-अंगपूजा - अभ्युदय करती है। अग्रपूजा - विध्नहरण करती है। भावपूजा - मोक्ष प्रदान करती है।

प्रश्न :-पूजा हेतु स्नान करने पर हिंसा होती है या नहीं ?

उत्तर :-नहीं ! हिंसा के प्रकार का अवलोकन करते है। हिंसा तीन प्रकार से होती है।

अनुबंध हिंसा :-जिसके बिना आराम से जी सकते है, जैसेकि टी.वी., फ्रीज, कूलर, बाथ, वोटरपार्क के बिना हजारों वर्ष तक रह सके है, क्रिकेट मेच के बिना भी जी सकते है, रावणवध, होलीदहन देखे बिना भी जी सकते है, नाटक-सर्कस देखे बिना जी सकते है। इस प्रकार के अनर्थदंड जैसे पाप और हिंसा को अनुबंधहिंसा कहते है। उसका त्याग करना जरुरी है।

हेतु हिंसा :-भोजन के बिना रह पाना संभव नहीं है, पीने हेतु पानी जरुरी है, रसोई बनाने हेतु अग्नि की हिंसा करनी ही पडती है। जीने हेतु आवश्यक हिंसा को हेतुहिंसा कहते है। इस हिंसा में हृदय में दु:ख होता है कि "मैं मोक्ष तक नहीं पहुँच पाया तभी मुझे भोजन-जल ग्रहण करना पड रहा है।" यह विचार होने पर पापबंध अल्प होता है।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

स्वरुप हिंसा :-पूजा हेतु स्नान करते है, व्याख्यान हेतु आवागमन करना, गुरुवंदन हेतु जाना; इन तमाम कार्यो को देखने पर हिंसा तो है किन्तु हिंसा के भाव ना होने से पाप नहीं लगता ।

पू. अभयदेव सू. म. कुए का उदाहरण देते हुए कहते है कि प्यासा इन्सान पानी पीने हेतु कुआ खोदता तो प्यास बढने के बावजुद तमाम आत्माओं को पानी प्राप्त होता है । वैसे पानी से स्नान करते समय हिंसा होने के बावजुद भाव से अहिंसा है ।

साधु भगवंत पूजा क्यों नहीं करते ? जिसे द्रव्य (धन) का रोग हो वह द्रव्य पूजा करते है, साधु भाव पूजा करते है ।

B. पूजा हेतु स्नान विधि

रात्रि स्नान को रक्त स्नान कहा गया है । अत: रात्रि को कभी स्नान ना करें । सूर्योदय के पश्चात ही स्नान करके पूजा करने हेतु जाये । सूर्योदय के पूर्व पूजा करना अविधि, अजयणा है ।

पूर्व दिशा की तरफ मुख रखकर कम से कम पानी से स्नान करें । स्नान किया गया पानी ४८ मिनिट में सुख जाये ऐसी व्यवस्था करें ।

चरबीयुक्त साबुन के उपयोग से शुद्धि कैसे होगी ? मात्र अल्प जल से ही स्नान करें ।

उत्तरदिशा तरफ मुख रखकर पूजा के वस्त्र पहने । गर्म-ठंडा पानी मिश्रित ना करें । गीझर में अनछाना पानी गर्म होता है, उसका उपयोग करना अनुचित है ।

C. वस्त्र शुद्धि

सुखी-संपन्न आत्मा कुमारपाल राजा की भाँति प्रतिदिन नये वस्त्रो से ही पूजा करे या पूजा करने के पश्चात प्रतिदिन पानी में वस्त्र भीगोकर रखे ताकि पसीना निकल जाये । पुरुष दो वस्त्र (धोती और खेस) और स्त्री तीन वस्त्र रखे । वस्त्र फटे हुए या छोर से सीले हुए नहीं होने चाहिये ।

पूजा हेतु शुद्ध रेशमी वस्त्रो का विधान है क्योंकि रेशमी वस्त्र अशुद्ध परमाणुओं को ग्रहण नहीं करते ।

धोती पहनते वक्त ध्यान रखे कि नाभि खुली रहनी चाहिये किन्तु खेस इस प्रकार पहने कि पेट खुला ना दिखे ।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 23

रुमाल रखना अविधि है । खेस से आठ पड का मुखकोष बनाकर पहने ।

संभव हो तो घर के तमाम सदस्य एकसाथ पूजा करने जाये, सामुहिक पुण्य का बंध होता है । साथ ही यह दृश्य देखनेवाले भी अनुमोदना करते हुए धर्म प्राप्त कर सकता है ।

प्रात: काल में ही बाग में पुष्प के पौधे को पीडा ना हो इस प्रकार एक कपडा हल्के हाथों से डाल पर बाँध दे । जो पुष्प स्वयं उस कपडे में गिरे उन्हें ही ग्रहण करें । सड चूके, कीडे-मकोडे से युक्त पुष्प ग्रहण ना करें । संपूर्ण खीले हुए सुगंधी पुष्प ही ग्रहण करें ।

यदि पुष्प तोडने की ही आवश्यकता हो तो अत्यंत सावधानी से, कोमलता से ही पुष्प ग्रहण करें ।

पुष्प धोने की आवश्यकता नहीं है, मात्र हल्का सा साफ करके, धूप करना पर्याप्त है ।

पुष्प ग्रहण करके माला बना सकते है किन्तु पुष्प के आरपार सुई या अन्य तीक्ष्ण वस्तु का उपयोग नहीं करना है बल्कि धागे से हल्के हाथों से गिठान बनाकर माला बनानी है । मुमकीन हो तो जिनालय के पानी की एक बुँद तक का उपयोग ना करना पडे इस प्रकार स्वगृह में ही शुद्ध कुए के पानी से पत्थर पर केसर बनाकर ले जाये ।

पूजा करके तुरंत वस्त्र परिवर्तन कर ले । पसीना आदि होने के कारण पूजा के वस्त्र बदलकर सामायिक करें ।

D. पौषध और द्रव्यपूजा

सामायिक और पौषध में आराधना कर रहे श्रावक-श्राविका ज्ञान और गुरु की वासक्षेपादि से पूजा नहीं कर सकते क्योंकि यह द्रव्यपूजा है और विरति में द्रव्यपूजा का त्याग होता है ।

- सेन प्रश्न

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

गृह में एम.सी. (अंतराय) का चुस्त पालन होना जरुरी है ।

प्रश्न :-संघट्ट-छूत होती है तो दर्शन-पूजा कितने दिन तक बंद रखे ?

उत्तर :-यदि इस कारण से दर्शन-पूजा बंद कर सकते तो विशाल परिवारवालों को दर्शन-पूजा सर्वथा बंद हो जाती जो बिलकुल योग्य नहीं है । अतः पानी की छांट लेने के पश्चात दर्शन हो सकते है और स्नान से शुद्ध होने के पश्चात पूजा हो सकती है । पूजा के वस्त्रों की पोटली बनाकर अद्धर रखे ताकि छोटे बच्चों के द्वारा छूत-संघट्ट नहीं होगा । पूजा के वस्त्र पहनने के पश्चात छूत-संघट्ट ना हो इसका ख्याल रखे ।

E. उपकरण शुद्धि

उत्कृष्ट, उत्तम उपकरण का उपयोग करें । शक्ति हो तो हीरे से सुशोभित, स्वर्ण के उपकरण या चांदी के उपकरण या पित्तल के उपकरण का उपयोग करें । आज के काल में जिनालय में जर्मन सिल्वर का प्रचार बढ गया है जिसमें निकल नामक अशुद्ध तत्त्व मिश्रित होता है, उसका उपयोग ना करें । पूजा की डिब्बी भी प्लास्टिक, एल्युमिनियम, स्टील की नहीं बल्कि चांदी या पित्तल आदि धातु की ही उपयोग करें । आभूषण पहनकर इन्द्र जैसा बनकर पूजा करने जाये । कभी उत्तम भाव प्रगट होने पर वही आभूषण पानी में साफ करके तुरंत परमात्मा को अर्पण कर सकते है ।

F. पूजा हेतु गृह से प्रयाण की विधि

(१) अपने वैभव अनुसार ऋद्धि समृद्धि के साथ परमात्मा की पूजा करने जाये ।

(२) यदि साथ में दान किया गया तो धर्म की प्रशंसा होगी । पूजा के जूते हो ही नहीं सकते, खुले पैर ही पूजा करने जाये ।(घर में भी चप्पल पहनकर घुमते रहने की फैशन शुरु हो गई है । चप्पल पहनकर गोचरी वोहराने तक की अविधि और घोर आशातना शुरु हो चुकी है । इस अविधि को ना रोका गया तो यह कहाँ तक पहुँच सकती है इसका

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 24

कोई अंदाजा नहीं लगा सकता) पैर धोने हेतु अल्प पानी ग्रहण करें (अनछाना नहीं) । पैर धोने के पश्चात पानी धूल में ४८ मिनिट के भीतर सुख जाये वह व्यवस्था करें ।

(३) केसर रुम में प्रवेश करके मुखकोश बाँधकर केसर बनाये । मुखकोश नाक और मुख दोनों बंध हो जाये इस प्रकार ही बाँधे, मात्र मुख को ही बाँधना आशातना का कार्य है ।

(४) तिलक हेतु अलग केसर रखे । पाँच अंग पर तिलक कर सकते है - ललाट, दो कान, कंठ, हृदय और नाभि ।

G. पूजा हेतु द्रव्य शुद्धि

(१) ठंड की ऋतु में केसर, कस्तुरी जैसे उष्ण पदार्थ ज्यादा और चंदन, अंबर जैसे पदार्थ कम मात्रा में ले । गर्मी की ऋतु में चंदन, अंबर, बरास आदि ज्यादा ले और केसर कम ले । चातुर्मास में दोनों समान मात्रा में ले ।

(२) सामग्री के साथ ही प्रदक्षिणा दे ।

(३) तमाम सामग्री को धूप से धूपित करे । फल-फूल को धोने की आवश्यकता नहीं है ।

(४) गम्भारा परमात्मा का अवग्रह है अतः मुखकोश बाँधकर निसीहि कहकर उसमें प्रवेश करें ।

(५) गम्भारे में स्तुति-स्तवन-स्तोत्र आदि ना गाये, गम्भारे के बाहर खडे रहकर ही स्तुति भक्ति करें ।

(६) अभिषेक पूजा का जैनशासन में अत्यधिक महत्त्व है । देवता प्रभु का जन्माभिषेक करने हेतु ही तत्पर हो कर दौड आते है ।

(७) अभिषेक जल आँख पर, मस्तिष्क पर उत्तमांग में ही लगाया जाता है । अभिषेक जल कोई मालिश का तेल नहीं है जो पैर आदि शरीर पर लगाया जाये ।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

8. जिनालय में अभिषेक पूजा का महत्व क्या है ?

१८ अभिषेक, लघुशांतिस्नात्र में २७ अभिषेक, अष्टोत्तरी में १०८ अभिषेक आदि में अभिषेक पूजा का ही महत्त्व है ।

(१) जरासंघ द्वारा फैंकी गई जराविद्या न्हवणजल से नष्ट हो गई ।

(२) श्रीपाल और सातसौ कुष्टरोगीयों का कुष्टरोग अभिषेक जल से ही दूर हुआ ।

(३) कुष्टरोग से पीडित अभयदेवसूरिजी पर अभिषेक जल का छिडकाव करने से स्वस्थ हुए और नवांगी टीकाकार बने ।

(४) पालनपुर के प्रहलाद राजा का दाहरोग भी दूर हुआ ।

परमात्मा का जन्माभिषेक करते वक्त ६४ इन्द्र असंख्य देवों के साथ आते है । इन्द्र स्वयं पाँच रुप धारण करते है । मागध-वरदाम-प्रभास तीर्थ, गंगा-सिंधु आदि नदीयों के पानी में क्षीर समुद्र का पानी मिलाकर भावविभोर बनकर अभिषेक करते है ।

८ जाति के कलश :-(१) रत्न (२) सुवर्ण (३) चांदी (४) रत्नसुवर्ण (५) रत्नचांदी (६) सुवर्णचांदी (७) रत्नसुवर्ण और चांदी (८) मिट्टी

प्रत्येक के ८-८ हजार कलश । कुल ६४००० कलश और प्रत्येक के २५० अभिषेक, इस तरह कुल १,६०,००,००० (एक करोड सांठ लाख) बार अभिषेक होते है ।

A. अभिषेक करते समय भावना

"मैं परमात्मा का जन्माभिषेक कर रहा हुँ । मेरे हृदयसिंहासन पर अनंत काल से रहनेवाले मोहराजा को पदभ्रष्ट करके परमात्मा का राज्याभिषेक कर रहा हुँ । प्रभो ! अभिषेक आपका हो रहा है, शुद्धि मेरी हो रही है ।"

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 25

B. अभिषेक विधि

गम्भारे में प्रवेश करने पर आधा अंग झुकाये, हाथ जमीन को स्पर्श नहीं करने चाहिये ।

मुखकोश बाँधकर निसीहि कहकर गम्भारे में प्रवेश करें । पंचामृत अभिषेक जल तैयार करें । (१) जल (२) गाय का दूध (३) दहीं (४) घी (५) शक्कर । गाय का दूध मिले तो उत्तम है । सभी आत्मा अपने गृह से थोडा सा दूध भी ले कर पधारे तो उत्तम लाभ प्राप्त हो सकता है ।

प्रथम मोरपिच्छि से प्रभु को पूंजकर पूर्व के पुष्प-निर्माल्य थाली में ग्रहण करें तत्पश्चात आंगी उतारकर भीगे वस्त्र से केसर साफ करें । दोनों हाथो से कलश पकडकर परमात्मा को कलश स्पर्श ना कर पाये इस तरह मौन रहकर मस्तिष्क से अभिषेक करें ।

C. अभिषेक पूजा में कुछ सावधानीयाँ

(१) अभिषेक जल पैरो में ना आये इसका ख्याल रखे ।

(२) छोटे प्रतिमाजी को अभिषेक अर्थ ग्रहण करते समय परमात्मा की आज्ञा ग्रहण करें । "अणुजाणह मे भयवं" "हे परमात्मा ! आप कृपा करके मुझे आज्ञा प्रदान करें । मैं पूजा हेतु आपको ग्रहण करने हेतु इच्छुक हुँ ।" तीन नवकार गिनकर बहुमान पूर्वक परमात्मा को ग्रहण करें । पंचधातु के प्रतिमाजी को एक हाथ से ना पकडे, दोनों हाथो में बहुमान से ग्रहण करें ।

(३) विशिष्ट आंगी बनाने की भावना हो तो पुनः अभिषेक कर सकते है ।

(४) अभिषेक में वाळाकुंची का मनचाहा उपयोग करना अनुचित है, आशातना है । कई बार परमात्मा के अंग भंग हो जाते है । (आवश्यकता होने पर पानी में रखने से वाळाकुंची नरम बन जायेगी, फिर उपयोग करें)

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

(५) कभी केसर रह जाये तो दांत से कचरा निकालते है उस प्रकार शांति से केसर निकाले ।

(६) अभिषेक जल आँख पर लगाकर उसी हाथ से पूजा करना योग्य नहीं है । या फिर तुरंत बाहर जा कर हाथ धो ले । (अभिषेक जल की कुंडी में हाथ धोने से दोष लगता है)

(७) अभिषेक जल का निकाल :-किसी का पैर ना आये उस स्थान पर परठवे । त्वरित सुख जाये, जीव विराधना ना हो इसका ध्यान रखे । कुंडी रखे या नदी में किसी एक स्थान पर परठवे ।

(८) मुद्रा :-कलश को दोनों हाथों में ले कर कलश को हल्का सा झुकाये । उसे समर्पण मुद्रा कहते है । प्रभो ! संसारवृक्ष के तीन मूल है । अग्नि, स्त्री और सचित्त जल । अग्नि और स्त्री का तो त्याग कर सकते है किन्तु सचित्तजल तो संसार के प्रतीक स्वरुप आपके चरणों में अर्पित करता हुँ । "क्यारे बनीश हुं साचो रे संत" यह अर्पण की प्रथम भावना है । प्रथम देव, पश्चात गुरु, तत्पश्चात देव-देवी; इस प्रकार अभिषेक करें । परिकर में स्थित तमाम प्रतिमा का अभिषेक परमात्मा के साथ ही कर सकते है । वह प्रभु के अंग स्वरुप ही स्वीकार्य है । (यक्ष-यक्षिणी की स्थापना है तो उनका अभिषेक अलग से करें)

D. अंगलूछन

(१) तीन अंगलूछन आवश्यक है । अंगलूछन हल्के हाथों से करें और थाली में ही रखे ।

(२) अंगलूछन प्रतिदिन साफ धोये ।

(३) अलग रस्सी, डोरी पर सूखाये ।

(४) यदि नीचे गिर जाते है तो नये अंगलूछन का ही उपयोग करें ।

(५) तमाम आत्मा वस्त्रपूजा के स्वरुप में अंगलूछन स्वगृह से ही ले कर

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 26

पधारें तो अतिउत्तम है ।

(६) प्रथम घनिष्ठ-मोटा, फिर पतला और अंत में बिलकुल पतला अंगलूछन करें । यदि पानी रह जाता है तो निगोद उत्पत्ति की संभावना है, जीवोत्पत्ति हो सकती है, प्रतिमाजी भी श्याम हो सकते है । अतः परमात्मा और परिकर को अति ध्यानपूर्वक स्वच्छ करें । आवश्यकता होने पर तांबे की सली का उपयोग करके भी प्रतिमाजी की पालठी स्वच्छ करें ।

(७) केसर और कपूर से मिश्रित सुवासित जल से त्रैलोक्यनाथ परमात्मा को स्नान करवाये । पश्चात केसर और चंदन को बरास से मिश्रित करके भावपूर्वक जिनबिंब की पूजा करें ।

– श्राद्धदिनकृत्य

E. चंदन पूजा

(१) चंदन से विलेपन पूजा करें ।

(२) यदि आंगी कर रहे है तो परमात्मा के अंग पर विलेपन कर सकते है । अन्यथा परमात्मा के चरणों पर विलेपन पूजा करें ।

(३) केसर से युक्त उत्तम चंदन के बिना पूजा नहीं हो सकती ।

– आचारोपदेश ग्रंथ

F. आंगी

(१) विलेपन के पश्चात आंगी करें ।

(२) सुवर्ण वरख की आंगी अनेक अंतराय को तोड देती है । (फालना, वरकाणा में प्रतिदिन एक श्रावक की तरफ से सुवर्ण वरख की आंगी होती है) आंगी में वरख का उपयोग कर सकते है क्योंकि सुवर्ण-चांदी अशुद्धि को ग्रहण नहीं करते ।

(३) एल्युमिनियम और शीशेवाले वरख परमात्मा से प्रगाढतापूर्वक लग जाते है अतः शुद्ध वरख उपयोग करने का ही आग्रह रखे ।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

(४) आंगी में उत्तम द्रव्यों का ही उपयोग करें । प्लास्टीक के नंग या रुई का उपयोग ना करें ।

G. चंदन पूजा हेतु सावधानी

(१) कटोरी में ऊँगली रखते वक्त नाखून केसर में ना जाये इस बात का ध्यान रखे ।

(२) नाखून में रहा केसर सूखने पर, भोजन करते वक्त यदि वह केसर पेट में जाता है तो देवद्रव्य भक्षण का भारी दोष लगता है ।

(३) पूजा करते समय खुजली का प्रकोप हो तो शरीर खुजलाने पर नियंत्रण रखे । शरीर को हाथ लगाने पर हाथ धोना जरुरी है ।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 27

9. जिनालयमें आशातना निवारण का क्या उपाय है ?

(१) चडावे बोलकर तुरंत राशि जमा करके चडावे का लाभ ग्रहण करें ।

(२) यह मुमकीन ना हो तो घर पहुँचते ही सर्वप्रथम देवद्रव्य की राशि जमा करके ही मुख में पानी रखे ।

(३) देवद्रव्य की राशि पेढी या बैंक में रखने की या ब्याज पर देने की कोई आवश्यकता नहीं है ।

(४) यह राशि जीर्णोद्धार में तुरंत उपयोग कर ले । जिनालय में आबु-देलवाडा की तरह नक्काशी करवा सकते है ।

(५) निर्माल्य द्रव्य (बादाम आदि) पुनः ना चढाये ।

(६) गम्भारे में प्रवेश करते समय प्रथम दाया पैर रखे ।

(७) बाया स्वर कार्यरत हो तब पूजा करें ।

(८) प्रभु की पूजा नौ अंग पर ही करें ।

(९) चरण अंगूठे पर पूजा करने से १००० उपवास का लाभ प्राप्त होता है ।

(१०) पूजा अनामिका से ही क्यों ?

जवाबः-अन्य तमाम ऊँगली का नाम है किन्तु पूजा की ऊँगली का नाम ही नहीं है, अतः अनामिका ।

अन्य तमाम ऊँगली विभिन्न कार्य हेतु निर्धारीत है, जबकि अनामिका ऊँगली का कार्य पूजा करना है ।

(११) बार-बार, लगातार एक ही अंगूठे पर पूजा करने का कोई विधान नहीं है ।

(१२) जिस अंग पर पूजा का विधान है, वहाँ प्रभू पूजा करें ।

(१३) मस्तिष्क, कंठ, हृदय, नाभि के बदले छाती-पेट पर टीका हो तो मूल स्थान पर ही पूजा करें ।

(१४) चरण अंगूठे से पूजा क्यों ?

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

अनेक रहस्य है। विनय हेतु चरणस्पर्श किया जाता है। कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचंद्र सू. म.सा. कहते है कि "रात को सोते वक्त बायी नासिका से सांस ग्रहण करके दाये अंगूठे पर दृष्टि केन्द्रित करने से अनेक दोष (स्वप्नदोष आदि) नष्ट होते है।"

(१५) नौ अंग के अलावा हाथ पर या लांछन पर पूजा नहीं कर सकते।

(१६) यदि केसर बह रहा हो तो प्रथम कपडे से केसर साफ करें, तत्पश्चात पूजा करें।

(१७) सर्वप्रथम मुमकीन हो तो मूलनायक प्रभु की ही पूजा करें। पश्चात आरस के प्रतिमाजी और तत्पश्चात पंचधातु के परमात्मा, सिद्धचक्र भगवान, की पूजा करें। लंछन-परिकर में स्थित हाथी-घोडे-बाघ आदि की पूजा नहीं होती। प्रभु के हाथ पर पूजा नहीं होती।

(१८) नवांगी पूजा का महत्त्व (विधान) है, अतः फणा की पूजा जरुरी नहीं है। फिर भी यदि फणा की पूजा करनी ही हो तो अनामिका से ही करें क्योंकि फणा प्रभु का अंग है।

(१९) अष्टमंगल की पाटली अक्षतपूजा स्वरुप है। प्रभु के सन्मुख रख सकते है, जैसे-तैसे नहीं बल्कि सीधी मुद्रा में ही रखे। केसर में ऊँगलीयाँ रखकर आलेखन कर सकते है।

(२०) पूजारी को नौकर नहीं अपितु प्रभु के भक्त स्वरुप समझे।

(२१) परमात्मा की गोद में मस्तिष्क रखना, पैर दबाना यह सब कार्य ना करें।

(२२) देव-देवी की नवांगी पूजा नहीं होती, खमासमण भी नहीं दे सकते। दाहिने अंगूठे से सबहुमान तिलक करें। परमात्मा से ज्यादा देव-देवी की महिमा-पूजा करना योग्य नहीं है।

(२३) परमात्मा की मूर्ति में बसे परमात्मा और परमात्मा के अपार गुणों का दर्शन करने की कोशिश करें।

(२४) प्रभु दर्शन और पूजन भवरोग को नष्ट करके मोक्षसुख प्रदान करते है। अतः "प्रभो ! मुझे मोक्ष प्रदान करें" यह सुंदर भावना धारण करें। "प्रभो ! मैं पापी हुँ, मेरा उद्धार करो" यह विनम्र भावना धारण करें।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 28

A. पूजा में कुछ सावधानीयाँ

(१) अन्य प्रतिमाजी को पूजा करने के पश्चात उसी केसर से मूलनायक परमात्मा की पूजा हो सकती है। किन्तु विवेक का पालन करते हुए मूलनायक की पूजा सर्वप्रथम करें। सिद्धचक्र की पूजा करने के पश्चात प्रभुपूजा हो सकती है क्योंकि वहाँ गुण पूजा है।

(२) केसर आवश्यकतानुसार ही ग्रहण करें। थाली-कटोरी पूजा के उपकरण है। पूजा के पश्चात कहीं भी ना रख दे।

(३) थाली-कटोरी का पानी भी किसी के पैरो में ना आये इस प्रकार विसर्जन करें।

B. पुष्प पूजा में सावधानीयाँ

(१) पुष्प परमात्मा को सूंघाकर चढाने की कोई विधि नहीं है।

(२) बाहर शुद्ध पुष्प अप्राप्य हो तो सामुहिक या अनुकूल व्यवस्था का आयोजन करें। पुष्पपूजा का लाभ महान है। नागकेतु-कुमारपाल-पेथड-धनसार-छेडासेठ आदि पुष्पपूजा के उदाहरण है। पुष्प की एक पंखुडी का फल ६४ इन्द्र मिलकर भी नहीं दे सकते।

(३) खीले हुए सुगंधी पुष्प ही चढाये। नीचे गिरे हुए पुष्प ना चढाये। (नीचे गिरे हुए पुष्प चढाने से चंडाल का भव प्राप्त होता है) फूल ना मिले तो लविंगादि नहीं बल्कि चांदी के फूल या कुसुमांजलि चढा सकते है।

(४) स्नात्र में कुसुमांजलि का अर्थ :-अंजलि-हाथ भरकर पुष्प अर्थात् कुसुम की अंजलि, वह ना मिले तो अक्षत में केसर मिलाकर चढा सकते है।

(५) अंगपूजा होने के पश्चात धूप-दीपक प्रगटाये। गम्भारे में धूप-दीप ना ले जाये।

(६) धूप-दीपक-अक्षत-नैवेद्य-फल पूजा, आरती-मंगलदीवा, निसीहि बोलकर चैत्यवंदन करें। १०० वर्ष प्राचीन भाववाही स्तवन बोले।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

बिभत्स फिल्मी राग में स्तवन गाना उचित नहीं है। अतः आशावरी, भीमपलास, टोडी, यमन-कल्याण, मालकौंस, केदार, भैरव, बहार, मेघ, मल्हार आदि भक्तिराग में स्तवन गान करें। भक्तिगीत, चैत्यवंदन के पश्चात प्रार्थना स्वरुप बोल सकते है कि "हे प्रभो ! आप ही मेरा आधार है।" रोगादि की कल्पना करके "हे प्रभो ! समाधि प्रदान करके मेरे भावप्राणों की रक्षा करें" यह प्रार्थना कर सकते है। प्रभु के नयन में या तिलक में एकाग्र बनकर "त्राटक योग" और प्रभुमय बनकर "लययोग" करें। चामर-दर्पणपूजा करके घंटनाद करते हुए प्रभु को पूंठ ना दिखे इस तरह बाहर निकले।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 29

10. जिनालय भविष्य में कैसे पहचाना जाए ?

इस धरती पर अनचाहा कुछ भी हो सकता है। जहाँ जल वहाँ स्थल और जहाँ स्थल वहाँ जल यह कहावत गलत नहीं है। किसी काल में मानवसमुदाय से भरे प्रदेश कभी बिलकुल वेरान और खाली बन जाते है, मानव वहाँ से हिजरत कर लेते है। तो कभी वेरान प्रदेश भी धीरे-धीरे इस तरह विकसित होने लगते है कि वहाँ मानवसंख्या की बहाड सी आ जाती है।

अति चिरकाल की बातें तो नहीं सोच सकते किन्तु पाँच-सात शताब्दियों की बात करें तो गुजरात के सर्वसमृद्ध प्रदेश जैसे कि पूर्वराजधानी अणहिलपुर पाटण, खंभात और भरुच जैसे नगर आज समृद्धि की दृष्टि से सामान्य है। इतिहास प्रसिद्ध कुछ नगरों का तो आज के काल में अस्तित्व भी देखने-सुनने नहीं मिलता। जैसेकि आबु पर्वत की तलहटी में चंद्रावती नगरी आदि।

१००-१५० वर्ष के पूर्व जो नगर अतिसमृद्ध थे और जैनीयों की जहाँ भरपूर संख्या थी, वहाँ आज जैनों का घर ढुँढने पर भी नहीं मिलता। यह हाल अनेक स्थानों पर है।

यहाँ सोचनेवाली बात यह है कि...

जैन मंदिर ज्यादातर पत्थर से निर्मित होते है। वर्तमान में रेतपत्थर के कुछ जीर्ण मंदिरो के बदले मार्बल के ५००-१००० वर्ष तक मजबूत रहे इस तरह के मंदिरो का निर्माण हो रहा है।

यहाँ सोचनेवाली बात यह है कि मंदिर शायद ५००-१००० वर्ष तक रह जाये किन्तु जैनीयों की संख्या भी वही रहेगी, मंदिर की सुरक्षा बनी रहेगी और प्रतिमाजी भी सुरक्षित रहेंगे; इस बात की कोई सुनिश्चितता है ?

दो-पाँच सदि में तो अनेक आसमानी-सुलतानी हो जाती है। कोई प्रदेश वैरान बने, वहाँ चोरी, लूँट हो, वहाँ के मंदिर टूट जाये, मूर्ति खंडित हो या स्थान बदलना पडे यह तमाम संभावना है।

भूतकाल में भी यह हो चुका है कि परमात्मा का उत्थापन करके,

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

संरक्षण करके बचाया गया हो और मंदिर उसी स्थान पर वैसे का वैसा रह गया हो ।

भविष्य में वीरान बननेवाले मंदिर कौन से धर्म या संप्रदाय के है यह जानना अति कठिन हो जाता है । क्योंकि मंदिर स्थापत्य शैली को धर्म या संप्रदाय के साथ कोई खास संबंध नहीं है । मंदिर जैनों का हो, स्वामिनारायण का हो या शंकर-विष्णु-ब्रह्मा आदि हिंदु देवों का हो; उनकी स्थापत्यशैली प्राय: एक समान आकार की हो सकती है ।

फिर भी मंदिर निर्माण करते समय कुछ विषयों का ध्यान रखा जाये तो उसके द्वारा भविष्य में यह मंदिर जैनों का है, यह सिद्ध हो सकता है ।

निम्न कारणों से यह मंदिर जैनीयों का है यह जानना मुमकीन होगा

(१) शिलान्यास के वक्त शिला के नीचे तांबे का पत्र स्थापित कर सकते है । जिसमें संघ का नाम, संवत, स्थान, गुरु भगवंत का नाम, लाभार्थी का नाम इत्यादि का उल्लेख हो । भविष्य में कभी भी मंदिर उत्थापन के वक्त उस लेख के आधार पर धर्म या संप्रदाय की मालिकी का ज्ञान हो सकता है ।

(२) प्रतिष्ठा की प्रशस्तिदर्शन ताम्रपत्र बनवाये । जिसमें प्रतिष्ठासंवत, आचार्य, प्रतिष्ठापक, स्थान, संघ आदि का विस्तृत उल्लेख हो । प्रतिष्ठा के वक्त पाईप हो वहाँ पत्र को गोल बनाकर पाईप के जरीये नीचे उतारा जा सकता है । या परमात्मा की गादी के नीचे वह पत्र रखा जा सकता है । जिसके कारण भविष्य में वह इतिहास साक्षीरुप बन सकता है ।

(३) वर्तमान काल में मंदिरो में प्रतिष्ठा की तख्ती लगाने का व्यवहार तो है ही किन्तु यह तख्ती करीब १ इंच के आरस या ग्रेनाईट के पत्थर पर ही होती है । वह भले ही यथावत् रहे किन्तु मंदिर के स्तंभ या पाट जैसे बडे पत्थर के स्थानों पर भगवान का नाम, जिनालय प्रतिष्ठा संवत, प्रतिष्ठाकारक आचार्य की परंपरा आदि महत्त्वपूर्ण बातें लिखवा सकते है ।

उदयपुर के पास हद विस्तार में एक टेकरी पर वीरान मंदिर है । उसमें कोई मूर्ति नहीं है और कौन से धर्म-संप्रदाय का मंदिर है, ऐसी कोई विशेष

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 30

उल्लेखनीय बातें नहीं है । एकमात्र उसके स्तंभ पर प्राय: १५वीं सदी का लेख है और उसी लेख के आधार पर वह मंदिर श्री पार्श्वनाथ परमात्मा का जिनालय है यह साबित हो रहा है ।

मंदिर में आभूषणादिक हेतु ज्यादातर भूतल या घने रुम जैसी व्यवस्था की जाती है । इन स्थानों पर मूलनायक परमात्मा का नाम, प्रतिष्ठासंवत आदि महत्त्वपूर्ण बातों की तकती लगाई जाती है । भविष्य में उत्थापन के समय यह तख्ती मिलने पर जैनीयों का मालिकी अधिकार सिद्ध हो सकता है ।

मंदिर की द्वारशाखा के ललाटबिंब से वह मंदिर कौन से धर्म-संप्रदाय का है यह जान सकते है । किन्तु उसका परिमाण लघु होने से और हल्का सा घिस जाने पर भी वह मूर्ति जिनेश्वर की है या गणेशादि अन्य देव की है, यह जान पाना मुश्किल हो जाता है । मस्जिद स्वरुप बन चुके अनेक जिनमंदिरो में यह घटना पाई गई है । अत: द्वारशाखा के ललाटबिंब स्वरुप ७ या ९ इंच की खुदी हुई प्रतिमा स्थापित करना उचित है । आबु-देलवाडा के खरतरवसही जिनालय की शाख इसी तरह बनाई गई है ।

मंदिर के परिसर में जो दिक्पाल आदि मूर्ति का स्थापन किया जाता है वह ज्यादातर अजैन स्वरुप में ही होता है । जैन मंदिरो में दिक्पाल जैन स्वरुप के ही बनाये और उनके नीचे जैन इन्द्रदेव, जैन अग्निदेव आदि स्वरुप का यथायोग्य नाम का उल्लेख करना उचित है ।

उसी प्रकार गर्भगृह की द्वारशाखा में होनेवाले प्रतिहार भी जैन स्वरूप के हो इस बात का ध्यान रखे ।

जिनमंदिर के शिल्पकार्य करते समय घुम्मट या परिसर में शिल्पी सामान्य रुप से देवांगना या अप्सरा की ही मूर्ति रखते है । उन स्थान पर १६ विद्यादेवी आदि जैन देव-देवी के शिल्प रखना उचित है और उन तमाम मूर्ति के नीचे उनका नामोल्लेख करना बेहतर है । अनेक प्राचीन मंदिरो में यही प्रथा पाई जाती है ।

जैन समकिति देव-देवी की स्वतंत्र स्थापना हो, क्षेत्रपाल का स्वतंत्र

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

मंदिर हो या मूर्ति स्थापना की हो तो उनके लेख में यह मूर्ति जैन धर्म से संलग्न है यह उल्लेख अवश्य करें। अन्यथा भविष्य में वह स्थान अन्य धर्म में सम्मिलित हो जाने में कोई देर नहीं लगेगी।

जैनीयों के कुछ निर्धारीत चिह्न जैसेकि, १४ स्वप्न, अष्टमंगल, अष्टप्रातिहार्य, २४ परमात्मा के लंछन, नवपदमय सिद्धचक्र आदि अन्य धर्मो से जैन धर्म की विभिन्नता और विशेषता बताते है। जैन धर्म के यह निश्चित शिल्प मंदिर में पाट, स्तंभ या परिसरादि में डीझाईन के स्वरुप में अवश्य बनवाये और संभव हो तो वहाँ उन स्वरुप का नामोल्लेख भी करवाये जिसके कारण जैन मंदिर की स्वतंत्र पहचान बनी रहे।

मंदिर में स्थापित किये जानेवाले शिल्पो में जैन धर्म के शासनप्रभावक सूरिभगवंत, श्रमण-श्रमणी, श्रावक-श्राविका आदि के शिल्प भी रखवाये और उनका नामोल्लेख भी करवाये।

प्राचीन मंदिरो में जैन मंदिर की पहचान के स्वरुप पद्मशिला अवश्य बनाई जाती थी। रंगमंडप के उपर घुम्मट में जो झुमर, चाबी जैसा द्रष्टिगोचर होता है उसे पद्मशिला कहते है।

इस तरह अनेक विशिष्ट स्वरुप जैनमंदिरो में नियतरुप से करवा सकते है।

कोई विशिष्ट तीर्थस्वरुप मंदिर हो वहाँ मूलनायक परमात्मा के नियम प्रासाद की रचना करवानी चाहिये। उस मंदिर के शिखर पर बनाये गये अंडक से भी वह प्रासाद जैन धर्म का है यह ज्ञात होता है और वह कौन से परमात्मा का है यह भी ज्ञात होता है।

इस तरह मंदिर निर्माण में और प्रतिष्ठा के लेख की बातों में उपरोक्त विषयों का व्यवस्थित ध्यान रखने पर भविष्य में किसी भी समय मंदिर वीरान बनने पर भी वह जैनीयों का मंदिर था यह सिद्ध हो सकता है।

लाखों-करोडों जिनबिंब, जिनमंदिर को हम कैसे बचायेंगे ? विचार कीजीए।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 31

11. जिनालय शुद्धिकरण के महत्त्व का अंग क्या है?

विधिविधान - अठारह अभिषेक और विलेपन

प्रभु के शासन में विधिविधान के विषय में अनेकविध पूजा-पूजन प्रचलित है। कुछ शांतिक विधान स्वरूप होते है तो कुछ पौष्टिक विधान स्वरूप होते है। श्री सिद्धचक्र महापूजन या श्री शांतिस्नात्र जैसे प्राचीन पूजन तो संघ में प्रचलित है ही, किन्तु पिछले कुछ वर्ष से अन्य अनेक प्रकार के नवनिर्मित पूजनों का प्रचलन शुरु हुआ। उन तमाम भक्ति अनुष्ठानो में शांतिक-पौष्टिक विधानो से भी अलग भक्ति का प्राचीन शास्त्रोक्त विधान हो तो वह है अठारह अभिषेक विधान। यह अंजनशलाका प्रतिष्ठा अंतर्गत महाप्रभाविक अधिवास के स्वरूप अनुष्ठान होने से उसकी प्राचीनता तो सर्वविदित है ही, साथ ही यह आशातना निवारण का प्रधान कारण भी है।

A. शांतिक विधान - १८ अभिषेक

राष्ट्र, देश, गाँव, संघ या व्यक्ति पर हो रही कुदरती आपत्तिओं में, बाह्य अनेक प्रकार के आक्रमण में, विपदाओं में; जिस अनुष्ठान के द्वारा आपत्ति-विपत्ति नष्ट हो सकती है, रक्षण प्राप्त हो सकता है, चिंता का नाश होता है, मन के विषाद उपशम होते है, सुख और शांति फैले और मोक्षमार्ग की आराधना निर्विघ्न बने उन विधानो को शांतिक विधान कहते है। उसमें सकल विघ्नोपनाशक परमतारक परमात्मा की भक्ति प्रधानरूप होती है और उस भक्तिजनित पुण्य से साधक के सर्व कार्य सिद्ध होते हैं।

१८ अभिषेक अर्थात् १८ बार अनेकविध औषधि आदि द्रव्य से परमात्मा का विशिष्ट स्नात्र-स्नान। स्नात्र प्रभु की अंगपूजा स्वरूप है और अंगपूजा को शास्त्रो में विघ्नोपशामिनी कहा गया है। १८ अभिषेक इस प्रकार सर्व विघ्नो की शांतिप्रदायक होने से शांतिक विधान स्वरुप है।

B. पौष्टिक विधान - १८ अभिषेक

राष्ट्र, देश, गाँव, संघ या व्यक्ति की तथाप्रकार उन्नति हो, आबादी हो, तुष्टि-पुष्टि-ऋद्धि-वृद्धि हो, सत्ता-संपत्ति-समृद्धि हो, संघ शासनादि के

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

कार्यों में सफलता प्राप्त हो, जय-विजय की प्राप्ति हो, यश-कीर्ति प्राप्त हो और मोक्षमार्ग की आराधना में सर्व प्रकार से सहायक होनेवाले निमित्त प्राप्त हो इत्यादि तमाम प्रकार के लाभ जिससे प्राप्त हो वह परमप्रकर्षपुण्यवान् सर्वगुणसंपन्न परमतारक परमात्मा को जो भक्ति अनुष्ठान हो वह पौष्टिक विधान स्वरूप है।

शास्त्रविधिशुद्ध १८ अभिषेक द्वारा जिनबिंब की उर्जा अधिकतर वृद्धि प्राप्त करने से वह उर्जा श्री संघ की उन्नति, आबादी में निमित्त बनती है। श्री संघ की शांति-तुष्टि-पुष्टि-शाता और समाधि का कारण बनती है। श्री संघ की भगवदोपदिष्ट मोक्षमार्ग की आराधना में सहायक बने इस हेतु से १८ अभिषेक पौष्टिक अनुष्ठान स्वरूप है।

C. विशिष्ट विधान - १८ अभिषेक

शांतिक-पौष्टिक अनुष्ठान होने के साथ-साथ १८ अभिषेक की विशिष्ट बात यह भी है कि जिनबिंब की आशातना निवारण और ऊर्जावृद्धि का स्वरुप भी है। जिस जिनप्रतिमा की सेवा-पूजा-पूजन-भक्ति आदि अनुष्ठान द्वारा शांतिक-पौष्टिक विधान सफल और प्रभावशाली बनते है उन्हीं जिनप्रतिमा की किसी प्रकार से हुई आशातना आदि के कारण जिनप्रतिमा का जो भी अल्प-ज्यादा प्रभाव कम हुआ हो, तो वहाँ १८ अभिषेक के अनुष्ठान द्वारा जिनबिंब की शुद्धि और प्रभावशुद्धि होती है।

पिछले कुछ काल से इस अनुष्ठान का प्रचार-प्रसार काफी बढ गया है। अनेक स्थानों पर सामुहिक स्वरूप से १८ अभिषेक के आयोजन हो रहे है। प्रति वर्ष कम से कम एक बार अनेक संघ में ध्वजा के दिवस या आसपास के दिनों में १८ अभिषेक का आयोजन प्रायः हो ही रहा है।

प्रभु की भक्ति स्वरुप महाप्रभाविक इस अनुष्ठान के शास्त्रोक्त प्रभावों का अनुभव करने हेतु, अनुष्ठान को विशिष्ट प्रभावशाली बनाने हेतु कुछ बातों का ध्यान रखना अनिवार्य है। जिनमें से एक विषय पर यहाँ विचार-विमर्श करेंगे।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 32

D. विलेपन

वर्तमान काल में १८ अभिषेक करते वक्त विलेपन की बात प्रायः स्मरण में नहीं रखी जाती। प्रायः समस्त विधिकारक तत् अभिषेक का चूर्ण पानी में ही मिश्रित करके उसका अभिषेक मात्र करवाते है। किन्तु १८ अभिषेक में से ९ अभिषेक वह है जिसमें उन अभिषेक द्रव्य का लेप तैयार करके उस लेप के द्वारा प्रभु को विलेपन किया जाता है एवं वह लेप कुछ समय तक परमात्मा पर रहे इस प्रकार व्यवस्था की जाती है। तत्पश्चात ही उसी द्रव्य से अभिषेक भी किया जाता है। इसी तरह कुछ औषधि आदि द्वारा विलेपन करना जरुरी है, यह बात उन अभिषेक के श्लोको में ही निर्दिष्ट होने के बावजुद वर्तमान काल में विलेपन तो मानो कि अभिषेक का भाग ही ना हो इस प्रकार विस्मृत होने लगा है।

E. विलेपन की महत्ता

वास्तविकता तो यह है कि जिस हेतु से हम १८ अभिषेक का विधान कर रहे हैं, वह हेतु पूर्ण करने के लिये विलेपन अति आवश्यक है। विलेपन में औषधि या सुगंधी द्रव्य जिनबिंब के सर्व अंग पर लगाया जाता है। १८ अभिषेक में उपयोग की जाती सर्व औषधि और सुगंधी द्रव्य प्रचुर शुभ (सकारात्मक) ऊर्जावंत होते है, यह बात इस विषय के तजज्ञो द्वारा प्रयोगो से निर्णित हुआ है। बिंब को विलेपन द्वारा लगाई जाती औषधि बिंब की स्वाभाविक शुभ उर्जा को अनेक गुना बढा देती है। यह औषधियाँ जिनबिंब पर अति सूक्ष्म छिद्र तक पहुँचकर, वहाँ प्रवेश करके वहाँ कोई भी नकारात्मकता रह गई हो तो उसे दूर कर देती है और वहाँ भरपूर ऊर्जा का स्थापन करती है और इस प्रकार शुभ ऊर्जावंत जिनबिंब सकल श्री संघ की उन्नति और आबादी में महान कारण बनते है। (शुभ ऊर्जा संघ की उन्नति में किस तरह कारण बनती है यह चर्चा अवसर पर करेंगे) इस तरह १८ अभिषेक में विलेपन अवश्य करवाये।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

F. १८ में से ९ अभिषेक में विलेपन

(१) मंगलमृतिका (२) सदौषधि (३) मूलिकाचूर्णस्नात्र (४) प्रथमाष्टकवर्ग (५) द्वितीयष्टकवर्ग (६) सर्वोषधि (७) गंधस्नात्र (८) वासस्नात्र और (९) केसरस्नात्र । १८ में से उपरोक्त ९ अभिषेक में उन अभिषेक का चूर्ण पूर्व से पानी में मिश्रित करके उनका लेप तैयार करके रखे । पूर्व का अभिषेक पूर्ण होते ही यह लेप तमाम प्रभुभक्तो तक पहुँच जाना चाहिये । जिनबिंब के सर्वांग पर विलेपन करें । तत्पश्चात कम से कम ५-१० मिनिट तक यह विलेपन परमात्मा पर रहे यह आवश्यक है । तब तक संगीत आदि के द्वारा प्रभुभक्ति करें और पश्चात अभिषेक द्रव्य के पानी द्वारा परमात्मा का अभिषेक संपन्न हो इस हेतु से विलेपन करने योग्य अभिषेक द्रव्य अधिक मात्रा में ही ग्रहण करें ।

इस प्रकार करने से अभिषेक जिनबिंब के लिये अत्यंत प्रभावकरुप तो होगा ही अपितु भक्तों के लिये भी प्रबल भाववृद्धि का कारण बनता है और उसके द्वारा विशिष्ट पुण्यबंध और कर्मनिर्जरा का कारण भी बनता है । अनेक आत्माओं के अनुभव इस तथ्य की साक्षी है ।

G. विलेपन और उद्वर्तन-मार्जन

हम शरीर पर अत्तर, सुखड या अन्य सुगंधी द्रव्य मात्र लगाते है, घिसते नहीं और तेल आदि कुछ द्रव्य से मालिश-उद्वर्तन करते है । वैसे ही जिनबिंब के १८ अभिषेक में भी यही विवेक रखना जरुरी है ।

जिनप्रतिमा को विलेपन द्रव्य मात्र लगा देना पर्याप्त नहीं है । कुछ औषधियों का मार्जन-उद्वर्तन करना जरुरी है, जिसके कारण जिनबिंब पर औषधियों का पूर्णतः प्रभाव रहे । १८ अभिषेक के श्लोक में भी उद्वर्तन का उल्लेख है । अतः मात्र औषधि लगाने से संतुष्ट ना होते हुए दहीं आदि से जैसे प्रतिमाजी का मार्जन करते है उसी प्रकार औषधियों से भी प्रतिमाजी का मार्जन करना है, यह लक्ष्य बनाये ।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 33

जिनप्रतिमा को आगे-पीछे सर्वांग पर मार्जन-उद्वर्तन करना है और प्रतिमाजी के मुख, हृदय, शिखा, नाभि आदि अंग पर सविशेष मार्जन करना है ।

H. १८ अभिषेक और मुद्रादर्शन

वर्तमान में प्रचलित १८ अभिषेक में गरुड, मुक्ताशुक्ति और परमेष्ठी इन तीनों मुद्रा को बताकर जिनेश्वरों को आह्वान किया जाता है । तीनों मुद्रा किस क्रम में करनी है ? प्रथम कौन सी मुद्रा करें ? यह सवाल अनेक आत्माओं को होता है । एवं तमाम मुद्रा के समय आह्वान एक बार ही बोला जाता है या तीन बार ? यह समस्या भी रहती है । इस विषय पर शास्त्रोक्त चर्चा करते है ।

वर्तमान में तीनों मुद्रा द्वारा आह्वान करने का प्रचलन होने के बावजुद समस्त अंजनशलाका-प्रतिष्ठा कल्प की हस्तलिखित प्रत में तीनों में से कोई भी एक मुद्रा द्वारा ही आह्वान करने की बात कही गई है । अर्थात् तीनों में से कोई भी एक मुद्रा के द्वारा आह्वान किया जा सकता है ।

सर्वाधिक प्राचीन पद्धति निर्वाणकलिका में तो मात्र परमेष्ठी मुद्रा द्वारा ही आह्वान करने की बात कही गई है । अतः जब तीन में से कोई एक मुद्रा से आह्वान करना हो तब परमेष्ठी मुद्रा से आह्वान करना अधिक युक्तिसंगत है ।

प्रत्येक मुद्रा द्वारा आह्वान एक बार भी कर सकते है और तीन बार भी कर सकते है । तीन बार आह्वान करना अधिक योग्य मालुम हो रहा है ।

जब तीनों मुद्रा से आह्वान करना हो तब प्रथम गरुड, द्वितीय मुक्ताशुक्ति और तृतीय परमेष्ठी मुद्रा से आह्ववान करने का प्रतिष्ठाकल्प में बताया गया क्रम ही अपनाये ।

इन मुद्राओं का भी विशिष्ट प्रभाव है, यह मुद्रा अनेक प्रकार से सिद्ध हो सकती है । सिद्ध मुद्राओं के द्वारा आह्वान विशेष फलदायी बनता है । यह

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

मुद्रा सम्यग् प्रकार से गुरुगम से जाने और अनुभवीओं से जानकर सिद्ध करना उचित है।

I. १८ अभिषेक और दर्पण दर्शन

१८ अभिषेक विधान में १५ वें अभिषेक दर्शन के पश्चात सूर्य-चंद्र दर्शन का विधान प्रचलित है। प्राचीन सर्व प्रतिष्ठा कल्प में १५ वें अभिषेक के पश्चात जिनप्रतिमा को दर्पण दर्शन करवाने का विधान पाया जाता है। दर्पण अशुभतत्त्व को बतानेवाला और नष्ट करनेवाला है। अन्य कारणों से भी यहाँ दर्पण दर्शन करवाना ही संगत है।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 34

12. जिनालय के शिल्प से संलग्न २१ बातें क्या है ?

(१) प्रासाद दो प्रकार के होते है।

(१) सामान्य जिनप्रासाद :-जिसमें मूलनायक के स्वरूप में कोई भी परमात्मा को गादीनशीन कर सकते है। प्रासाद में नक्काशी कार्य आदि प्रमाण में अल्प रहता है और कुल घनफूट माल आदि का उपयोग भी कम होता है।

(२) समदल प्रासाद :-प्रत्येक तीर्थंकर हेतु नियत प्रासाद का स्वरूप बताया गया है। जिन तीर्थंकर का प्रासाद हो उनकी ही प्रतिष्ठा जिनालय में होती है। उसमें पत्थर का उपयोग बढता है किन्तु मंदिर की भव्यता अत्यंत आकर्षक बनती है। अत: शक्तिसंपन्न संघ समदल प्रासाद का निर्माण करवाये यह उचित है।

(२) मंदिर हेतु स्थान के टाईटल-अधिकार स्पष्ट हो यह जरुरी है। वह स्थान सरकारी दस्तावेजो में श्री संघ के नाम पर हो यह जरुरी है।

(३) खात और शिलान्यास करने से पूर्व वहाँ के नक्शे काबिल-जानकार व्यक्ति से जाँच करवा ले। शिलास्थापन करने के पश्चात वहाँ कोई भी परिवर्तन करते समय अनेक परेशानीयाँ झेलनी पडती है।

(४) खनन मुहूर्त के पूर्व भूमिग्रहण की विधि अवश्य करवाये।

(५) चारों दिशा के प्रासाद हेतु कूर्मशिला अलग होनी चाहिये और कूर्मशिला गम्भारे के मध्यभाग में ही स्थापित करनी है। परमात्मा की गादी के नीचे नहीं।

(६) शिलान्यास में कूर्मशिला रखे जानेवाले सुवर्ण-चांदी के कूर्म की अधिवासना विधि आवश्यक है।

(७) शिलान्यास में तमाम शिला समवर्ग (समचोरस) ही होनी चाहिये और उन तमाम शिलाओं के नीचे आधारशिला का स्थापन भी आवश्यक है।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

(८) मंदिरनिर्माण में दो बातें अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है (१) भूमि सकारात्मक उर्जा से भरपूर हो (२) नींव का निर्माण योग्य रीत से हो ।

(९) नीव में शिशा (लीड) पूर्ति की योग्य पद्धति अपनाये ।

(१०) मंदिरनिर्माण के कार्य में संघ की तरफ से एक अनुभवी, वफादार, जिम्मेदार, वेतन प्रदान करके कार्यकर रखे ।

(१६) द्वारशाख पर द्वारपाल का रुपकार्य किये बिना द्वारशाखप्रतिष्ठा विधान करवाना योग्य नहीं है ।

(१७) श्री संघ आधे, अपूर्ण मंदिर के साथ जल्दबाजी में प्रतिष्ठा ना करवाये । प्रतिष्ठा पूर्ण होने पर जो भी अल्प कार्य बाकी हो उसे जल्द से जल्द पूर्ण करवाये । कभी-कभी देखा जाता है कि बरसों तक ऐसे कार्य अपूर्ण ही रहते है ।

(१८) प्रतिष्ठा के समय मूलनायक परमात्मा की दृष्टि नाँपने की क्रिया सूक्ष्म-शास्त्र दृष्टि से समझना जरुरी है ।

(१९) नया विकास जहाँ हो रहा हो उन तीर्थो में प्राचीन वास्तु और काष्ठ आदि की नक्काशी व प्राचीनता को कोई हानि ना पहुँचे इस तरह कार्य करें ।

(२०) श्री संघ के पटांगण में विधिपूर्वक जिनप्रतिमा का निर्माण करवाये ।

(२१) सिद्ध भगवंत और देव-देवी की ध्वजा अलग रंग की होनी चाहिये ।

A. अभिप्राय

पर्युषण पर्व के प्रवचनों में बताये अनुसार देवद्रव्य की वृद्धि वार्षिक कर्तव्य है और उचित है । किन्तु उसकी वृद्धि से भी ज्यादा उसकी हानि ना होने देना, रक्षा करना तो विशिष्ठ पुण्य का कारण है ।

योग्यता और शक्तिसंपन्न साधु भगवंत यदि विभिन्न विषय में निपुणता प्राप्त करें तो जिनशासन के लिए सर्वांग संपूर्णतय उपयोगी बन सकते है । इस प्रकार उनकी शक्तिओं के योग्य विनिमय-उपयोग द्वारा शासन को भी उनका महत्तम लाभ प्राप्त हो सकता है । एक शिक्षित व्यक्ति अन्य २५-५० व्यक्ति

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 35

को शिक्षित करने हेतु समर्थ बन जाता है । ज्योत से ज्योत जलती है और इस तरह प्रगट होनेवाली ज्योत का एक सामंजस्यपूर्ण नेटवर्क बनने पर भविष्य के दस-बीस वर्ष में ही उसका प्रकृष्ट परिणाम प्राप्त हो सकता है और देवद्रव्य के करोडो-अरबों रुपयों का सविशेष संपूर्ण सद्व्यय हो सकता है ।

प्राचीन काल में श्रावक मंदिरनिर्माण के कार्य में ओतप्रोत हो जाते थे । आबु-देलवाडा के जिनालय, कुंभारीया के जिनालय, राणकपुर या हठीसिंह के जिनालय का सृजन कोई रातोरात नहीं हो गया । इन तमाम निर्माण में मंत्री विमलशाह, अनुपमादेवी, धरणाशाह और शेठानी हरकुंवरबाई ने स्वद्रव्य के साथ-साथ स्वयं के हृदय के भाव और प्राण भी संचित किये थे । धरणाशाह ने ३२ वर्ष की युवावस्था में ही ब्रह्मचर्य का स्वीकार किया और राणकपुर जैसे कालविजयी मंदिर स्थापत्य का निर्माण करवाया था ।

सुंदर और विशिष्ट मंदिर स्थापत्य निर्माण के पूर्व पाँच परिबल की अति आवश्यकता रहती है । (१) शिल्पशास्त्रों का सांगोपांग अध्ययन (२) निर्माण संबंधित व्यावहारिक-वास्तविक ज्ञान (३) मन की विशालता से धन खर्च करने की उदारता (४) अपना समय देने की तैयारी (५) कार्य को सुंदर प्रकार से पूर्ण करने हेतु भरपूर प्रयत्न । यह पाँचो परिबल की उपस्थिति से इतिहास के पन्नों पर सुवर्णाक्षर से नामांकित मंदिर निर्माण अवश्य होगा ।

शास्त्रीय और व्यावहारिक बातों को अवश्य ध्यान में रखे । वर्तमान परिस्थिति में मंदिर निर्माण हेतु श्री संघ ज्यादातर साधु महात्मा के भरोसे ही रहते है और महात्मा प्रायः शिल्पी पर आधार रखते है । अतः प्रायः यही होता है कि अंतिम निर्णय शिल्पी के हाथ में ही रहता है । श्री संघ के २५-५० श्रावक मंदिर निर्माण के कार्य में सांगोपांग तैयार रहे यह अति आवश्यक है । सकल श्री संघ इस विषय में जागृत बनकर कोई मजबूत आयोजन बनाये तो श्री संघ में इस विषयक संपूर्ण जानकारी प्रदान करके सविशेष जागृति फैला सकते है।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

B. दस्तावेजी कार्य सचोट हो और उसी प्रकार कार्य होना चाहिये

जिनशासन का कुल बजट किसी मल्टीनेशनल कंपनी के बजट से भी अधिकाधिक है। (उसमें भी मुख्य द्रव्य देवद्रव्य का सद्व्यय हो इसका ध्यान रखा जाता है) **ISO** कंपनी की भाँति तमाम क्षेत्र में उपयोग किये जानेवाले द्रव्यों की खास रचना हो यह जरुरी है और उसी प्रकार कार्य भी होना चाहिये ।

जिनशासन के शास्त्रग्रंथो में सातक्षेत्र आदि की व्यवस्था बताई गई है। और कौन सा द्रव्य सातक्षेत्र से कौन से खाते में जायेगा, इस विषयक भी योग्य संविधान और नीति-नियम है। जिनशासन की यह अत्युत्तम व्यवस्था अन्य सर्वधर्मीय द्रव्य विनिमय संविधान व्यवस्था में विशिष्ट है । वर्तमान काल में तत्क्षेत्र में गये हुए - रहे हुए द्रव्य का वर्तमान काल के अनुलक्ष्य में व्यवस्थित समुचित उपयोग किस तरह कर सकते है इस विषय में भी एक सुआयोजित डोक्युमेन्टेशन श्रीसंघ में हो यह जरुरी है।

जैन विश्व में सर्वाधित बुद्धिवंत प्रजा होने के उपरांत श्री जिनेश्वर देव के लिये अपना सर्वस्व न्योछावर करने की उदात्त भावनावाली प्रजा है। जैनी आत्मा मंदिर निर्माण का सुव्यवस्थित आयोजन करें तो देवद्रव्य का महत्तम सद्व्यय करने द्वारा सविशेष सुंदर, मजबूत और शिल्पकलासंपन्न कालविजयी मंदिर स्थापत्य का निर्माण कर सकते है।

C. मार्बल की खदानें खरीदना श्रेष्ठ है

संपन्न जैन संघ पेईड सीवील इन्जीनीयर ही रख दे यह उत्तम है। वह इन्जीनीयर मंदिर निर्माण विषयक सांगोपांग व्यावहारीक ज्ञान प्राप्त करें और तमाम संघ को मंदिर निर्माण का मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं। द्रव्य संपन्न ५-१५ संघ एकसाथ मिलकर मार्बल की खदानें खरीदने का कार्य करेंगे तब भी एक विशाल क्रांति होगी। निकटवर्ती भूतकाल में ही इस प्रकार के सफल प्रयोग हो चूके है।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 36

तांबा-पितल या जर्मन सील्वर

(१) जिनमंदिर में बरसों से प्राचीन परंपरा रही है कि जिनमंदिर के उपकरण चांदी या तांबे-पित्तल के ही रहे है। मात्र जैन नहीं बल्कि विधर्मी देवमंदिर में भी यही प्रथा रही है ।

(२) जिनालय में पिछले कुछ वर्ष से जर्मन-सील्वर के उपरकण का प्रचलन शुरु हुआ और अधिकतर उपयोग बढने लगा है।

(३) जर्मनसील्वर में हल्की मात्रा में भी सील्वर-चांदी नहीं रहता। जर्मनी से यहाँ लाई गई यह हल्की धातु सील्वर जैसे रुपरंगवाली होने से उसका नाम जर्मनसील्वर प्रसिद्ध हुआ है।

(४) जर्मनसील्वर में ७० से ७५ % तो लोहा ही होता है और क्रोमीयम एवं उससे भी अल्प मेंगेनीझ होता है। सील्वर तो १ % भी नहीं होता। कोई भी व्यक्ति इस विषय में लेबोरेटरी टेस्टींग अहमदाबाद में माणेकचोक आदि स्थान पर करवा सकता है। (श्रद्धा गोल्ड टेस्टींग लेब, ८, आर. बी. चेम्बर्स, खेतरपाल की पोल नाका, माणेकचोक, अहमदाबाद)

(५) ऊर्जा के रीसर्च अनुसार भी यह धातु संपूर्ण नेगेटीव वाईब्रेशन्स धारण करनेवाली है और पूजा के उपकरण स्वरुप इसका उपयोग करना बिलकुल उचित नहीं है।

(६) जिनपूजा के उपकरण तांबा-पित्तल आदि सकारात्मक ऊर्जा संपन्न धातु के ही होने चाहिये ।

(७) आर्थिक स्वरुप से भी देखे तो पित्तल और तांबे से ज्यादा महँगा जर्मनसील्वर है।

अतः जिनमंदिर में उपकरण शुद्ध तांबे के या शुद्ध पित्तल के ही रखे किन्तु जर्मनसील्वर के उपकरण कदापि ना रखे।

अशुद्ध भाव + अशुद्ध उपयोग हमें शुद्ध परिणाम कैसे प्रदान कर सकते है?

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

रजत द्रव्य, ताम्र द्रव्य, या वर्तमान के सिक्के ?

स्नात्र के त्रिगडे में जिनप्रतिमा के नीचे क्या रख सकते है ? रजतद्रव्य, तांबाद्रव्य या वर्तमान चलन ?

आज के समय में त्रिगडे में जहाँ परमात्मा की स्थापना की जाती है वहाँ परमात्मा के नीचे सवा रुपये आदि द्रव्य रखा जाता है ।

प्राचीन परंपरा अनुसार इस तरह द्रव्य रखकर परमात्मा को बिराजमान करने की कोई प्रथा नहीं थी, बाद में काल के परिवर्तन के साथ यह प्रथा शुरु हुई है । यह इतिहासवेत्ता प. पू. पंन्यासश्री कल्याणविजयजी म.सा. ने कहा है ।

इस तरह द्रव्य रखने की परंपरा बिलकुल अर्वाचीन तो नहीं है अपितु २००-२५० वर्ष प्राचीन होने का अनुमान है । उस काल में रुपाद्रव्य-रजतद्रव्य अर्थात् चांदी का चलन जारी था । जो परमात्मा के नीचे रखा जाता था । कालानुसार रजतद्रव्य समाप्त हुआ और तांबे का द्रव्य चलन में शुरु हुआ । तत्पश्चात वह भी बंद हुआ और लोहे आदि सिक्कों का चलन शुरु हुआ ।

वर्तमान में प्रचलित चलन लोह और लोह से भी हल्की धातु से बना हुआ है । यह तमाम धातु नेगेटीव-नकारात्मक शक्तियों से भरपूर है । स्नात्र करते समय त्रिगडे में जिनप्रतिमा के नीचे इस तरह हल्की धातु रखना कितना उचित है ?

अतः स्नात्र के वक्त त्रिगडे में परमात्मा के नीचे चांदी या तांबे का सिक्का या लगडी ही रखनी चाहिये । विशेषकर तांबे का सिक्का (तांबे की लगडी) रखना अधिकतर प्रभावशाली है । वर्तमान का हल्की धातु से बना चलन रखना बिलकुल भी योग्य नहीं है ।

चांदी या तांबे का सिक्का या लगडी प्रतिदिन नये रखना आवश्यक नहीं है ।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 37

देशी झाडु या मोरपिच्छि

मोरपिच्छि - हमारी प्राचीन प्रभावक परंपरा

क्या आपके जिनमंदिर में कचरा (काजा) निकालते हेतु अभी भी झाडु का ही उपयोग होता है ?

(१) परापूर्व से हमारे जिनमंदिर में कचरा निकालने हेतु मोर के बडी पंख से बनी हुई मोरपिच्छि का ही उपयोग होता है ।

(२) मोरपंख जहाँ होते है वहाँ सर्प का भय तो नहीं रहता है अपितु अन्य क्षुद्र जंतुओं का उपद्रव भी अल्प रहता है ।

(३) मोरपंख स्वयं प्रभावशाली सकारात्मक शक्ति धारण करनेवाली चीज है । वह जहाँ हो वहाँ शुभ ऊर्जा का संग्रह करता है और उसका संरक्षण भी करता है ।

(४) मोरपंख से कचरा निकालने पर (१) मंदिर की नकारात्मक ऊर्जा को वह दूर करता है और (२) सकारात्मक ऊर्जा यदि थम जाती है तो पुनः उसका सुयोग्य परिभ्रमण करता है ।

(५) मंदिर की वृद्धिवंत ऊर्जा और बहती हुई ऊर्जा संघ में सुख-शांति-समृद्धि और आराधना में वृद्धि का कारण बनती है ।

(६) आज भी हठीसिंह जिनालय (अहमदाबाद) जैसे अनेक प्राचीन मंदिरो में यही प्रथा विद्यमान है । झाडु जैसा ही या शायद उससे भी बेहतर कचरा (काजा) निकालना मोरपंख से संभव है ।

(७) झाडु जैसी वस्तु का उपयोग ना करते हुए उपर बताये अनुसार विशिष्ट लाभदायक उत्तम द्रव्यरुप मोरपंख का उपयोग सकल श्री संघ के हित में है और परमतारक परमात्मा की विवेकपूर्वक, उचित, उत्तम भक्ति के स्वरुप है ।

(८) उपकरण भंडार में जाँच करने पर कचरा निकालने हेतु बडी मोरपिच्छिका अवश्य प्राप्त होगी ।

समस्त संघ में जिनालय देखरेख हेतु खास गठन-टीम का होना अनिवार्य है, जो अन्य जिनालय का कार्य भी कर सके ।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

मंगलमूर्ति स्थापना का रहस्य क्या है ?

शंका : जिनालय के प्रांगण में गम्भारे की बाहर की दिवारों पर तीनों दिशा में मंगलमूर्ति की स्थापना क्यों होती है ? और वह मूर्ति कौन से परमात्मा की होती है ?

समाधान : शिल्पशास्त्र का एक नियम है कि 'वर्जयेदर्हतः पृष्ठम्' अर्थात् अरिहंत परमात्मा की पूंठ का त्याग करना अर्थात् मंदिर में मुख्य परमात्मा के पीछे घर या मंदिर नहीं करना ।

जिनशासन में चौबीस जिनालय या बावन जिनालय की रचना में मुख्य मूलनायक परमात्मा के पीछे देरी के स्वरूप में मंदिर स्थापित किया जाता है, जो उपरोक्त नियमानुसार दोषरूप बनता है । क्योंकि देवकुलिका भी स्वतंत्र छोटे मंदिर के स्वरूप में ही होते है । अतः वह दोष निवारण हेतु गम्भारे के बाहर की दिवारों पर मंडोवर के भाग में तीन गोख में तीन मूर्ति की स्थापना करने द्वारा समवसरण की कल्पना की जाती है और उन प्रतिमा की अंजनशलाका ना होने के कारण उन्हें मंगलमूर्ति के रूप से पहचाना जाता है ।

श्री श्राद्धविधि नामक ग्रंथ में भी कहा गया है कि, 'इस प्रकार मंडोवर में तीनों दिशा में मंगलमूर्ति की स्थापना करने से अरिहंत परमात्मा को पूंठ का दोष नहीं रहता ।' ग्रंथ में यह भी कहा गया है कि, 'जिनालय में जो मूलनायक परमात्मा हो, उनकी ही मंगलमूर्ति स्थापित करें ।'

यहाँ इस बात का अवश्य ध्यान रखे कि, वहाँ लिखे जाते लेख में वह मंगलमूर्ति जिन परमात्मा की हो उनके नाम का उल्लेख अवश्य करें; जिसके कारण भविष्य में भी कोई उलझनें ना रहे । इन मंगलमूर्तिओं के भी १८ अभिषेकादि यथायोग्य विधान अवश्य करें ।

शिल्पशास्त्रो में तो यह भी कहा गया है कि, 'अरिहंत परमात्मा के

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 38

मंदिर नगर के मध्य में और चतुर्मुख होने चाहिये । इस प्रकार वह मंदिर चारों दिशाओं में सर्व प्रकार से वृद्धि-समृद्धि करनेवाले बनते है ।' सामान्य से जैन चतुर्मुखी मंदिर कम बनते है, किन्तु इस प्रकार मंगलमूर्तिओं की स्थापना करने द्वारा वह मंदिर भी एक अपेक्षा से चतुर्मुखी अवस्था का स्वरूप बरकरार रखता है ।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

प्रतिमा सुरक्षा हेतु क्या करना चाहिए।

जिनालय में प्रतिमाजी की नित्य प्रक्षाल, बरास, केसरादि अष्टप्रकारी पूजा भक्तजनों द्वारा भक्तिभाव से होती है। किन्तु इन पूजाओं में क्रियाविधि की अज्ञानता, कम-अधूरी समझ, द्रव्यों की अशुद्धि, द्रव्यों के अतिरेक से या योग्य शुद्धि का पालन ना होने से प्रतिमाजी पर कुछ अशुद्धियाँ उत्पन्न हो जाती है। जिसके कारण प्रतिमाजी को नुकसान होता है।

पानी

नुकसान : प्रक्षाल हेतु वर्षा के संग्रहीत किये गये पानी के बदले क्षारजन्य पानी का अभिषेक होने के कारण, प्रतिमाजी खुरदरे हो जाते है और कुछ काल पर्यंत प्रतिमाजी में खड्डे तक हो जाते है। प्रतिमाजी श्याम या पीले तक हो जाते है।

उपयोग : तमाम जिनालय में वर्षा के पानी का संग्रह करने हेतु टंकी आदि विशिष्ट व्यवस्था का आयोजन आवश्यक है और उसमें भी शुद्धि के नक्षत्र अनुसार पानी का संग्रह करें। उसी जल का उपयोग प्रतिदिन प्रतिमाजी के प्रक्षालन हेतु करें। मघा नक्षत्र का थोडा सा पानी भी टंकी में अवश्य संग्रहीत करें।

विशेष बात : मघा नक्षत्र में ही पानी भरे, जिसके कारण लील आदि निगोद का भय नहीं रहेगा और वह पानी दीर्घकाल तक उपयोग किया जा सकता है।

चंदन

नुकसान : वर्तमान काल में शुद्ध चंदन महँगा होने के कारण एवं तमाम स्थानों में उपलब्ध न होने के कारण अधिकतर जिनालय में २००-४०० रुपये की किमतवाले काष्ठ का उपयोग होने लगा है। इन काष्ठ का

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 39

स्वभाव ही गर्म होता है। इस प्रकार के काष्ठ द्वारा घिसाई होने पर, पूजा करने से उसकी गरमी से प्रतिमाजी में खड्डे हो जाते है, टीका के आसपास का भाग घिस जाता है।

उपयोग : चंदन का काष्ठ स्वभाव से ही शीतल है। अतः प्रभुभक्ति में शुद्ध चंदन के काष्ठ का ही उपयोग करना आवश्यक है।

बरास

नुकसान : वर्तमान काल में ज्यादातर केमिकल-रसायण से मिश्रित बरास का ही उपयोग होने लगा है। जिसका विलेपन प्रतिमाजी के अंग पर किया जाता है। जिसके कारण प्रतिमाजी श्याम, पीले होने लगते है और प्रतिमाजी में भारी नुकसान होने की संभावना भी बढने लगी है।

उपयोग : अतः केमिकल-रसायण रहित शुद्ध बरास का ही उपयोग करें।

केसर

नुकसान : केसर स्वभाव से गर्म होता है। वर्तमान काल में बाजार में ज्यादातर नकली केसर ही बेचा जा रहा है। यह नकली केसर का उपयोग करना बिलकुल भी उचित नहीं है। (जो कि केमिकल-रसायण से मिश्रित होने के कारण वास्तविक केसर से भी कई गुना ज्यादा नुकसान पहुँचा सकता है।) साथ ही, केसरादि द्रव्यों के अतिरेक से काफी धाराएँ बहने लगती है और जहाँ से यह धारा बहती है वह हिस्सा नष्ट होने लगता है। प्रतिमाजी को वह नुकसान होता है जिसकी भरपाई शायद कभी ना हो।

उपयोग : शुद्ध केसर का भी यथायोग्य कम उपयोग ही करें। कई भक्तिवंत श्रावक नौ अंग के अलावा कंठ आदि अंग में केसर की अतिरिक्त बिंदी लगाते है। आंगी आदि विशेष प्रयोजन के बिना, प्रतिदिन इस प्रकार

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

पूजा करना उचित नहीं है। केसर की धारा बहने लगे, उसके पूर्व ही केसर साफ करने के कपडे से केसर साफ कर ले।

विशेष बात :-केसर-चंदन आदि द्रव्यों के कारण पानी एक ही स्थान पर जम जाता है। इस तरह यदि प्रतिदिन ५००-७०० व्यक्ति भी पूजा करते है, तो प्रतिमाजी को महत्तम नुकसान होने की संभावना रहती है। श्रेष्ठ उपाय यही है कि, जहाँ ज्यादा लोग पूजा करते है, वहाँ बार-बार केसर को साफ किया जाये।

वरख

नुकसान : नकली एल्युमिनियम या मिश्रित वरख का उपयोग करने से प्रतिमाजी को भारी नुकसान होता है। शुद्ध वरख का भी बिना आयोजन के, जैसे-तैसे प्रतिमाजी पर सीधा उपयोग करने से कुछ कालपर्यंत प्रतिमाजी पर काले धब्बे होना आदि अनेक नुकसान होते है।

उपयोग : शुद्ध वरख का ही उपयोग करें और उस शुद्ध वरख की मोटाई कुछ अधिक हो इसका ख्याल रखे; जिससे वह प्रतिमाजी से चिपक ना जाये। आंगी के खोखे पर ही वरख का उपयोग करना बेहतर है।

शुद्धि नहीं होने द्वारा हो रहे नुकसान

नुकसान : अभिषेक के पश्चात परमात्मा के पैरों में पालटन के अंदर, परिकर आदि के नक्काशी किये गये स्थानों में सही तरीके से अंगलूछन ना होने के कारण पानी और अन्य मेल, धूल, केसर आदि जमा होने से वहाँ लील, फूलव आदि अशुद्धियाँ उत्पन्न हो जाती है। कई बार जहाँ पूजा करनेवाले लोग कम होते है और प्रतिमाजी ज्यादा होते है वहाँ प्रक्षाल में पानी फैंकने के कारण पानी अपने आप सूख जाता है किन्तु अंगलूछन ना होने के कारण या योग्य प्रकार से ना करने के कारण प्रतिमाजी पर क्षार जमा होते है, जिसके कारण प्रतिमाजी में खड्डे होना इत्यादि भयावह नुकसान होते है।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 40

उपयोग : अतः उपयोगपूर्वक प्रक्षाल करने के पश्चात कहीं पर भी केसर, पानी, मेल आदि ना रह जाये इस प्रकार बिलकुल स्वच्छ तीसरा अंगलूछन आखिर में ही होना चाहिये।

दूध

नुकसान : थैली का दूध बासी होने से और अनेक प्रीझर्वेटिव केमिकल मिश्रित होने से प्रतिमाजी को नुकसानदायक बनता है।

उपयोग : गाय का दूध ही सर्वश्रेष्ठ है और यदि वह ना मिल सके तो भेंस का ताजा दूध ही उपयोग में लेना योग्य है।

कोई भी जिनालय में चाहे कितने भी प्रतिमाजी की शुद्धि हो रही हो, फिर भी प्रतिमाजी पर अशुद्धि के मेल का एक स्तर तो विद्यमान रहता ही है। सुबह प्रक्षाल होने के पश्चात संपूर्ण दिन हवा के द्वारा धूल आदि छोटी सी रज चिपकती रहती है, जो कहीं ना कहीं अपना स्थान बना ही लेती है। इस प्रकार की रज जमा होने से प्रतिमाजी का तेज ही कम हो जाता है। इस प्रकार की अशुद्धि कम-ज्यादा प्रमाण में लगभग तमाम जिनालय में होती ही है। फलतः प्रतिमाजी के शुद्धिकरण की आवश्यकता होती ही है। तभी तो, जिनशासन में नित्य प्रक्षाल और ३-३ अंगलूछन की बात बताई गई है। प्रतिमाजी के शुद्धिकरण की आवश्यकता होने पर निम्नोक्त विधि का अनुसरण जरुरी है।

प्रतिमाजी शुद्धिकरण के दो प्रकार : कोई भी प्रतिमाजी की शुद्धि दो प्रकार से हो सकती है। (१) शुद्धिकरण द्वारा और (२) ओपप्रक्रिया द्वारा।

(१) शुद्धिकरण द्वारा : प्रतिमाजी के चक्षु, टीका, तिलक को निकालकर या निकाले बिना कुदरती द्रव्यों से बिंब की शुद्धि करने की क्रिया

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

को शुद्धिकरण की प्रक्रिया कहते है । शुद्धिकरण भी कोई कठिन पाषाण पथ्थर के या धातु के प्रतिमाजी का हो सकता है । रत्न, मिट्टी, लेपवाले प्रतिमाजी की योग्य शुद्धि पानी द्वारा ही हो सकती है ।

(२) ओपप्रक्रिया द्वारा : ओप अर्थात् एक तरह की चमक । समयांतर होनेवाली घिसाई के कारण, क्षार जमा होने से, द्रव्यों की अशुद्धि के कारण प्रतिमाजी खुरदरे से हो जाते है । प्रतिमाजी में छोटे-छोटे खड्डे होने लगते है जिसके कारण प्रतिमाजी का स्पर्श बिलकुल खुरदुरा सा हो जाता है, तब ओप किया जाता है । जिसमें प्रतिमाजी के चक्षु-टीका आदि निकालकर श्रेष्ठ शुद्धि की जाती है और खुरदुरापन निकलकर मुलायम स्पर्श होता है और तेज भी प्रगट होता है ।

शुद्धि और ओप कब करें ? किनका करें ?

शुद्धि : प्रतिवर्ष एक बार और स्वच्छता ना रहे तो दो से तीन बार अवश्य करें।

ओप : जब प्रतिमाजी पर घिसाई आदि नुकसान दृष्टिगोचर हो, शुद्धिकरण से भी क्षार आदि का निकाल ना हो तभी ओप करवाये । एक बार व्यवस्थित ओपकाम होने के पश्चात १० से १५ वर्ष तक कोई समस्या नहीं होगी । यदि प्रतिदिन सफाई, अंगलूछन आदि श्रेष्ठता से हो तो २५ से ३० वर्ष तक कोई समस्या नहीं होगी । जिन प्रतिमाजी में जरुरत लगे, उन पर ही ओप करवाये । कोई प्रतिमाजी पर ज्यादा नुकसान हो और उनका ओपकार्य करवाना जरुरी हो, तो जानकार इन्सान द्वारा करवाया जाता है । किन्तु जिन प्रतिमाजी को कोई नुकसान ना हुआ हो, ओपकार्य की आवश्यकता ना हो तब भी 'बार-बार कारीगर को कौन बुलाये ? एक साथ ही तमाम प्रतिमाजी का ओप हो जाये । बार-बार कौन ध्यान रख पायेगा ? बार-बार एक ही कार्य क्यों देखे ?' इस विचारधारा से तमाम प्रतिमाजी का ओपकार्य करवा लेने से प्रतिमाजी को जरूर ना होने पर भी घिसाई प्राप्त होने से दोष, आशातना

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 41

लगती है । ओप करवाने से प्रतिमाजी पर कम से कम एक स्तर की घिसाई तो अवश्य होती ही है । अतः आवश्यकता ना होने पर ओपकार्य ना ही करवाये ।

ओपकार्य गर्मी की ऋतु में ही करवाये । क्योंकि सूखे वातावरण में श्रेष्ठतम परिणाम प्राप्त हो सकता है ।

ओपकार्य पाषाण की प्रतिमाजी के हो सकते है किन्तु वहाँ भी कठिन पथ्थर से बने प्रतिमाजी का ही ओपकार्य हो सकता है । रेत, मिट्टी, कोमल पथ्थर और खारे पथ्थर की प्रतिमाजी पर ओपकार्य नहीं होता है ।

ओपकार्य ना करना पडे, वैसा कोई उपाय है ? : हाँ, नित्य प्रक्षाल के पश्चात प्रतिमाजी का उपयोगपूर्वक तमाम स्थानों से अंगलूछन किया जाये तो ओप करने से भी ज्यादा चमक और शुद्धि होती है । यदि प्रतिदिन अंगलूछन उत्तम प्रकार से किया जाये तो कभी भी ओप की आवश्यकता ही नहीं रहेगी । यदि कोनों में मेल जमा होता रहे तो शुद्धिकरण से उसका निराकरण हो जाता है । या उतने ही भाग में ओप प्रक्रिया कर सकते है । सिर्फ किसी एक भाग के कारण संपूर्ण प्रतिमाजी का ओप करना भी जरुरी नहीं है । मेल का निराकरण शुद्धिकरण है, ओप नहीं ।

प्रतिमाजी शुद्धिकरण की प्रक्रिया

शुद्धिकरण में उपयोगी वस्तुएँ :-

पाषाण की प्रतिमाजी हेतु : अरीठा पाउडर

धातु की प्रतिमाजी हेतु : शिकाकाई और आम्ल पाउडर

अन्य साधन-सामग्री : पानी, वाळाकुंची (आवश्यकता होने पर ही), पित्तल की कुंडी, बाल्टी और प्रक्षाल हेतु जरुरी अन्य सामग्री ।

आरस के प्रतिमाजी हेतु प्रक्रिया : अरीठा पाउडर में पानी का मिश्रण करके पेस्ट बनाये । प्रतिमाजी को देखते हुए आवश्यकता अनुसार मिश्रण बनाये ।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

– सर्वप्रथम मोरपंख से प्रतिमाजी पर से निर्माल्य साफ करें । तत्पश्चात पूंजणी से आसपास का निर्माल्य साफ करें ।

– तत्पश्चात अरीठा पाउडर से बनाया गया मिश्रण प्रतिमाजी के सर्व अंग पर लगाये । ५ मिनिट तक मिश्रण को रहने दे । तत्पश्चात १५ से २० मिनिट तक हल्के हाथों से मालिश करें ।

– तत्पश्चात किसी भी स्थान पर थोडा सा भी पाउडर ना रह जाये, इस प्रकार प्रतिमाजी को संपूर्ण शुद्ध करें । अंगलूछन अत्यंत उपयोगपूर्वक करें ।

– समय और स्थिरता हो, तो परिकर में भी मिश्रण लगाये । सूक्ष्मता से सफाई करे । समय और स्थिरता ना हो, तो परिकर में मिश्रण ना लगाये ।

इस प्रकार आरस, जेसलमेर, कसोटी जैसे कठिन पथ्थर के प्रतिमाजी का शुद्धिकरण करें ।

धातु के प्रतिमाजी हेतु : शिकाकाइ पाउडर में पानी का मिश्रण करके पेस्ट बनाये ।

– प्रतिमाजी अधिक मात्रा में श्याम हो गये हो तो शिकाकाई पाउडर के साथ आम्ल पाउडर का मिश्रण भी बनाये । मिश्रण का प्रमाण दो चम्मच शिकाकाई और एक चम्मच आम्ल का रखे ।

– प्रतिमाजी के सर्व अंगो पर मिश्रण लगाये ।

– १० मिनिट तक विलेपन रहने दे, तत्पश्चात १५ से २० मिनिट तक हल्के हाथों से मालिश करें ।

– वाळाकुंची का उपयोग करना भी पडे तो विवेकपूर्वक ही करें । नीचे और पीछे के हिस्से में वाळाकुंची से विशेष सफाई करें । नीचे के हिस्से में शुद्धि करते समय प्रतिमाजी को उल्टा ना कर दे बल्कि एक व्यक्ति दोनों हाथ

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 42

से प्रतिमाजी को उँचा करें और दूसरा व्यक्ति नीचे से सफाई करें, इस प्रकार व्यवस्था बनाये ।

– धातु के प्रतिमाजी को एक ही हाथ से ग्रहण ना करें और ना ही नीचे रखे । बहुमानपूर्वक दोनों हाथों से थाली में बिराजमान करें और उस समय आवाज ना हो इसका ख्याल रखे ।

– यंत्र, सिद्धचक्रजी आदि के शुद्धिकरण की प्रक्रिया भी धातु के प्रतिमाजी की तरह ही करें ।

– धातु के प्रतिमाजी हेतु पितांबरी पाउडर का उपयोग नहीं हो सकता । उसमें तीन जाति के केमिकल होने के कारण प्रतिमाजी तुरंत चमकीले हो जाते है किन्तु अल्प काल में पुनः श्याम हो जाते है । और इस प्रकार के केमिकलयुक्त द्रव्यों से प्रतिमाजी का शुद्धिकरण करना योग्य नहीं है, आशातना है ।

उपरोक्त क्रिया के अलावा दहीं, नींबु, वडी पाउडर, समुद्रफीण इत्यादि का उपयोग भी शुद्धिकरण में हो सकता है । किन्तु अनुभव से यह जाना गया है कि, दहीं का चिकनापन, नींबु में रहे सिट्रिक, वडी पावडर की कर्कशता, समुद्रफीण की कठोरता के कारण इन वस्तुओं का उपयोग करते समय सावधान बने रहे । लंबे काल में होनेवाले शुद्धिकरण में नींबु जैसे कुदरती खट्टेपनवाले द्रव्य के उपयोग से उत्तम परिणाम प्राप्त होता है ।

नवांगी टीका :-एक तथ्य

प्रभुजी के नौ अंग (१३ स्थान) पर सुवर्ण-चांदी के टीके लगाने की प्रथा प्राचीन नहीं है । जमीन से प्राप्त हो रही कोई भी प्रतिमा में चक्षु, टीका, कंठ आदि कुछ भी नहीं होता । पिछले कुछ वर्षो से श्री संघ में पूजा करने के नौ अंगो की स्पष्ट समझ रहे इसलिए टीके लगाने की शुरुआत हुई है।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

कोई भी नई शुरुआत धीरे-धीरे विस्तृत स्वरूप धारण कर लेती है। वहाँ कभी-कभी वस्तु का मूल स्वरूप ही बदल जाता है।

टीकाओं के साथ-साथ दोनों स्तन के स्थान पर बंबी भी लगा दी गई और श्रीवत्स पर चांदी का स्तर लगाया गया। मस्तक पर कपाली और गले में कंठपट्ट आ गया। यह भी कम लग रहा हो वह सोचकर दोनों हाथ और दोनों पैरों में भी पंजे इत्यादि लगाना शुरु हो गया। दोनों हाथो में सुवर्ण-चांदी के बाजुबंध भी लगाये जाते है। कहीं पर तो मस्तिष्क के बाल में भी चांदी के पतरे लगाये जाते है और कहीं-कहीं तो कंठपट्ट भी हृदय तक पहुँचा हुआ दिखता है।

इस तरह अतिशयोक्ति होने से परमात्मा का मूल वीतरागी स्वरूप ही विस्मृत हो जाता है। आंगी आदि आडंबर भी मात्र बालजीवों के आकर्षण हेतु ही है। विवेकी साधको को तो जिनोपासना द्वारा आत्मगुणों का अनुसंधान ही करना है। अतः यह मुख्य लक्ष्य बना रहे, उसी प्रकार क्रिया करें।

दोनों स्तन के उपर टिके लगाने से और सीने के मध्य भाग में श्रीवत्स पर चांदी का पतरा चढाने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। कई बार तो इस तरह पतरा लगाने से उल्टा बेहूदा लगता है।

मस्तक पर कपाली, आड, कंठी या बाजुबंध लगाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

सुवर्ण के टीके, कंठी, कपाली आदि की सुरक्षा का विचार भी अवश्य करें।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 43

मंदिर में सफाई हेतु क्या करें ?

(१) मंदिर के सफाई कार्य में प्रतिदिन उपयोग में लिये जाते कपडो में कभी कभी सादे पानी के, तो कभी फीनाईल, केरोसीन आदि के कपडे होते है।

(२) फीनाईल आदि केमिकल के पौछे मंदिर में करना योग्य नहीं है। वह मंदिर की शुभ ऊर्जा का नाश करते है।

(३) नमक का गुण है कि, वह सदा आसपास में रही नेगेटीव ऊर्जा का शोषक रहा है। श्रेष्ठ विकल्प तो यही है कि नमक के पानी से ही पौछा किया जाये। यही हमारी प्राचीन परंपरा रही है। हमारी प्राचीन परंपरा में रसोईघर जैसे स्थान में एक कटोरी में कच्चा नमक रखा जाता था। वह क्यों रखा जाता था ? इसकी समझ भले ही अनेक लोगों को ना हो किन्तु अनुभवीओं के मतानुसार नमक वातावरण से नेगेटीव ऊर्जा का संहरण कर लेता था और पोझीटीव ऊर्जा का द्योतक रहता था। अतः जिनमंदिर में नमक के पानी से ही पौछा लगाना सर्वश्रेष्ठ है। जिसके कारण मंदिर के परमाणुओं की पवित्रता बनी रहती है और दर्शनार्थ आनेवाले यात्रिक को परम शांति का अलौकिक एहसास होता है।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

19. जिनालय की प्रतिमाजी की ओरा बढाने हेतु क्या करें ?

प्रतिमाजी को हो रही वासक्षेप पूजा की डिब्बीयाँ प्लास्टिक की नहीं होनी चाहिये । पित्तल या तांबे की डिब्बी रखे । अन्यथा शक्ति अनुसार सुवर्ण-चांदी भी रख सकते है । किन्तु साधन की चिंता रहे वह साधन पूजा हेतु ना रखे।

फूल रखने हेतु प्लास्टिक की छाब या थैली ना रखे । प्लास्टिक के साधन गम्भारे में लेकर ही ना आये ।

गम्भारे में प्लास्टिक या हल्की धातु के बर्तन ना रखे ।

गम्भारे में खिडकी नहीं होनी चाहिये ।

परमात्मा के प्रक्षाल का निकाल हो और प्रक्षाल को परठने की योग्य व्यवस्था तमाम संघ में होनी ही चाहिये । परठने की कुंडी की सफाई योग्य समय पर होनी चाहिये ।

अंगलूछन धोने हेतु अलग से व्यवस्था होनी चाहिये और अंगलूछन सुखाने हेतु भी अलग से व्यवस्था होनी चाहिये ।

प्रक्षाल निकाल के और अंगलूछन धोने के स्थान पर लील ना हो, इसका ख्याल रखे ।

ध्वजादंड पर लोहे के कठघर नहीं होने चाहिये ।

ध्वजा की रस्सी प्लास्टिक की नहीं होनी चाहिये, पित्तल की रखे ।

जिनालय के चारों दिशा में कुछ स्थानपर्यंत कम्पाउन्ड तो होना ही चाहिये, जिसमें जिनालय की ओरा विस्तृत हो और नकारात्मक ऊर्जा को बाहर से अंदर प्रवेश ना करने दे, वैसे वृक्ष लगाये ।

जिनालय का ओरावृद्धिवंत होना चाहिये ।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 44

20. जिनालय को प्रभावशाली बनाने हेतु क्या करें ?

श्री जिनमंदिर और जिनबिंब की नकारात्मक ऊर्जाओं को दूर करने हेतु,

श्री जिनमंदिर और जिनबिंब की सकारात्मक ऊर्जाओं को कई गुना बढाने हेतु,

श्री संघ की विशिष्ट उन्नति, आबादी, सुख व समृद्धि बढाने हेतु,

इतना अवश्य ध्यान रखे कि...

प्रतिमाजी की, जिनालय की ओरा वृद्धि हेतु...

	क्या करें ?	क्या ना करें ?
१	अभिषेक में गाय के शुद्ध दूध का उपयोग करें ।	अभिषेक में डेरी की थैली का उपयोग ना करें ।
२	अभिषेक हेतु वर्षा के पानी की टंकी से पानी ले ।	अभिषेक में म्युनि. के नल के पानी ना ले ।
३	अभिषेक जल में गंधौषधि, चंदन, सुवर्ण-चांदी के	लोहे-प्लास्टिक आदि की बाल्टी में प्रक्षाल का
४	वरख आदि मिश्रित करके नित्य अभिषेक करें ।	जल ले कर अभिषेक ना करें ।
५	गर्भगृह में जिनप्रतिमा के करीब गाय के शुद्ध घी के दिये करें ।	गर्भगृह में इलेक्ट्रीक लाईट का प्रकाश ना करें । मूलनायक आदि परमात्मा पर लाईट का सीधा प्रकाश ना फैलाये ।
६	रंगमंडप में हांडी की सुविधा करें और मुमकीन हो तो गाय-भेंस के घी के दिये करें या दीवेल के दिये का प्रकाश करें ।	रंगमंडप में इलेक्ट्रीक लाईट का प्रकाश ना करें । पूजन, महापूजा जैसे अनुष्ठानो में हेलोजन जैसी भारी पावरवाली लाईट ना करें ।
७	मंदिर में भक्ति हेतु हार्मोनियम, तबला, पखावज आदि शास्त्रीय संगीत के साधन रखे ।	मंदिर में माईक आदि इले. साधनो का अनुचित उपयोग ना करें ।
८	परमात्मा के चक्षु शुद्ध स्फटिक के रखे ।	परमात्मा के चक्षु इमीटेशन हीरे के या प्लास्टिक के ना रखे ।
९	स्नात्र के प्रतिमाजी के नीचे तांबे के या चांदी के सिक्के रखे ।	स्नात्र के प्रतिमाजी के नीचे वर्तमानकालिन लोहे के बने सिक्के ना रखे ।
१०	पूजा हेतु गर्मी में केसर अल्प, शर्दी में शुद्ध बरास अल्प, वर्षाकाल में एक समान केसर-बरास का उपयोग	किसी भी ऋतु में एक समान लाल केसर का उपयोग ना करें । वैसे ही केमिकलयुक्त बरास का

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

करें ।	उपयोग ना करें ।
११ सुखड (चंदन) आदि द्रव्य शुद्ध ही उपयोग में ले ।	चंदन के बदले अन्य कोई काष्ठ ना रखे ।
१२ मंदिर में कचरा (काजा) निकालने हेतु बडे मोरपंख का उपयोग करें ।	मंदिर में कचरा (काजा) निकालने हेतु झाडु का उपयोग ना करें ।
१३ मंदिर में नमक के पानी के पोछे लगाये ।	मंदिर में फिनाईल आदि केमिकल के पोछे ना लगाये ।
१४ मंदिर में तमाम उपकरण तांबे, पित्तल, चांदी के रखे ।	मंदिर में उपकरण जर्मन, सिल्वर, एल्युमिन्यिम, स्टील, प्लास्टिक आदि के ना रखे ।
१५ आरती के समय घंटनाद, नगारे का नाद, शंखनाद आदि करें ।	आरती हेतु इलेक्ट्रीक मशीन ना रखे ।
१६ ध्वजा चढाने हेतु चक्र आदि उचित व्यवस्था रखे ।	ध्वजा चढाने हेतु शिखर पर कायमी कठघर ना बनाये ।
१७ मंदिर के स्थापत्य में परिवर्तन करने से पूर्व शिल्प और वास्तु शास्त्र के नियमों का अनुसरण करें ।	मंदिर के स्थापत्य में शिल्प, वास्तु शास्त्र के नियमों की अवगणना ना करें । अपनी इच्छानुसार परिवर्तन ना करें ।
१८ मंदिर के पथ्थरो को अपने मूल स्वरूप में बनाये रखे ।	मंदिर के पथ्थरों पर आकर्षक रंगरोगान आदि कार्य ना करें ।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 45

21. चक्षु कैसे लगायें ? :

प्रतिमाजी को जो चक्षु लगाये जाते है, वह जितने ज्यादा मूल्यवान हो, उतना ज्यादा लाभ प्राप्त होता है ।

पूर्व में बताये अनुसार, जो चक्षु लगाने से प्रतिमाजी की दृष्टि सौम्य, शांत, मृदु हास्य फैलानेवाली, प्रसन्न और करूणासभर, समाधिमग्न प्रतित हो; वैसे ही चक्षु प्रतिमाजी को लगाये जाते है । वह चक्षु बनाने का द्रव्य भी कुदरती और विशुद्ध होना चाहिये और परमात्मा की ऊर्जा को साधक-भक्तो की नजरों में परिवर्तित करने हेतु सक्षम हो, वैसा ही पसंद करें ।

मीनाकारी चक्षु दिखने में तो सुंदर प्रतित होते है, किन्तु इन चक्षुओं में प्राय: परमात्मा की एक ही सीधी दृष्टि स्थापित होती है । जबकि स्फटिक के चक्षुओं की विशेषता है कि, सामने से, दायी या बायी ओर से या नीचे बैठकर प्रतिमाजी का दर्शन करने से परमात्मा हमारी तरफ ही देख रहे हो, वह अनुभव होता है ।

और, स्फटिक के चक्षु में अँधकार के समय दिपक का प्रकाश करने से, परमात्मा की आँखो से रीफ्लेक्ष हो कर प्रकाश प्रगट होता है; जिसके द्वारा मानो कि परमात्मा की दिव्य करूणा बरस रही हो, वह अनुभव होता है ।

अत: मुमकिन हो तो शुद्ध स्फटिक के चक्षु ही लगाये । अन्यथा मीनाकारी चक्षु लगा सकते है । अलबत्त कभी कभी तो मीनाकारी चक्षु भी अति सुंदर प्रतित होते है ।

चक्षु-टीका आदि लगाते समय जयणा :

प्रतिमाजी को चक्षु-टीका लगाते समय और होठ पर लाली करते समय राल-हींगलोक जैसे वनस्पति द्रव्य ही उपयोग में ले । लाली आदि में ओईलपेईन्ट आदि केमिकल का उपयोग करना उचित नहीं है ।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

श्वेत राल, लाल राल, टीका लगाने हेतु छडी जैसे पदार्थ जिनालय में तुरंत मिल जाये इस प्रकार रखे। और उनके उपयोग का तरीका भी जान ले। कभी भ्रमर-चक्षु आदि निकल जाये तो पूजारी के भरोसे ना बैठे रहे। भक्तिवंत श्रावक अर्हद्भक्ति का यह महामूल्यवान लाभ स्वयं ग्रहण कर सकते है।

कभी कभी राल को गर्म करके लगाया जाता है। ऐसा करने पर उसका सत्त्व नष्ट हो जाता है। और गर्म राल लगाने से कष्ट प्रदान करने की क्रिया हो जाती है। अत: राल को गाय के घी से लगाकर चक्षु-टीका लगाये।

चक्षु-टीकादि लगाते समये लेप के मसाले का उपयोग करना उचित नहीं है। वह दृढता से चिपक जाता है और उसे निकालते समय प्रतिमाजी के आरस से छोटी चूर्ण भी निकल जाती है।

कुछ स्थानों पर ऐरेल्डाईट से चक्षु लगाये जाते है। किसी अवसर पर वह चक्षु निकालते समय प्रतिमाजी के पाषाण की चूर्ण के साथ ही चक्षु निकल जाने की घटना घटित हुई है।

प्रतिष्ठा के पश्चात या बाद में किसी अवसर पर प्रतिमाजी की गादी की पट्टी लगाने हेतु सीमेन्ट के बदले लेप का मसाला या राल का उपयोग करना उत्तम है। जो सूख जाने के बाद सीमेन्ट जैसी ही मजबूत हो जाती है।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 46

"प्रतिमा पूजन रहस्य"

जिनालय संबंध विशिष्ट जानकारी

जिनालय का नाम :-..

विस्तार :-..

कुल प्रतिमाजी :-...................... आरस के छोटे प्रतिमाजी :-..........................

आरस के बडे प्रतिमाजी :-.........................

धातु के प्रतिमाजी :-...................... स्फटीक के प्रतिमाजी :-.......................

यंत्र :-.......................

देव :-...................... देवी :-...................... गुरुमूर्ति :-......................

कौन से देव देवी है ? :-...

प्रतिष्ठाकारक :-..

जिनालय की प्राचीनता :-..

उपाश्रय :-..

जैन के घर :-..

जिनालय हस्कत मकान :-...

जिनालय में आवश्यक वस्तु :-..

चक्षुतिलक की आवश्यकता है ? :-..

कोई प्रतिमाजी आनेवाले है ? :-...

कोई प्रतिमाजी प्रदान किये है ? :-..

कहाँ प्रदान किये है ? :-...

जिनालय में भू-तल है ? :-..

परमात्मा के पीछे परिकर है ? :-...

चातुर्मास होते है ? :-...

कितने आराधक पूजा करने आते है ? :-..

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

स्नानघर-बाथरुम की सुविधा अलग से है ? :-..

परमात्मा के अंगलूछन धोने की व्यवस्था अलग है ? :-..................................

कितने पूजारी है ? :-..

नाम - १) .... नंबर :-...........................

२) .... नंबर :-...........................

ट्रस्टी के नाम - १) .... नंबर :-.........................

२) .... नंबर :-.........................

जिनालय की विशेषता :-...

अन्य विशेषता :-..

साधर्मिक परिवारों की संपूर्ण विगत :-..

....

समस्त संघो के पास यह जानकारी का होना अति आवश्यक है ।

॥ ऊँ अर्हं पार्श्व शान्तिः ॥

पूज्य गुरु भगवंतो से विनंति है कि आपके विहारक्षेत्र में छोटे-बडे तमाम गाँव की विगत इस फोर्म में लिखकर मिशन जैनत्व जागरण के पते पर भेजे एवं इस पुस्तक के विषय में आपके अभिप्राय, कोई परिवर्तन हमें अवश्य भेजे ।

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 47

अंत में अंतर की बात...

हमारे पूर्वजों द्वारा स्थापित धरोहर की रक्षा हेतु प्रतिमाह या प्रतिवर्ष एक ही तीर्थ पालीताणा या शंखेश्वर का मोह अल्प बनाकर विभिन्न तमाम तीर्थों की यात्रा अवश्य करें । उपधान, संघ, सामुहिक चातुर्मास, शिबिर, वाचनासत्र, पारणां आदि महोत्सव अलग-अलग तीर्थ में करें, दूर-दूर करें । वास्तविक आनंद की प्राप्ति होगी और तीर्थरक्षा का पुण्य भी प्राप्त होगा । जिनशासन में तृतीय पद पर आसीन पूज्यश्री भी इस तथ्य को लक्ष्य में रखे । नये तीर्थो के साथ-साथ प्राचीन तीर्थो के उद्धार का कार्य भी शुरु करवाये । हकीकत में इस कार्य की अति आवश्यकता है । एक आचार्य भ. मात्र ५ छोटे जीर्ण मंदिर पर भी ध्यान देंगे तो क्या कुछ नहीं हो सकता... ?

- आपका भूषण

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

प.पू. पंजाब देशोद्धारक आ. विजयानंद सू. म. (आत्मारामजी म.) का सन्मार्गदर्शक साहित्य

1. सम्यक्त्व शल्योद्धार 325/-
2. नवयुग निर्माता 200/-
3. जैन तत्त्वादर्श 300/-
4. जैन धर्म विषयक प्रश्नोत्तर 200/-
5. जैन मत वृक्ष और पद्य साहित्य 200/-
6. जैन मत का स्वरूप 125/-
7. नवतत्त्व संग्रह 300/-
8. ईसाईमत समीक्षा 100/-
9. चिकागो प्रश्नोत्तर 100/-
10. अज्ञानतिमिर भास्कर 500/-
11. तत्त्व निर्णय प्रसाद 500/-

प.पू. मुनिराज ज्ञानसुंदरजी म.सा. द्वारा लिखित साहित्य

1. मूर्तिपूजा का प्राचीन इतिहास 100/-
2. श्रीमान् लौंकाशाह 100/-
3. हाँ ! मूर्तिपूजा शास्त्रोक्त है 30/-
4. सिद्ध प्रतिमा मुक्तावली 100/-
5. क्या जैन धर्म में प्रभु दर्शन - पूजन की मान्यता थी ? 50/-
6. जैन जाति महोदय 400/-

पू. गुरुदेवमुनिराजश्री - भुवनविजयान्तेवासि - मु. श्री जंबूविजयजी म. संशोधित - संपादित ग्रंथो

1. द्वादशारनयचक्र भाग-1 300/-
2. द्वादशारनयचक्र भाग-2 300/-
3. द्वादशारनयचक्र भाग-3 300/-
4. आचारांगसूत्र मूलमात्र 300/-
5. सूत्रकृतांगसूत्र मूलमात्र 300/-
6. स्थानांग तथा समवायांगसूत्र मूलमात्र 300/-

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 48

7. ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र मूलमात्र 300/-
8. अनुयोगद्वार सूत्र चूर्णि, हारिभद्री वृत्ति तथा मलधारिहेमचन्द्रसूरिविरचितवृत्ति सहित भाग-1 300/-
9. अनुयोगद्वार सूत्र चूर्णि, हारिभद्री वृत्ति तथा मलधारिहेमचन्द्रसूरिविरचितवृत्ति सहित भाग-2 300/-
10. स्थानाङ्गसूत्र अभयदेवसूरिविरचितवृत्ति सहित भाग-1 300/-
11. स्थानाङ्गसूत्र अभयदेवसूरिविरचितवृत्ति सहित भाग-2 300/-
12. स्थानाङ्गसूत्र अभयदेवसूरिविरचितवृत्ति सहित भाग-3 300/-
13. समवायाङ्गसूत्र अभयदेवसूरिविरचितवृत्ति सहित 300/-
14. द्रव्यालंकार स्वोपज्ञटीकासहित 300/-
15. न्यायप्रवेशक बौद्धाचार्य दिङ्नाग प्रणीत 300/-
16. सर्वसिद्धान्त प्रदेशक 300/-
17. योगशास्त्र स्वोपज्ञवृत्तिसहित भाग-1 300/-
18. योगशास्त्र स्वोपज्ञवृत्तिसहित भाग-2 300/-
19. योगशास्त्र स्वोपज्ञवृत्तिसहित भाग-3 300/-
20. पाटणना जुदा - जुदा भंडारोना हस्तलिखित ग्रंथोनुं सूचिपत्र भाग-1 300/-
21. पाटना जुदा - जुदा भंडारोना हस्तलिखित ग्रंथोनुं सूचिपत्र भाग-2 300/-
22. पाटना जुदा - जुदा भंडारोना हस्तलिखित ग्रंथोनुं सूचिपत्र भाग-3 300/-
23. पाटना जुदा - जुदा भंडारोना हस्तलिखित ग्रंथोनुं सूचिपत्र भाग-4 300/-
24. जैसलमेरना भंडारनुं सूचिपत्र 300/-
25. धर्मबिन्दु (कर्ता-हिरभद्रसूरि म.) मुनिचन्द्रसूरिविरचितटीकासहित 300/-
26. सिद्धहेमचंद्रशब्दानुशासन-लघुवृत्ति (प्र. आवृत्ति) 300/-
27. सिद्धहेमचंद्रशब्दानुशासन-लघुवृत्ति (प्र. आवृत्ति) 300/-
28. सिद्धहेमचंद्रशब्दानुशासन रहस्यवृत्ति 300/-
29. सिद्धहेमचंद्रशब्दानुशासन (मूलसूत्रो अकारादिक्रम युक्त) 300/-
30. वैशेषिकसूत्र - चन्द्रानन्दविरचितवृत्तिसहित 300/-
31. उपदेशमाला - हेयोपादेयाटीका सहित 300/-

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

32.	स्थानांगसूत्र सटीक भाग-1 (द्वितीय आवृत्ति)	300/-
33.	स्थानांगसूत्र सटीक भाग-2 (द्वितीय आवृत्ति)	300/-
34.	स्थानांगसूत्र सटीक भाग-3 (द्वितीय आवृत्ति)	300/-
35.	योगशास्त्र स्वोपज्ञवृत्तिसहित भाग-1 (द्वितीय आ.)	300/-
36.	योगशास्त्र स्वोपज्ञवृत्तिसहित भाग-2 (द्वितीय आ.)	300/-
37.	योगशास्त्र स्वोपज्ञवृत्तिसहित भाग-3 (द्वितीय आ.)	300/-
38.	ठाणांगसमवायांगसुत्तं च (शीलांकाचार्य कृत्त टीकोषेत)	300/-
39.	आचारांगसूत्रकृतांगसूत्र सटीक	300/-
40.	आचारांगसूत्र (शीलाचार्यकृतवृत्ति युक्त) प्रथम श्रुतस्कंधना प्रथम चार अध्ययन पर्यंत	300/-
41.	पंचसूत्र सटीक	300/-
42.	गहुली संग्रह	300/-
43.	सूरिमंत्रकल्पसमुच्चय भाग-1	300/-
44.	सूरिमंत्रकल्पसमुच्चय भाग-2	300/-
45.	स्त्रीनिर्वाणकेवलीभुक्ति प्रकरणे	300/-
46.	जैसलमेर केटलोग - मूळकर्ता सी.डी. दलाल	300/-
47.	श्री सिद्धभुवन प्राचीन स्तवन संग्रह	50/-
48.	गुरुवाणी (पूज्यश्रीना प्रवचनोनो संग्रह) भाग-1	50/-
49.	गुरुवाणी (पूज्यश्रीना प्रवचनोनो संग्रह) भाग-2	50/-
50.	गुरुवाणी (पूज्यश्रीना प्रवचनोनो संग्रह) भाग-3	50/-
51.	गुरुवाणी (पूज्यश्रीना प्रवचनोनो संग्रह) भाग-4	50/-
52.	गुरुवाणी (पूज्यश्रीना प्रवचनोनो संग्रह) भाग-5	50/-
53.	हिमालय नी पदयात्रा	50/-
54.	अंतरिक्ष पार्श्वनाथ तीर्थ का इतिहास	50/-
55.	नंदीसूत्र मलयगिरि विरचित वृत्ति सहित	300/-
56.	અંતરિક્ષ પાર્શ્વનાથ તીર્થનો ઈતિહાસ	50/-
57.	गुरुवाणी (हिन्दी) 1	50/-
58.	गुरुवाणी (हिन्दी) 2	50/-

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 49

59.	गुरुवाणी (हिन्दी) 3	50/-
60.	गुरुवाणी (हिन्दी) 4	50/-
61.	गुरुवाणी (हिन्दी) 5	50/-
62.	हिमालय की पदयात्रा (हिन्दी)	50/-
63.	नमस्कार स्वाध्याय (संस्कृत विभाग)	300/-
64.	नमस्कार स्वाध्याय (प्राकृत विभाग)	300/-
65.	अभिधर्मकोष कारिका	50/-
66.	हस्तलीखीत ग्रंथो की सूची - 1	-
67.	हस्तलीखीत ग्रंथो की सूची - 2	-
68.	हस्तलीखीत ग्रंथो की सूची - 3	-

भूषण शाह द्वारा लिखित-संपादित हिन्दी पुस्तक

1.	जैनागम सिद्ध मूर्तिपूजा	100/-
2.	● जैनत्व जागरण	200/-
3.	● जागे रे जैन संघ	30/-
4.	पाकिस्तान में जैन मंदिर	100/-
5.	पल्लीवाल जैन इतिहास	100/-
6.	दिगंबर संप्रदाय : एक अध्ययन	100/-
7.	श्री महाकालिका कल्प एवं प्राचीन तीर्थ पावागढ	100/-
8.	अकबर प्रतिबोधक कौन ?	50/-
9.	● इतिहास गवाह है।	30/-
10.	तपागच्छ इतिहास	100/-
11.	● सांच को आंच नहीं	100/-
12.	आगम प्रश्नोत्तरी	20/-
13.	जगजयवंत जीरावाला	100/-
14.	द्रव्यपूजा एवं भावपूजा का समन्वय	50/-
15.	प्रभुवीर की श्रमण परंपरा	20/-
16.	इतिहास के आइने में आ. अभयदेवसूरिजी का गच्छ	100/-
17.	जिनमंदिर एवं जिनबिंब की सार्थकता	100/-

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

18.	जहाँ नमस्कार वहाँ चमत्कार	50/-
19.	● प्रतिमा पूजन रहस्य	300/-
20.	जैनत्व जागरण भाग-2	200/-
21.	जिनपूजा विधि एवं जिनभक्तों की गौरवगाथा	200/-
22.	● अनुपमंडल और हमारा संघ	100/-
23.	अकबर प्रतिबोधक कौन ? भाग-2	200/-
24.	इशुख्रीस्त पर जैन धर्म का प्रभाव	50/-
25.	खरतरगच्छ सहस्त्राब्दी निर्णय	50/-
26.	प्राचीन जैन स्मारको का रहस्य	250/-
27.	जैन नगरी तारातंबोल : एक रहस्य	50/-
28.	जंबू जिनालय शुद्धिकरण	100/-
29.	प्राचीन भारत की यात्रा पद्धति	300/-
30.	शंकाए सही, समाधान नहीं.	50/-

भूषण शाह द्वारा लिखित/संपादित गुजराती पुस्तक

1.	મંત્ર સંસાર સારં	200/-
2.	● જંબૂ જિનાલય શુદ્ધિકરણ	30/-
3.	● જાગે રે જૈન સંઘ	20/-
4.	● ઘંટનાદ	
5.	● શ્રુત રત્નાકર (પૂ. ગુરૂદેવ જંબૂવિજયજી મ.સા. નું જીવન ચરિત્ર)	
6.	જૈનશાસનના વિચારણીય પ્રશ્નો	50/-

भूषण शाह द्वारा लिखित अंग्रेजी पुस्तक

1.	● Lights	300/-
2.	● History of Jainism	300/-

अन्य साहित्य

1.	नवयुग निर्माता (पुनः प्रकाशन) (पू.आ. वल्लभसूरि म.सा.)	200/-
2.	मूर्तिपूजा (गुजराती-खुबचंदजी पंडित)	50/-
3.	मूर्ति मंडन - आ. लब्धि सू.म.	100/-

File Name O:\samir\bhushanbhai Jinalay suddhikaran final 50

4.	हमारे गुरुदेव (पू. जंबूविजयजी म.सा. का जीवन)	30/-
5.	सफलता का रहस्य - सा. नंदीयशाश्रीजी म.सा.	20/-
6.	ધરતી પર સ્વર્ગ - સા. નંદીયશાશ્રીજી મ.	20/-
7.	Heaven on Earth - SA Nandiyasha Shriji M.S.	20/-
8.	कर्म विज्ञान	20/-
9.	जडपूजा या गुणपूजा - एक स्पष्टीकरण (हजारीमलजी)	30/-
10.	पुनर्जन्म - (सं.पू.आ. जितेन्द्रसूरिजी म.सा.)	30/-
11.	क्या धर्ममें हिंसा दोषावह है ?	30/-
12.	तत्त्व निश्चय (कुएँ की गुंजार पुस्तक की समीक्षा)	-
13.	बत्तीस आगमों से मूर्तिसिद्धि (आशिष तालेडा)	50/-
14.	जैन ज्ञाति निर्णय	50/-
15.	श्वेतांबर दीगंबर समन्वय	200/-